हमारे संग यात्रा कीजिए

लेखक :
डा० मुहम्मद अरीफ़ी

इस्लामिक सेंटर सुलय्य रियाज़
बक्सा नं० 1419 रियाज़ 11431 22410615-2414488 फैक्स 2411733

हमारे संग यात्रा कीजिए

लेखक :

डाक्टर मोहम्मद अल अरीफ़ी

अनुवादक :

अब्दुल करीम अब्दुस्सलाम मदनी

संशोधक :

आफताब आलम मोहम्मद अनस मदनी

इस्लामिक सेंटर सुलैय् रियाद टेलीफोन न० :
1/2410615-2414488 फैक्स न० :
2411733 पोस्ट बाक्स न०1419 रियाद न० : 11431

© المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالسلي، ١٤٢٩هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

العريفي ، محمد

اركب معنا / محمد العريفي. - الرياض، ١٤٢٩هـ

١٨٤ ص ؛ ١٢ × ١٧ سم

ردمك: ٠- ٥-٩٨٠٨-٩٩٦٠-٩٧٨

(النص باللغة الهندية)

١- الوعظ والإرشاد ٢ - البدع في الإسلام أ- العنوان

ديوي ٢١٢,٣ ١٤٢٩/١٩٦٢

رقم الإيداع ١٤٢٩/١٩٦٢

ردمك: ٠- ٥-٩٨٠٨-٩٩٦٠-٩٧٨

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह कृपाशील दयावान के नाम से संपूर्ण प्रशंसा अल्लाह तआला के लिये हैं और दरूदो सलाम हो अल्लााह के रसूल (ईशदूत) मुहम्मद ﷺ पर।

पहला व्यक्ति

वह दुःखित और रंजीदा हो कर मेरे पास बैठा और कहने लगाः हे शैख! मैं दुरी से ऊब चुका हुँ तो मैं ने कहाःशीघ्र अल्लाह तआला तुझे तेरे घर वालों और तेरे वतन की ओर वापस लौटाएगा,ये सुन कर वह आंसू भर लाया और रोने लगा फिर उसने कहा : अल्लाह की क़सम शैख साहब ऐ काश! कि आप को उनकी ओर जाने की और मेरी चाहत का अंदाज़ा होता, शैख साहब! क्या आप ये स्वीकारेंगें कि मेरी माता ने चार सौ मील से अधिक का सफर केवल इस लिए किया ताकि फलाने शैख की क़ब्र के पास जा कर मेरे लिये दुआ करे और उन से निवेदन करे कि वे मुझें वापस बुलवादें इस लिये कि वे नेक व्यक्ति हैं उन से मांगी हुयी दुआऐं क़बूल की जाती

हैं वे दुख दर्द दूर करते हैं और दुआ करने वाले की दुआऐं सुन्ते हैं,मरने के बाद भी।

दुसरा व्यक्ति

जिस्के बिषय में हमारे शैख महा ज्ञानी अब्दुल्लाह बिन जिबरीन ने मुझ से बताया कि मैं अरफात की धरती पर बैठा हुआ था लोग रोने और दुआओं में लगे थे अपने शरीर पर एहराम की चादर ओढ़े हुये अपने हाथों को सब से अधिक ज्ञान रखने वाले बादशाह की ओर उठाये हुये थे खाक्सारीऔर लाचारी की हालत में आकाश से रहमतों के उतरने की आस लगाये हुये थे कि मेरी निगाह को एक अधिक बूढ़े मनुष्य ने फेर दिया जिस की हड्डी पतली और शरीर दुर्बल हो गया था अथवा उसकी कमर टेढ़ी होगयी थी, और वह बार बार यह शब्द दुहरा रहा था कि ऐ अल्लाह के फलाने वली! मैं तुझ से इस बात का दर्खास्त (निवेदन) करता हुं कि तु मेरी मुसीबत दुर करदे,मेरी सिफारिश कर और मुझ पर कृपा कर, वह व्यक्ति आँसू बहा रहा था और फूट फूट कर रो रहा था तो मेरे शरीर में झुझुरी आ

गई, मैं थर थर कांपने लगाऔर उस को मुखातिब कर के मैं ने ज़ोर से चीखा कि अय मनुष्य प्रभू : (अल्लाह) से डर क्यों अल्लाह के इलावः से मांगते हो और अल्लाह के इलावः से अपनी आवश्यक्ता के इच्छुक हो, यह वली भी अल्लाह की एक मखलूक़ (सृष्टी) और तुझ जैसा लाचार व्यक्ति है,न तो तेरी बात सुन सक्ता है और न तुझे कुछ दे सक्ता है, अल्लाह से मांग जो अकेला है जिस का कोइ साझीदार नहीं,यह सुन कर वह व्यक्ति मेरी ओर निगाह कर लिया और कहा ऐ बूढ़े! मुझ से दूर हो जा तुझे (अल्लाह) के समीप (नज़्दीक) शैख की पहुंच का ज्ञान नहीं है निसन्देहः मेरा इस बात पर ईमान है कि आकाश से पानी की कोई बूँद नहीं टपक्ती और न धरती पर कोई दाना पैदा होता है परन्तु शैख की आज्ञां अनुसार। जब उसने यह बात कही तो मैंने उस से कहा कि अल्लाह बहुत महान है तुम ने अल्लाह के लिए क्या छोड़ा? अल्लाह से डर! जब उसने मुझ से यह बात सुनी तो पीठ फेर कर चला गया।

तीसरा,चौथा,और पाँचवाँ व्यक्ति :

तो इनके विषय में आप को इस पुस्तक में ज्ञान मिलेगा।

आश्चर्य है... कहाँ हैं वह लोग जो अल्लाह के अतिरिक्त की ओर पनाह ढुँढते हैं अपने मृत्कों से अपनी मुरादें माँगते हैं,सड़ी गली हड्डियों और मरे हुऐ शरीरों की ओर अपनी परेशानियाँ लेकर हाज़िर होते हैं? कहाँ भागे जा रहे हैं ये लोग उस सत्य ईश्वर को छोड़ कर जो वास्तविक और स्पष्ट रूप से बादशह है,जो माँ के पेट में उपस्थित शिशु की हर्कतों की खबर रखता है, वह दुख्यों की प्रार्थनायें (दुआयें) सुन्ता है और वह इस बात को नकारता है कि ईश्वर के उपासक (बंदे) उसके अतिरिक्त किसी को पुकारें।

यदि आप चाहें तो उम्मत की हालत पर रोना रोयें और इस्लामी देशों की ओर निगाह उठायें ताकि मज़ारों,अस्थानों, कब्रों अथवा सड़ी गली हड्डियों को आप देख सकें यही आज दुख और परेशानियों के वकत बचाव के स्थान बने हुए हैं अर्थात इसी अक़ीदे

(विश्वास) पर छोटे की पर्वरिश हुयी और बड़ा बूढ़ा हुआ।

ये कुछ वाक्य अर्थात आवाजें हैं, फर्यादें बल्कि यह ज़ोरदार चीखें एंव ज़ोरदार आवाज़ें हैं गिड़गिड़ाहट एंव बुलावा है शिर्क (अनेकश्वरवादी)में डूबे हुए पुरूषों एंव महिलाओं के लिए जिन्हें मौजें थपेड़े मार रही हैं जो घाटी में भटक गऐ हैं यहाँतक कि यह लोग छुटकारा दिलाने वाली नाव से पीछे रह गये और शिर्क की हालत में मरे जब्कि यह अपने आप को मुसलमान समझ रहे हैं निःसंदेह यह तौहीद (एकेश्वरवाद) की नाव है जो नूह عليه السلام की नाव की तरह है, जो व्यक्ति उसमें सवार हो गया छुटकारा पागया और जो इस से पीछे रह गया वह तबाह हो गया।

इस्लामी देशों में बहुतों को हमने देखा नाते दारों को और भाइयों को पड़ोसियों को और मित्रों को जिन के जीवन की पूरी मेहनत अकारत होगयी और वह इस खयाल में रहे कि हम अधिकतर पवित्र कार्य कर रहे हैं। इस लिए यह पुस्तक उन सब व्यक्तियों के

लिए एक पुकार है कि यह लोग केवल अल्लाह की इबादत(पूजा)करें जिस का कोई साझी नहीं।

लेखक

डाक्टर मोहम्मद पुत्र अब्दुर्रहमान अल अरीफी
अक़ीदः एंव धर्मों के विषय में पी. एच. डी.
Email:arefe@aref.com

ठाठें मारता हुआ समुद्र

जगत मूशरिकों (अनेकश्वरवादियों) से भरा पड़ा था कोई मूर्ति की पूजा करता था तो कोई क़ब्र से आस लगाए बैठा था कोई मनुष्य की पूजा करता था तो कोई पेड़ की आदर करता था।

उन हैरान परेशन व्यक्तियों में से एक सर्दार अमर पुत्र अल जमूह का नाम आता है, उस के पास मनाफ नाम की एक मूर्ति थी जिस की नज़दीकी हासिल करने के लिए वह परेशान रहता था, वह उस के सामने अपना माथा टेक्ता था मनाफ नामी मूर्ति दुख और परेशानी के वक़्त उस के बचाव का अस्थान था।

एक लक्ड़ी की मूर्ति थी परन्तु वह उस के समीप उसकी बीवी बच्चों एंव धन दौलत से अधिकतर प्यारी थी और वह उस मूर्ति की पवित्रता बनाव श्रंगार कपड़े एंव उसकी पाकी और सफ़ाई में अधिकतर ध्यान देता था और यह उस की आदत बन गई थी जब से उस ने दुनया देखा था, यहाँ तक कि वह साठ साल की आयु पार कर गया। जब

नबी करीम ﷺ ईशदूत बन कर मक्का की धर्ती पर भेजे गए और आप ﷺ ने मुस'अब पुत्र उमैर को इस्लाम की ओर बुलाने वाला और मोअल्लिम (शिक्षा) देने वाला बना कर भेजा तो अमर पुत्र जमुह़ के तीन पुत्र और उस की बीवी नें इस्लाम क़बूल कर लिया जिस की जानकारी अमर को न थी, अमर पुत्र जमूह के लड़के अपने पिता (बाप) के पास पहुँचे, और तौहीद के शिक्षक, व्यक्ति के विषय में सूचना दी, और उस के पास कुर्आने करीम पढ़ा और कहा ऐ अब्बू जान!लोगों ने इस व्यक्ति की बात को स्वीकारा है उनके बारे में आप का क्या ख्याल है?

अमर पत्र जमूह ने कहा कि मैं यह काम मनाफ नामी मूर्ति से बिन पूछे नहीं कर सक्ता मैं देखूंगा कि उस का क्या विचार है फिर अमर मनाफ की ओर चल दिया।

वह लोग जब मूर्तियों से बात चीत का इरादा करते थे तो मूर्ति के पीछे एक बुढ़िया को बिठा दिया करते थे जो उन के गुमान के अनूसार उन के प्रश्नों का

उत्तर दिया करती थी, अर्थात जिन चीज़ों के विषय में मूर्ति उन के हृदय में बात डाल देती थी। अमर लंगड़ाते हुये मनाफ के निकट गया, उस का एक पैर दूसरे पैर से छोटा था फिर वह अपने ठीक पैर पर टेक लगा कर आदर एंव सम्मान के साथ मूर्ति के समीप बैठा और उस की त'अरीफ (प्रशंसा) की फिर उस ने कहा ऐ मनाफ! निसंदेह तुझे इस आने वाले की ख़बर है वह तेरे सिवाय किसी की बुराई नहीं चाहता और हमें तेरी पूजा से रोकता है ऐ मनाफ! मुझे बता कि मैं क्या करूँ? जब मूर्ति ने कोई उत्तर न दिया तो उस ने अपनी बात लौटाई फिर भी उस ने कुछ उत्तर न दिया तो अमर बोला शायद (कदाचित्) तुझे क्रोध आ गया है मैं उस वक़्त तक यहाँ से न हटूँगा जब तक कि तेरा क्रोध खतम न हो जाए फिर वह उसे छोड़ कर चला गया। जब रात्रि हुयी तो उस के लड़के मनाफ (मूर्ति) के पास पहुँचे और उसे उठा कर ऐसे गढ़े में डाल दिया जिस में सड़ा गला एंव बदबूदार मुर्दार डाले जाते थे।

जब भोर हुयी तो अमर मूर्ति की सलामी के लिए उस के निकट गया तो देखा कि मूर्ति वहाँ से ग़ायब है फिर वह ज़ोर से चिल्लाया कि तुम्हारा सत्यानास हो पिछली रात्रि में हमारे प्रभू के साथ किस ने ज़्यादती की है? जब उस के घर वाले चुप रहे तो वह भयभीत हो गया, एंव परेशन हो कर उसे ढूडने लगा तो उसे एक गढ़े में सिर के बल पड़ा हुआ पाया, उसे निकाल कर उस पर खुशबू मला और पुनः पुरानी जगह लाकर उसे रख दिया और मूर्ति से मुखातिब होकर बोला अल्लाह की क़सम ऐ मनाफ़! यदि मुझे पता चला कि किस ने तुम्हारी यह दुर्गति बनाई है तो उसे मैं ज़लील कर दुँगा।

फिर दूसरी रात्रि उस के पुत्र मूर्ति के निकट गए और उसे उठा कर पुनः उस बदबू दार गढ़े में फेंक दिया।

जब भोर (सवेरा) हुआ शैख जी जागे, मूर्ति को ढूँडा और उसे न पाकर क्रोध में आगए, धमकाया एंव बुरा भला कहा, और पुनः गढ़े से निकाल कर उसे नहलाया एंव खुशबू मला फिर हर रात्रि अमर के

पुत्र मूर्ति के साथ यही व्यवहार करते रहे और अमर हर दिन उसे निकाल कर नहलाता एंव खुशबू मलता, जब अमर अधिक परेशान हो गया तो एक रात्रि सोने से पुर्व वह मूर्ति के निकट गया और कहने लगा अय मनाफ!तेरा सत्यानास हो बकरी अपने शर्मगाह की स्वयं हिफाज़त करती है फिर मूर्ति के गले में तलवार लटका कर बोला अपने शत्रु से अपना बचाव स्वयं कर फिर जब रात्रि का अंधेरा छागया तो अमर के पुत्रों ने उस मुर्ति को मुर्दार कुत्ते से लगा कर बांध दिया और फिर उसे कूड़ा कचरा फेंकने वाले गढ़े में फेंक दिया, जब सवेरे शैख सो कर उठे तो मनाफ की खैरियत लेने पहुंचे और जब मनाफ को इस बुरे हाल में गढ़े के भीतर देखा तो कहाः

ورب يبول الثعلبان برأسه لقد خاب من بالت عليه الثعالب

ऐसा प्रभू जिस के सिर पर लोमड़ियाँ मूतें निसंदेह वह ज़लील एंव निंदित है जिस के सिर पर लोमड़ियाँ मूतें।

फिर अमर पुत्र जमूह ने इस्लाम क़बूल कर लिया और दीन के कार्य में आगे आने लगे। ध्यान कीजिए!! जब मूसलमान जंगे बद्र में जाने लगे तो अमर के पुत्रों ने उन के बुढ़ापे एंव लंगड़ापन के कारण लड़ाई में प्रवेश करने से रोक दिया और जब अमर जिहाद में जाने की ज़िद करने लगे तो उनके पूत्रों ने नबी करीम ﷺ को बताया और इस विषय में आप की सहायता मांगी तो पैग़म्बर ﷺ ने उन को मदीने में रुक्ने का आदेश दिया और वह मदीने में रुक गए।

जब उहुद नामी लड़ाई का एलान हूआ तो अमर पूत्र जमूह ने लड़ाई में जाने की आर्ज़ू की परन्तू उनके लड़कों ने उन्हें रोका जब बात आगे बढ़ी तो स्वयं अमर नबी करीम ﷺ के पास इस हाल में गए कि उन की आँखें डबडबाई हुयी थीं कहने लगे ऐ अल्लाह के पैग़म्बर!ﷺ अल्लाह की क़सम मूझे आशा है कि मैं अपने इस लंगड़े पैर से जन्नत में प्रवेश करूँगा तो आप ﷺ ने उन्हें इजाज़त देदी फिर अमर ने हथियार लगाया और कहा ऐ अल्लाह!मुझे शहादत

प्रदान कर और मुझे मेरे घर वालों के पास न लौटाना।

जब मैदाने जंग में लोग प्रवेश कर गए और दोनों ओर के लोगों में मूडभेड़ हुई,बहादुर चिल्लाने लगे और भाले फेंके जाने लगे तो अमर निकले और अपनी तलवार से अंधेरे के लशकर(काफिरों) को मौत के घाट उतारने लगे और मूर्तियों के पुजारियों से लड़ने लगे यहाँ तक कि एक काफिर उन की ओर झुका और अपनी तलवार से एसा वार किया कि आप शहीद हो गए ,फिर उन को दफन किया गया और उन व्यक्तियों के साथ हो गए जिन के ऊपर अल्लाह ने कृपा की है।

छियालिस साल पश्चात मुआविया ﷺ के दौर में एक भारी बाढ़ आया और उहुद के शहीदों की कब्रें उस के चपेट में आगईं तो मुसलमानों नें उन की लाशों को दूसरे स्थान में मुंतक़िल करना शुरू (प्रारम्भ) किया,और जब अमर पुत्र जमूह की समाधि खोदी गई तो ऐसा लगा जैसे कि आप सोरहे हों नर्म

शरीर, एंव शुद्ध शरीर के अंग, धर्ती ने उन के शरीर का कोइ भी अंग नहीं खाया।

ध्यान दीजिए कि जब सत्य ज़ाहिर होने के बाद उनहों नें सत्य का दामन थाम लिया तो किस प्रकार अल्लाह तआला ने उनका अंत भलाई पर किया, बल्कि देखो कि मरने से पश्चात जब उन्होंने "लाइलाह इल्लल्लाहु" का हक़ निभादिया तो किस प्रकार अल्लाह तआला ने उनकी करामत को संसार में ज़ाहिर कर दिया।

यही वह शब्द है जिस की बुनियाद पर आकाश एंव धर्ती खड़े हैं, और इसी पर अल्लाह तआला ने सारे संसार को पैदा किया और यही जन्नत में दाखिल होने का कारण है, इसी के कारण स्वर्ग एंव नर्क बनाए, और आदम की अवलाद(संतान) मोमिन, काफ़िर अच्छे एंव बुरे में बट गई।

(याद रखो कि) बंदा अपने पैर को अल्लाह तआला के सामने से उस वक़्त तक नहीं हिला सकता जब तक कि उस से दो चीज़ों के विषय में प्रश्न न कर

लिया जाए, तुम किस की इबादत(पूजा) करते थे? एंव तूम ने पैग़म्बरों(ईश्दूतों) को क्या उत्तर दिया।

मुक्ति की नाव

कितने इन्सान हलाक होने वालों के संग हलाक एंव क़यामत तक फटकार के मूस्तहिक़ हो गए क्योंकि उन्होंने तौहीद (एकेश्वरवाद) का हक़ पूर्ण रूप से अदा न किया।

अल्लाह तआला ही केवल सत्य पालन पोषण करने वाला है बंदे को केवल उसी पर भरोसा करना चाहिए, केवल उसी की ओर रूजूअ (आकर्षण) करना चाहिए, उस के अतिरिक्त किसी से न डरे केवल उसी के नाम की क़सम (सौगंद) खाए मात्र उसी के लिए मिन्नत मांगे, केवल उसी से गुनाहों की क्षमा मांगे लाइलाह इल्लल्लाहु का सहीह़ अर्थ यही है, और इसी कारण अल्लाह तआला ने नर्क की आग को उन व्यक्तियों पर ह़राम कर दिया है जिन्हों ने लाइलाह इल्लल्लाह की गवाही का पूर्ण ह़क़ अदा कर दिया।

मुआज़ पुत्र जबल ﷺ को देखो जब आप नबी ﷺ के पीछे चल रहे थे कि अचानक नबी करीम ﷺ ने उन की ओर मुंह किया पूछा ऐ मुआज़? क्या तुम इस बात का ज्ञान रखते हो कि बंदों (दासों) पर अल्लाह का क्या हक़ है? और बंदों का अल्लाह पर क्या हक़ है? मुआज़ ने कहा कि अल्लाह और उस के रसूल (ईशदूत) अधिक ज्ञान रखते हैं तो नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फर्माया कि अल्लाह का हक़ बंदों पर यह है कि बंदे केवल उसी की पूजा करें और उस के संग किसी को भागीदार न बनाऐं, और बंदों का हक़ अल्लाह पर यह है कि अल्लाह तआला उन व्यक्तियों को दंड न दे जो उस के संग किसी को साझी नहीं बनाते हैं।

अब्दुल्लाह पुत्र मस्ऊद ﷺ ने नबी करीम ﷺ से पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह के समीप कौन सा पाप अधिकतर बड़ा है तो आप ﷺ ने इर्शाद फर्माया कि : अल्लाह के संग किसी को साझी बनाना जब कि उस ने तुम्हें पैदा किया।

जी हाँ तौहीद ही के कारण अल्लाह तआला ने रसूलों को भेजा अल्लाह तआला का इर्शाद है:

﴿ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ﴾ النحل: ٣٦

"और हम ने हर उम्मत में रसूल भेजे कि (लोगो)! केवल अल्लाह की इबादत(उपासना) करो, और ताग़ूत (उस के सिवाय सभी झूटे माबूद) से बचो"

अल्लाह के अतिरिक्त जिस की उपासना की जाए उसे तागूत कहते हैं चाहे वह मूर्ति हो अथवा पत्थर, समाधि हो या पेड़, एकेश्वरवाद ही रसूलों का उद्देश्य था जैसा कि अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿ وَسْئَلْ مَنْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رُّسُلِنَآ أَجَعَلْنَا مِن دُونِ الرَّحْمَٰنِ ءَالِهَةً يُعْبَدُونَ ﴿٤٥﴾ ﴾ الزخرف: ٤٥

"और हमारे उन नबियों से मालूम करो जिन्हें हम ने आप से पहले भेजा था कि क्या हम ने रहमान के सिवाय दूसरे मावूद निर्धारित(मुक़र्रर) किये थे जिन की इबादत की जाए "

बल्कि संसार को इस लिए रचाया ताकि लोग उस की इबादत (उपासना) करें अल्लाह तआला फर्माता है:

﴿ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾ ﴾ الذاريات: ٥٦

"मैंने जिन्नात और इंसानों को सिर्फ इसी लिये पैदा किया है कि वे केवल मेरी इबादत करें"

संपूर्ण अमलों के मक़बूल होने का दारो मदार एकेश्वरवाद पर है, अल्लाह तआला का इर्शाद है:

﴿ وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٨﴾ ﴾ الأنعام: ٨٨

"अगर वे लोग भी शिर्क (मिश्रण) करते तो उन के अमल बेकार हो जाते"

जिस व्यक्ति ने तौहीद का हक़ मुकम्मल (पूर्ण) रूप से निभाया वह मुक्ति पागया जैसा कि सहीह हदीसे कुदसी में है जिसे इमाम तिर्मिजी रहिमहुल्लाह ने रिवायत किया है :

''يا ابن آدم إنك لو أتيتني بقراب الأرض خطايا ثم لقيتني لا تشرك بي شيئا لأتيتك بقرابها مغفرة'' (ترمذي)

"अल्लाह तआला इर्शाद फर्माता है कि ऐ आदम की अवलाद यदि तू मेरे पास धरती के समान पाप ले कर आए फिर इस हालत में तू मुझ से मिले कि तू ने मेरे संग किसी को भगीदार न ठहराया तो मैं तेरे पास धरती के बराबर छमा ले कर आऊँगा "

तौहीद की अज़मत (महत्व) के कारण ईश्दुतों ने उस के बाकी न रह जाने का डर ज़ाहिर किया तो यह एकेश्वरवादियों के बावा,मूर्तियों को टुकड़े टुकड़े करने वाले खानए काबा के बानी अधिकतर ज्ञान रखने वाले बादशाह से गिड़गिड़ा कर दुआ (प्रार्थना) करते हैं और कहते हैं:

﴿ وَٱجۡنُبۡنِي وَبَنِيَّ أَن نَّعۡبُدَ ٱلۡأَصۡنَامَ ﴿٣٥﴾ ﴾ ابراهيم: ٣٥

" और मुझे और मेरी औलाद को मूर्तिपूजा से महफूज़ रख "

कौन है जो इस परिक्षा से सुरक्षित रह सके इब्राहीम عليه السلام के पश्चात?

नाफर्मानी की शुरूआत

सब से पहले शिर्क (अनेकश्वरवाद) की शरूआत नूह़ عليه السلام की कौम में हुई तो अल्लाह तआला ने नूह़ عليه السلام को भेजा आप ने लोगों को शिर्क से रोका जिस ने आप की बात स्वीकारा और केवल अल्लाह को सत्य इलाह माना वह मुक्ति पागया और जो शिर्क पर डटा रहा उसे अल्लाह तआला ने तूफ़ान के ज़रीअः हलाक कर दिया।

नूह़ عليه السلام के बाद एक ज़माने तक लोग तौह़ीद पर जमे रहे, फ़िर शैतान ने लोगों के बीच फ़साद फ़ैलाना प्रारंभ किया एंव लोगों के बीच शिर्क को रिवाज दिया और लगातार अलल्लाह तआला शुभ खबर देने वाले रसूलों को भेजता रहा यहाँ तक कि अन्तिम ईशदुत हज़रत मोहम्मद ﷺ को भेजा तो आप ﷺ ने लोगों को तौहीद की ओर बुलाया, अनेकश्वरवादियों से युद्ध किया, एंव मूर्तियों को टुक्ड़े टुक्ड़े किया। पैग़म्बर ﷺ के पश्चात उम्मत तौह़ीद

पर थी यहाँ तक कि उम्मत के कुछ व्यक्तियों में अवलिया और नेक लोगों के अधिक आदर एंव सम्मान के कारण शिर्क दोबारा लौट आया, उन की कब्रों पर गूंबद बनाए गए और उन स्थानों पर प्रार्थना, फर्याद, मिन्नत माँगी जाने लगे एंव पशु भेंट चढ़ाये जाने लगे और अपने विचार के अनुसार उन्हों ने इस शिर्क को नेक लोगों से वसीलः एंव उन से प्रेम करने का नाम दिया उनका विचार था कि उन लोगों से उन का प्रेम एंव उन के क़ब्रों का सम्मान उन्हें अल्लाह के निकट कर देगी और वह लोग यह भूल गए कि यही चीज़ पूर्व मुश्रिकों (अनेकश्वरवादियों) की कठ हुज्जती थी जब कि उन्हों नें अपनी मूर्तियों के विषय में कहा थाः

﴿ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَآ إِلَى ٱللَّهِ زُلْفَىٰٓ ﴾ الزمر: ٣

" हम उन की इबादत केवल इसलिये करते हैं कि यह (बुज़ुर्ग) अल्लाह के क़रीब हम को पहुँचादें"

आश्चर्य तो यह है कि जब आप उन लोगों से शिर्क की बुराई करेंगे तो यह लोग कहेंगे कि हम तो तौहीद परस्त (एकेश्वरवादी) हैं उनका ख्याल है कि

तौहीद का अर्थ अल्लाह तआला का दूसरों से अधिक इबादत(पूजा) के हक़दार होने को स्वीकारना है जब्कि यह अर्थ तौहीद के लिए अधूरा है। अबू जहल एंव अबू लहब इस अर्थ की बुन्याद पर एकेश्वरवादी थे क्योंकि उनका अक़ीदा और विश्वास था कि अल्लाह तआला ही सब से महान इलाह है जो पूजा का हक़दार है परन्तू उन्हों ने अल्लाह तआला के संग दूसरे झूटे इलाहों को साझीदार ठहराया उन का ख्याल था कि यह इलाह अल्लाह की नज़दीकी एंव उन की शिफारिश का ज़रिअः बनेंगे।

एक कहानी

इमाम बैहक़ी ने शुद्ध सनद से एक रिवायत नक़ल की है कि जब नबी करीम ﷺ ने लोगों के बीच अल्लाह की ओर बुलाने का काम शुरू किया तो कुरैश के काफिरों ने लोगों को आप ﷺ से बदगुमान करने की कोशिश शुरू कर दी किसी ने आप को जादूगर तो किसी ने काहिन (शकुन विचारने वाला पुरूष) और किसी ने दीवाना कहा इस के बावजुद वह देख रहे थे कि आप की पैरवी करने वाले

जिस का तू स्वामी है और वह तेरा स्वामी नहीं) बार बार दुहरा रहा था।

तो सहाबा उस की ओर मुड़ गए, पूछा कहाँ जाने का ख्याल? है बोला कि वह मक्का जाना चाहता है सहाबा ने उस के विषय में सोंच विचार किया तो उन्हें पता चला कि वह नुबूव्वत का दावा करने वाले झूटे मुसैलमः नामी व्यक्ति की नगरी से आया था तो सहाबा ﷺ ने उसे कस कर बांधा और उसे पकड़ कर मदीनः मुनव्वरः ले आए ताकि नबी ﷺ उस के विषय में जैसा चाहें फैसला करें जब नबी ﷺ ने उसे देखा तो फर्माया : ऐ मेरे संगतियो! क्या तुम जानते हो कि तुम ने किसे क़ैदी बनाया है?यह सुमामः पुत्र उसाल क़बीला बनू हनीफ़ा का सरदार है फिर आप ने आज्ञा दी कि उसे मस्जिद के किसी खंबे में बांध दो और उसे सम्मान दो एंव उस की आदर करो फिर आप ﷺ अपने घर में गए घर में जो कुछ भोजन था सुमामा के लिए भेजा और आज्ञा दिया कि सुमामा की सवारी के लिए चारह का व्यवस्था किया जाए और स्वंय उस का ख्याल रख्खा जाए अथवा

सुमामा को भोर एंव संध्या में मेरे पास लाया जाए। सहाबा ने उसे मस्जिद के खंबे से लगा कर बांध दिया, फिर नबी करीम ﷺ उस के पास पहुँचे, फर्माया : तुम्हारे पास क्या है सुमामा? कहा मेरे पास भलाई है ऐ मोहम्मद, यदि आप मुझे क़त्ल करेंगे तो खून वाले व्यक्ति को क़त्ल करेंगे अर्थात मेरी क़ौम बदला लेगी और अगर आप कृपा एंव सम्मान देंगे तो आभारी व्यक्ति पर कृपा करेंगे और अगर आप धन चाहते हैं तो जो आप की इच्छा हो माँग लें, नबी करीम ﷺ ने उसे आने वाले कल तक के लिये छोड़ दिया, फिर दूसरे दिन आप ने उस से कहा सुमामः तुम्हारे पास क्या है ? सुमामः ने कहा मेरे पास वह है जो मैं ने कहा था कि यदि आप मुझे क़त्ल करेंगे तो खून वाले व्यक्ति को क़त्ल करेंगे और अगर आप कृपा एंव सम्मान देंगे तो आभारी व्यक्ति पर कृपा करेंगे और अगर आप धन चाहते हैं तो जो आप की इच्छा हो माँग लें,तो नबी करीम ﷺ ने उसे आने वाले कल तक के लिए छोड़ दिया, फिर आप ﷺ वहाँ से गुज़रे तो फर्मायाः तुम्हारे पास

क्या है सुमामः? कहा मेरे पास वह है जो मैं ने कहा, जब नबी करीम ﷺ ने देखा कि इसे इस्लाम धर्म में लगाव नहीं है जब्कि उस ने मुसलमानों की नमाज़ उन की बात चीत उन की सखावत (दानशीलता) देखी तो आप ﷺ ने फर्माया कि सुमामः को छोड़ दो सहाबए कराम ने उसे छोड़ दिया उसे उस की सवारी दे दी और रुख़्सत कर दिया, सुमामः वहाँ से चल कर मस्जिद के समीप एक स्थान पर पहुँचे जहाँ पर पानी (जल) था और स्नान किया फिर मस्जिद में दाखिल हुए और कहाः

(أشهد أن لا إله إلا الله وأن محمدا رسول الله)

" मैं गवाही देता हुँ कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं और मोहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल (ईश्दूत) हैं "

और कहा ऐ मोहम्मद! अल्लाह की क़सम इस धरती पर आप के चेहरः (मूख्मंडल) से अधिक अप्रिय कोई चेहरः न था परन्तु अब आप के चेहरे से प्रिय कोई चेहरा नहीं है, अल्लाह की क़सम मेरे समीप आप के धर्म से अधिक अप्रिय कोई धर्म न था परन्तु अब

आप के धर्म से प्रिय कोई धर्म नहीं है, अल्लाह की क़सम मेरे समीप आप के नगर से अधिक अप्रिय कोई नगर न था परन्तु अब आप का नगर मूझे सारे नगरों से अधिक प्रिय है। फिर कहा ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे आप के घोड़ सवारों ने गिरिफ्तार कर लिया और मैं उम्रः का इरादा रख्ता हूँ परन्तु आप का क्या विचार है? तो आप ﷺ ने उसे शुभ की खुशखबरी दी और हुक्म दिया कि मक्का जाकर उम्रः करे फिर वह तौहीद का तल्बिया पुकारते हुए मक्का पहुंचे और कह रहे थेः

(لبيك لا شريك لك لبيك لا شريك لك)

" मैं हाज़िर हूँ ऐ अल्लाह तेरा कोई भागीदार नहीं, मैं हाज़िर हूँ ऐ अल्लाह तेरा कोई भागीदार नहीं "

जी हाँ वह इस्लाम में प्रवेश कर चुके थे इसीलिए कह रहे थे अय अल्लाह मैं हाज़िर हूँ तेरा कोई भागीदार नहीं,अर्थात अल्लाह के संग किसी क़ब्र की इबादत नहीं की जाएगी, और न किसी मूर्ति की पूजा की जाएगी और न उसके लिए माथा टेका जाएगा, फिर सुमामः ने मक्का में प्रवेश किया,कुरैश के

अधिक से अधिकतर हो रहे हैं तो अनेकश्वरवादियों ने इत्तिफाक़ किया (एकजुट हुये) कि आप ﷺ को धन दौलत और संसार की लालच दिलाई जाये। फिर उन लोगों ने हुसैन पुत्र अल मुन्ज़िर अल खुज़ाई को नबी करीमﷺ के पास भेजा,यह व्यक्ति अनेकेश्वरवादियों के बड़े लोगों में से एक था,जब हुसेन नबी करीम ﷺ के पास पहुंचा तो बोलाः ऐ मोहम्मद आप ने हमारी गिरोह में फूट डाल दिया, हमारी टोली बिखेर दी और आप ने यह किया वह किया यदि आप धन चाहते हैं तो हम आप के लिए इतना धन इकठ्ठा कर देंगे कि आप सब से अधिक धनवान बन जायेगें,अगर आप को स्त्रीयों की चाहत है तो हम आप का विवाह सब से अधिक खूबसूरत स्त्री से कर देंगे,और अगर आप बादशाह बनना चाहते हैं तो हम आप को बादशाह स्वीकार कर लेंगे हुसैन अपनी बात कहता रहा और आप ﷺ को उक्साता रहा आप ﷺ चुप थे और उस की बात सुन रहे थे जब हुसैन अपनी बात कह चुका तो आप ﷺ ने उस से कहा : ऐ इमरान के पिता! क्या

तुम्हारी बात पूरी होगई उस ने कहा हाँ तो आप ﷺ ने फर्माया मेरे प्रश्नों का उत्तर दो, हुसैन ने कहा पूछिए आप ﷺ ने पूछा ऐ इमरान के पिता तुम कितने इलाहों की पूजा करते हो? उस ने कहा सात इलाहों की जिस में से छह ज़मीन में और एक आकाश में है, आप ﷺ ने पूछा जब धन छिन जाए तो किसे पुकारते हो? बोला उसे पुकारता हुँ जो आकाश में है पूछा वर्षा रुक जाए तो किसे पुकारते हो? बोला उसे पुकारता हुँ जो आकाश में है, आप ﷺ ने पूछा तो तुम्हारी पुकार केवल आकाश वाला इलाह सुनता है या सब के सब सुनते हैं? उस ने कहा कि केवल आकाश वाला ही इलाह सुनता है तो नबी ﷺ ने फर्माया कि तुम्हारी पुकार केवल वह सुनता है, तुम्हारे ऊपर कृपा एंव सम्मान केवल वह देता है, और धन्यवाद देने में आकाश वाले के संग अतिरिक्तों को साझी ठहराते हो क्या तुझे इस बात का डर है कि यह सब इसे पछाड़ देंगे? हुसेन ने कहा नहीं यह सब आकाश वाले को नहीं पछाड़ सकते तो नबी ﷺ ने फर्माया : ऐ हुसैन इस्लाम धर्म

स्वीकार कर ले तुझे ऐसी बातें सिखाऊँगा जिन के ज़रिअः अल्लाह तआला तुझे लाभ पहुँचाएगा।

सच्चाई (सत्यता)

जी हाँ वह लोग लात एंव उज़्ज़ा नामी मूर्तियाँ पुजते थे परन्तु वह उसे छोटा इलाह मानते थे जो उन लोगों को बड़े इलाह अर्थात अल्लाह तआला के समीप कर देंगे और वह लोग उनके लिए कई प्रकार की पूजा करते थे ताकि वह अल्लाह के यहाँ उन की सिफारिश करें इसलिए वह लोग कहते थे :

﴿ مَا نَعۡبُدُهُمۡ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَآ إِلَى ٱللَّهِ زُلۡفَىٰٓ ﴾ الزمر: ٣

" हम उन की इबादत केवल इसलिए करते हैं कि यह (बुज़ुर्ग) अल्लाह के क़रीब हम को पहुँचादें "

अनेक्श्वरवादियों का यह विश्वाश था कि अल्लाह तआला ही जन्म देने वाला, रोज़ी(जीविका) देने वाला जीवित करने वाला मारने वाला है, अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ وَلَئِن سَأَلۡتَهُم مَّنۡ خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضَ لَيَقُولُنَّ ٱللَّهُۚ قُلِ ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِۚ بَلۡ أَكۡثَرُهُمۡ لَا يَعۡلَمُونَ ٢٥ ﴾ لقمان: ٢٥

" और अगर आप उन से पूछें कि आकाश और धरती का पैदा करने वाला कौन है? तो यह ज़रूर जवाब देंगे अल्लाह,तो कह दीजिए कि सारी तारीफों के लायक़ अल्लाह ही है, लेकिन उन में से ज़्यादातर लोग अंजान हैं "

बुखारी,मुस्लिम एंव दीगर पुस्तकों में हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से नक़ल किया गया है कि नबी करीम ﷺ ने नज्द की ओर कुछ घुड़सवारों को भेजा ताकि मदीनः के किनारों की ख़बर लाएं वह अपनी सवारियों पर चक्कर काट रहे थे कि अचानक उन्हों ने एक व्यक्ति को देखा जो हथियार लटकाए एहराम की चादर ओढ़े हुए इस प्रकार तलबियः पुकार रहा था :

(لبيك اللهم لبيك لبيك لا شريك لك إلاشريكا هولك تملكه وما ملك)

"मैं हाज़िर हुँ ऐ अल्लाह मैं हाज़िर हुँ मैं हाज़िर हूँ तेरा कोई साझीदार नहीं सिवाय एक भागीदार के जिस का तू स्वामी है और वह तेरा स्वामी नहीं" और वह व्यक्ति यह वाक्य (सिवाय एक भागीदार के

गुनहगारों से अधिक नज़्दीक और अनेक्शवरवादियों से अधिक दूर है।

एक कहानी

कुछ व्यक्ति ज़िनाकार (व्यभिचारी) और शराबियों की अधिक्ता को देखकर भयभीत,परेशान,और रंजीदः होजाते हैं जब्कि वह लोग ऐसे अधिकतर लोगों को देखकर मुतअस्सिर नहीं होते जो क़ब्रों की चौखट से बरकत ह़ासिल करते हैं और उनके लिए अनेक प्रकार की इबादतें करते हैं, जब्कि ज़िना (व्यभिचार) करना,शराब पीना, बड़े बड़े गुनाहों में से हैं परन्तु यह उस व्यक्ति को इस्लाम धर्म से ख़ारिज नहीं करते हैं जब्कि अल्लाह के अतिरिक्त कि उपासना चाहे जिस प्रकार की हो शिर्क है और इसके कारण इन्सान कुफ्र (अस्वीकृति) की हालत में मरेगा इसी कारण अल्लाह वाले ज्ञानी लोग अकीदः के पाठ को एक महत्वपूण नियम मानते हैं।

एक शैख साहब ने तौहीद की अहमियत (महत्ता) पर किताब लिखी फिर छात्रों के सामने उसकी तशरीह़ (व्याख्या) करने लगे इस किताब के मसाइल को बार

बार बयान करने लगे तो एक दिन छात्रों ने कहा कि शैख़ साहब हम चाहते हैं कि आप पाठ का मौज़ु'अ (विषय) बदलदें मिसाल के तौर पर कहानियाँ,सीरत (जीवनचरित) इतिहास का पाठ पढ़ायें, शैख साहब ने कहा इनशाअल्लाह इस मस'अले में विचार करेंगे। फिर आनेवाले कल भोर में दुःखित और रंजीदा छात्रों के पास पहुँचे छात्रों ने दुःखित होने की वजः पुँछी,तो शैख साहब ने कहा कि मैंने सुना है कि पड़ोस के ग्राम में एक व्यक्ति ने एक नए घर मे रहना शुरू'अ (प्रारंभ) किया और जिनों के छेड़छाड़ से भयभीत होकर घर के दरवाज़े की चौखट पर जिनों की नज़दीकी हासिल करने के लिए एक मुर्ग़ ज़िबह़ किया और मैंने इस विषय में छान बीन करने के लिए कुछ व्यक्तियों को भेज दिया है इस बात को सुन कर छात्र अधिक मुतअस्सिर(प्रभावित) न हुए परन्तु उस व्यक्ति के लिए हिदायत की दुआ की और चुप हो गए।

दूसरे दिन सवेरे शैख साहब छात्रों से मिले,फर्मायाः मैं ने गुज़िश्ता खबर की तह़क़ीक़ कर ली है ऐसी बात

नहीं है जैसा कि मैं ने बताया था, उस व्यक्ति ने जिन की नज़्दीकी ह़ासिल करने के लिए मुर्ग़ नहीं जिबह़ किया बल्कि उस ने अपनी माँ के साथ मुंह काला किया है,यह सुन्ते ही छात्र भड़क गए और जोश में आगए उस व्यक्ति को अधिकतर बुरा भला कहा अथवा कहा कि अवश्य इसकी निंदा की जाए, उसे समझाया जाए अथवा दंड दिया जाये, जब अधिक उपद्रव होने लगा तो शैख़ साहब ने कहा कि कितनी आश्चर्य की बात है कि ऐसा व्यक्ति जो बड़े पाप में पड़ गया जब्कि यह पाप उसे धर्म से ख़ारिज नहीं करेगा और तुम लोग एसे व्यक्ति की अश्लीलता नहीं करते जो शिर्क में पड़ गया अल्लाह के अतिरिक्त के लिए ज़िबह़ किया एंव अल्लाह के इलावः की इबादत की छात्र चुप हो गए ,फिर शैख साहब ने कुछ छात्रों की ओर इशारः किया और कहा किताबुअल तौहीद उठाओ फिर से उसकी शर्ह़ (व्याख्या) करें।

शिर्क महा पाप है अल्लाह तआला इसे कदापि क्षमा नहीं करेगा,अल्लाह तआला का इर्शाद हैः

﴿ إِنَّ ٱلشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ﴿١٣﴾ ﴾ لقمان: ١٣

" बेशक अल्लाह का साझीदार बनाना बहुत बड़ा जुल्म है "

जन्नत(स्वर्ग) शिर्क करने वालों पर ह़राम है और, वह लोग हमेशा जहन्नम (नर्क) में रहेंगे, अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ إِنَّهُۥ مَن يُشْرِكْ بِٱللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ ٱللَّهُ عَلَيْهِ ٱلْجَنَّةَ وَمَأْوَىٰهُ ٱلنَّارُ ۖ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ﴿٧٢﴾ ﴾ المائدة: ٧٢

" जो अल्लाह के साथ शिर्क करेगा अल्लाह ने उस पर जन्नत ह़राम कर दी है और उस का ठिकाना जहन्नम है और ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा"

जो व्यक्ति शिर्क में पड़ गया तो यह शिर्क उस की संपूर्ण इबादतें,नमाज़,रोज:(व्रत)हज,जेहाद,सदक़:आदि को बर्बाद करदेगा, अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ وَلَقَدْ أُوحِىَ إِلَيْكَ وَإِلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ ٱلْخَٰسِرِينَ ﴿٦٥﴾ ﴾ الزمر: ٦٥

सरदारों को जब खबर लगी तो सुमामः के पास आए और उनका तल्बिया सुना वह कहरहे थेः

(لبيك لا شريك لك لبيك لا شريك لك)

" मैं हाज़िर हूँ ऐ अल्लाह! तेरा कोई भागीदार नहीं, मैं हाज़िर हूँ ऐ अल्लाह तेरा कोई भागीदार नहीं "

तो उन में से किसी ने कहा क्या तू गुमराह हो गया है? सुमामः ने कहा नहीं परन्तु मैं मोहम्मद ﷺ के संग ईमान ले आया हूँ यह सुन कर मुश्रिकों ने उन्हें परेशन करना चाहा तो सुमामः ने ज़ोरदार आवाज़ में कहा जी नहीं अल्लाह की क़सम (सौगंध) तुम्हारे पास यमामः से गेंहुँ का एक दानः भी न आयेगा जब तक कि नबी करीम ﷺ इस की आज्ञा न देदें।

वह लोग अपनी मूर्तियों से अधिकतर अल्लाह की इज़्ज़त एंव सम्मान करते थे।

तो क़सम है अल्लाह की मुझे बताओ कि अबूजहल और अबूलहब के शिर्क और उन लोगों के शिर्क के बीच क्या अन्तर है जो आज क़ब्रों के पास भेंट चढ़ाते हैं अथवा क़ब्रों का सजदः करते हैं या उस के लिए ज़िबह़ करते हैं और कब्रों का चक्कर लगाते हैं,

या किसी वली की क़ब्र के पास ज़िल्लत, खाक्सारी, बेबसी और विनम्रता के साथ खड़े होते हैं उन से अभिलाषा एंव मनोकामना करते हैं उन से कठिनाइयों और परेशानियों का इजालः (निवारण) चाहते हैं सड़ी गली हड्डियों से बीमार के ठीक और मुसाफिर के वापस लौटने की उम्मीद लगाते हैं।

आश्चर्य है, अल्लाह तआला फर्माता हैः

﴿ إِنَّ ٱلَّذِينَ تَدۡعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ عِبَادٌ أَمۡثَالُكُمۡ فَٱدۡعُوهُمۡ فَلۡيَسۡتَجِيبُواْ لَكُمۡ إِن كُنتُمۡ صَٰدِقِينَ ﴿١٩٤﴾ ﴾ الأعراف: ١٩٤

" हक़ीकत में अल्लाह को छोड़ कर जिन को पुकारते (इबादत करते) हो वह भी तुम ही जैसे बंदे हैं,तो तुम उन को पुकारो फिर उन को चाहिए कि तुम्हारा कहना करदें,अगर तुम सच्चे हो "

यह शिर्क जो कब्रों के पास होता है अर्थात कब्रों के लिए जिबह करना, उन की नज़्दीकी हासिल करना, उनका चक्कर लगाना बड़े बड़े गुनाहा (पाप) में से है, जी हाँ ज़िना, शराब नोशी क़त्ल, माँ बाप की

नाफर्मानी से अधिक बड़ा पाप है, अल्लाह तआला का इर्शाद है:

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَغۡفِرُ أَن يُشۡرَكَ بِهِۦ وَيَغۡفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَآءُ ﴾ النساء: ٤٨

" बेशक अल्लाह तआला अपने साथ शिर्क किये जाने को माफ नहीं करता और इस के सिवाय जिसे चाहे माफ करदे "

जी हाँ अल्लाह तआला बदकारों ,क़ातिलों और मुज्रिमों को क्षमा कर सक्ता है परन्तु वह शिर्क को माफ नहीं करेगा।

नबी करीम ﷺ ने उस क़िस्सः (कथा) के विषय में खबर दी जो बुखारी एवं मुस्लिम में मौजूद है, क़िस्सः यह है कि बनी इस्राईल की एक बदकार स्त्री जंगल से गुज़र रही थी कि उस ने एक कुत्ते को कुएं के निकट देखा कभी वह कुएं के मुंडेर पर चढ़ जाता है तो कभी उस के इर्द गिर्द चक्कर काटता है गर्मी का ज़मानः था अधिक प्यास के कारण ज़बान बाहर निकाले हुए था क़रीब था कि प्यास की

अधिक्ता के कारण हलाक होजाए, जब उस बदकार स्त्री ने कुत्ते को देखा जिस ने अधिकतर अल्लाह की नाफर्मानी की थी और दूसरों को गुमराह किया था बदकारी एवं गुनाहों में लिथड़ी हुइ थी और ह़राम माल खारही थी, तो अपना जूता निकाला और उसे अपनी ओढ़नी से बाँध कर कुएं से पानी निकाला और कुत्ते को पिलाया तो अल्लाह तआला ने उसके कारण उस स्त्री को क्षमा कर दिया।

अल्लाह अधिक महान है अल्लाह तआला ने उसे किस कारण क्षमा कर दिया? क्या वह रातों में जाग कर नमाज़ पढ़ती थी एंव दिन में रोज़ः (व्रत) रखती थी? क्या अल्लाह के रास्ते में उसने जिहाद किया था? कदापि नहीं उसने तो पानी के कुछ घूँट कुत्ते को पिलाया था जिसके कारण अल्लाह तआला ने उसे माफी देदी क्योंकि वह गुनहगार थी परन्तु उसने अल्लाह के संग किसी वली अथवा किसी क़ब्र को साझी न ठहराया और न ही वह किसी पत्थर या इन्सान की ताज़ीम की क़ायल थी इसी कारण अल्लाह तआला ने उसे क्षमा कर दिया। क्षमा

कारण बनेंगे, क्या ही अच्छा कार्य किया वह छोटा सा बच्चा (शिशु) जिसकी आयु केवल तेरह साल थी अपने पिता के संग भारत गया,भारत अधिक बड़ा देश है वहाँ कई प्रकार के इलाह हैं वह लोग हर चीज़ पशु पेड़ पौदे पत्थर इन्सान और तारों की पूजा करते हैं, वह शिशु एक मन्दिर में गया उसने देखा कि लोग नारियल की पूजा कर रहे हैं और उन लोगों ने नारियल में दो आँखें नाक और मुँह बना रख्खा था,उसके लिए वह लोग धूनी देरहे थे एंव खाने पीने की चीजें पेश कर रहे थे फिर उस बालक ने उन लोगों को देखा कि वह लोग उसके लिए नमाज की तरह इबादत कर रहे हैं जब उन लोगों ने नारियल का सजदः किया (माथा टेका) तो बालक आगे बढ़ा और नारियल उचक कर भागा, जब उन लोगों ने सजदे से सिर उठाया तो अपने परमात्मा को न पाकर इधर उधर निगाह किया तो क्या देख रहे हैं कि एक बालक उनके परमात्मा को उठाकर भाग रहा है, उन लोगों ने अपनी पूजा खत्म कर दिया और बालक के पीछे दौड़ पड़े, जब बालक उन

लोगों से दूर होगया तो धरती पर बैठ कर नारियल फोड़ा और नारियल का पानी पीकर उसे धरती पर फेंक दी, जब उन लोगों ने अपने परमात्मा को तोड़ा हुआ पाया तो चीख़ पड़े, उस लड़के को पकड़ा उसे मारा पीटा एवं घसीटा फिर शहर के जज के समीप लेगए, जज ने कहा कि तुम ने इनके परमात्मा को तोड़ा है? बालक बोला नहीं मैंने तो नारियल तोड़ा है जज ने कहा कि परन्तु यह तो उनका परमात्मा था बालक बोला जज साहब क्या किसी दिन आप ने नारियल तोड़ कर उसे खाया है? जज ने कहा हाँ बालक बोला तो इस से क्या फर्क पड़ता है अगर मैं ने तोड़ दिया जज चुप होगया एवं हैरान रह गया और नारियल के पुजारियों की ओर उन से जवाब तलब करने के इरादे से देखा तो पुजारियों ने कहा कि इसमें दो आँखें थीं मुंह था बालक चिल्लाया कहने लगा क्या यह बोल सकता है? उन्होंने कहा नहीं बालक बोला क्या यह सुन सकता है? उन्होंने कहा नहीं बालक बोला तो तुम लोग क्यों इसकी पूजा करते हो? तो काफिर भौंचके रह गए और अल्लाह

तआला ज़ालिम क़ौमों को हिदायत नहीं देता है, जज ने लोगों को देखा तो उसे डर महसूस हुआ कि कहीं यह लोग बालक को दुख न पहुँचायें तो बालक से दंड के तौर पर कहा कि तुम्हारे उपर एक सो पचास रूपये जुर्मानः मुक़र्रर करते हैं, न चाहते हुए भी बालक ने जुर्मानः देदिया और कामियाब होकर निकला।

वह चीजें जो अधिकतर उनकी मिट्टी पलीद करती हैं यह कि वह लोग जो कब्रों से ता'अल्लुक़ (संबंध) जोड़ते हैं वह मृत्कों की आदर एवं उनसे अपनी हाजत तलब करने पर बस नहीं करते बल्कि क़ब्रों की सजावट, उसे ऊँचा करने,एंव उस पर बिल्डिंग बनाने में अपना मालो दौलत खर्च करते हैं।

क़ब्रों पर बनाए जााने वाले गुंबद दो प्रकार के होते हैं एक तो वह गुंबद जो आम मुसलमानों की क़ब्रों पर बनाते हैं इस प्रकार कि क़ब्र के बीच ऊँचा गुंबद बिल्कुल स्पष्ट रूप में होता है, दूसरा वह गुंबद जो मस्जिदों में बनाए जाते हैं या उन पर मस्जिदें बनाई जाती हैं और यह गुंबद कभी मस्जिद के अगले

हिस्से में होता है तो कभी मस्जिद के पिछले हिस्से में।

नबी करीम ﷺ ने इस से उम्मत को डराया है आप ने फर्माया :

"اللهم لاتجعل قبري وثنا يعبد"

(हे अल्लाह मेरी क़ब्र को मूर्ति न बनाना जिस की इबादत की जाए) {सहीह़ मुस्लिम(१६०६)} और यह आप ﷺ की क़ब्र एवं संपूर्ण क़ब्रों को शामिल है।

हज़रत अली ﷺ से रिवायत है कि उन्हों ने अबुल हय्याज से कहा क्या मैं तुम्हें उस चीज़ के लिए न भेजूँ जिसके लिए मुझे अल्लाह के रसूल (संदेशवाहक) ने भेजा था? वह ये कि तू कोई मोजस्स्मः (प्रतिमा) न छोड़े मगर ये कि उसे मिटा देना और न कोई ऊँची क़ब्र मगर उसे बराबर कर देना।

और नबी करीम ﷺ ने क़ब्रों के पक्का किए जाने, उस पर बैठने, अथवा उस पर बिल्डिंग बनाने या उस पर लिखने से रोका है, और नबी करीम ﷺ ने

" और बेशक तेरी तरफ भी और तुझ से पहले(के सभी नबियों) की तरफ वहय की गयी है कि अगर तूने शिर्क किया तो बेशक तेरा अमल बर्बाद हो जाएगा "

अनेक प्रकार के शिर्क हैं, कुछ शिर्क ऐसे हैं जो इन्सान को धर्म से निकाल देते हैं और ऐसा शिर्क करने वाला यदि तौबः किए बिना मर गया तो हमेशा जहन्नम में रहेगा, जैसे अल्लाह के अतिरिक्त दुआ करना, जिबह़ एंव मिन्नत के ज़रि'अः अल्लाह के अतिरिक्त अर्थात क़ब्र जिनों एंव शैतानो की नज़दीकी ढूँडना अथवा मुरदों से या जिनों एंव शैतानों के नुक़सान पहुँचाने से डरना, या इस बात से डरना कि यह कहीं उसे बीमार न करदें, अल्लाह के अतिरिक्त से ऐसी चीज़ों की आशा करना जिसकी शक्ति अल्लाह तआला के सिवाय किसी को नहीं है, अर्थात ह़ाजत पूरी करना परेशानियों को दूर करना जिसे आज कल लोग गुंबदों एंव क़ब्रों मे ढूँड रहे हैं।

क़ब्रों की ज़ियारत इब्रत एंव मुरदों के लिये दुआ(ईश्वर से प्रार्थना) करने की इच्छा से जाना चाहिए,नबी करीम ﷺ ने फर्मायाः

(زوروا القبور فإنها تذكركم الآخرة)''ابن ماجه''

" क़ब्रों की ज़्यारत करो क्योंकि यह तुम्हें आखिरत (प्रलोक) की याद दिलाती हैं)"

और क़ब्रो की ज़ियारत केवल पुरुषों के लिए है, स्त्रीयों के लिए क़ब्रों की ज़ियारत सहीह़ नहीं है क्योंकि नबी करीम ﷺ ने क़ब्रों की ज़ियारत करने वाली स्त्रीयों पर लअनत (धुतकार) फर्माइ है अथवा स्त्रीयों की ज़ियारत स्वयं उनके लिये एंव दूसरों के लिए बुराई में मुब्तला होने का सबब है।

क़ब्रों की ज़ियारत ,क़ब्र वाले व्यक्ति से दुआ अथवा उन से मदद माँगने के लिये,उन के लिये ज़िबह़ करने,या उन की नज़्दीकी ढूँडने के लिए उन से ह़ाजत माँगने या उन के लिये मिन्नत माँगने की गरज़ से करना बहुत बड़ा शिर्क है, इसमें कोई अन्तर नहीं कि क़ब्र वाला व्यक्ति जिसे पुकारा जारहा है नबी हो या वली अथवा कोई नेक व्यक्ति हो यह

सब के सब इन्सान हैं जो न तो लाभ का अधिकार रखते हैं और न नुक़्सान की, अल्लह तआला अपने प्यारे नबी मोहम्मद ﷺ को मुख़ातिब करके फर्माता है:

﴿ قُل لَّآ أَمۡلِكُ لِنَفۡسِي نَفۡعًا وَلَا ضَرًّا ﴾ الأعراف: ١٨٨

" आप कह दीजिये कि खुद मैं अपने आप के लिए किसी फायदे का हक़ नहीं रखता और न किसी नुक़्सान का "

कुछ नासमझ लोग नबी करीम ﷺ से दुआ माँगते हैं एवं आप से फर्याद करते हैं या ह़ज़रत हुसैन رضي الله عنه की क़ब्र के पास या बदवी,और जीलानी या इनके सिवाय दीगर क़ब्रों के निकट ऐसा करते हैं,ध्यान रख्खें कि यह सब बड़े शिर्क में दाख़िल हैं।

स्पष्ट रहे क़ब्रों की ज़ियारत, नमाज़ और कुर्आन ख्वानी के लिए करना बिदअत (धर्म में नयी बत) है क़ब्रों की ज़ियारत तो ज़ियारत करने वाले व्यक्ति के लिए इब्रत एवं मृतक के वास्ते (निमित्त) दुआ करने के लिए है।

बड़े आश्चर्य की बात है कि मुसलमान क़ब्रों मे दफ़न किए हुये लोगों के पास जाए जब्कि वह जानता है कि वह पुराने एंव सड़े गले शव हैं, जो कुछ उनके साथ होरहा है उस से छुटकारा हासिल करने की भी शक्ति नहीं रखते, चे जाये कि वह लोगों की पूकार सुनें या उनकी परेशानियाँ दूर करें।

अधिकतर कब्रें जिनकी सम्मान की जाती है उस पर शान्दार इमारत (बिल्डिगं) बनाई जाती है उसके लिए नोकर एंव द्वारपाल रखते हैं जो परहेज़गारी और बदहाली ज़ाहिर करते हैं लोगों के लिए झूट घड़ते हैं और लोगों को अल्लाह के संग साझी बनाने की ओर बुलाते हैं।

नारियल की पूजा

मैं उन व्यक्तियों से मुखातिब हूँ जो मुरदों (मृत्कों) को पुकारते हैं, यह मुरदे जिनकी चौखट पर रोते हो और उन से सिफारिश की कामना करते हो क्या यह तुम्हारी बातें सुनते हैं, क़सम (सौगंध) है अल्लाह की न यह सुन सक्ते हैं और न लाभ पहुँचासक्ते हैं बल्कि यह तुम्हारी रुस्वाई एंव नुक़्सान (हानि) का

पाकिस्तान में अली अल हजवेरी की क़ब्र जो लाहौर में है उस की गिन्ती बड़े क़ब्रों में होती है,आश्चर्य है कि लोग इस के दीवाने हैं जब्कि अधिकतर क़ब्रें झूटी हैं जिस की कोई हक़ीक़त (सत्यता) नहीं है।

हुसैन ﵁ की क़ब्र क़ाहरः में है लोग उस की नज़्दीकी ढूँडते हैं और उस के लिए ढेर सारी इबादतें जैसे दुआ, ज़िबह, तवाफ (चक्कर लगाना) इत्यादि करते हैं।

अस्क़लान में भी हुसैन ﵁ की क़ब्र है और हलब के पश्चिमी किनारे पर जोशन नामी पहाड़ के दामन में है जो हुसैन के सिर की ओर मंसूब है, दिमश्क़ में हनानः के भीतर नजफ और कूफा के बीच,चार दूसरी क़ब्रें हैं जिस के विषय में कहा जाता है कि यहाँ पर हुसैन के सिर की क़ब्र है और मदीनः में उन की माँ फातिमः रज़ियल्लाहु अनहा की क़ब्र के निकट, और नजफ में उस कब्र के समीप जो उनके पिता अली ﵁ की ओर मंसूब है। और कहा जाता है कि उनका सिर उनके शरीर के संग लौटा दिया गया है। {अल इनहराफात अल अकदिय्यः(२८८),

मुजल्लःलुगत अल अरब बरस १६२६ भाग (२) (५५७,५६१) मआलिम् हलब अल असरिय्यः अब्दुल्लाह अल हज्जार}।

सय्यदः ज़ैनब पुत्री अली ﷺ का देहांत मदीनः में हुआ और बकी'अ में दफन की गईं परन्तु दिमश्क़ में एक क़ब्र शिया समुदाय के लोगों ने बनाई है जो उन की ओर मंसूब है।{देखिएअब्दुल्लाह पुत्र मोहम्मद पुत्र खमीस एक महीनः दिमश्क़ में(६७)।

और अधिकतर कब्रें जो क़ाहिरः में उन की ओर मंसूब हैं तो इतिहास की किसी पूस्तक में कदापी इस का ज़िक्र नहीं है कि वह मिस्र में आइ हों जीवन में अथवा देहांत के पश्चात।

मिस्र में इस्कन्दिरियः वालों का पक्का ए'तक़ाद (विश्वास) है कि अबुद्दर्दा ﷺ उस क़ब्र में दफन किये गये हैं जो उनके नगर में उन की ओर मंसूब है,जब्कि ज्ञानियों के नज़्दीक यह बात साबित (स्पष्ट) है कि आप को इस नगर में दफन नहीं किया गया।{मसाजिद मिस्र व अवलियाउहा अल सालिहून (३/३३)।

और यही बात क़ाहिरः में रसूल्लाह ﷺ की पुत्री सय्यदः रुक़ैय्यः के विषय में कह सक्ते हैं जिसे फातमी खलीफः अल आमिर बिअहकामिल्लाह की पत्नी ने बनवाया था और हुसैन पुत्र अली की पुत्री सय्यदः सकीनः ؓ की क़ब्र।

अतः मशहूर कब्रों में से इराक़ के भीतर नजफ़ में अली पुत्र अबु तालिब ؓ की क़ब्र है जब्कि वह झूटी क़ब्र है क्योंकि अली ؓ को कूफा में हुकूमत के महल के भीतर दफन किया गया था।

बस्रः में अब्दुर्रहमान पुत्र औफ़ ؓ की क़ब्र है जब्कि उन का निधन मदीनः में हुआ और बकी'अ में आप को दफन किया गया।

ह़लब में जाबिर पुत्र अब्दुल्लाह की क़ब्र है जब्कि आप का निधन मदीनः में हुआ है।

सीरिया में एक क़ब्र है जिसे लोग रसूल ﷺ की दो पुत्रियाँ उम्मे कुलसूम और रुक़ैय्यः की ओर मंसूब करते हैं जब्कि यह दोनों उस्मान गनी ؓ की पतनियाँ हैं जिन की वफात (निधन) नबी करीम ﷺ

की जीवन में मदीनः मुनव्वरः के भीतर हुई और मदीनः में बक़ी'अ के भीतर दफन की गईं।

ज्ञानियों के नज़्दीक यह बात स्पष्ट है कि झूटी क़ब्रों में से वह क़ब्र है जो दिमश्क़ की जामा मस्जिद में हूद عليه السلام की ओर मंसूब है क्योंकि हूद ﷺ सीरिया नहीं गए और हज़रमौत में भी एक क़ब्र है जो आप की ओर मंसूब है।

हज़रमौत मे एक क़ब्र और है जिस के विषय में लोगों का विचार है कि यह सालेह عليه السلام की क़ब्र है जब्कि आप का निधन हिजाज़ में हुआ है और फिलिस्तीन के भीतर याफा नाम की बस्ती में भी आप की क़ब्र है और वहाँ पर अय्यूब عليه السلام का मज़ार भी है।

शैख़ बरकात का स्थान

ध्यान दीजिए कि किस प्रकार से शैतान लोगों की अक़्लों (बुद्धि) से खिलवाड़ करता है यहाँ तक कि उन को आकाश एंव धरती के रब की इबादत से मृतकों की ताज़ीम (आदर) बल्कि मिट्टी एंव सड़ी गली हड्डियों के सम्मान की ओर फेर देता है और

क़ब्रों पर मस्जिदें बनाने वाले और उस पर दिया जलाने वाले पर धुत्कार फर्माई है, इस्लामी देशों में यह चीजें न तो सहाबः (वह लोग जिन्हों ने रसूल ﷺ को ईमान की हालत मे देखा और ईमान की हालत में निधन हुआ) के ज़माने (समय) में थीं और न ताब्ईन (वह लोग जिन्हों ने रसूल के किसी सहाबी को ईमान की हालत में देखा और ईमान की हालत में मृत्यु हुयी) के समय में थीं चाहे वह नबी की क़ब्र हो या नबी के अतिरिक्त की।

दर्दनाक मुसीबत

आज सरसरी तौर पर निम्न लिखित दर्दनाक ह़क़ाइक़ मुलाहज़ः करें :

केवल मिस्र देश में उन अवलिया की क़ब्रें जो मिस्र के शहरों और दिहातों में फैली हुई हैं उन की तादाद छह हजार के निकट है और ये कब्रें मुरीदों अथवा चाहने वालों के मीलाद क़ायम करने के सेंटरर्स हैं बल्कि बहुत मुश्किल है कि आप साल भर में कोई ऐसा दिन पायें जिस दिन मिस्र के किसी नगर में जश्ने मीलाद न मनाया जाता हो, और वे बस्तियाँ

जो क़ब्रों से ख़ाली हैं उन्हें बर्कत से खाली समझा जाता है ।

कब्रें दो प्रकार की होती हैं छोटी और बड़ी, बिल्डिंग जितनी अधिक ऊँची एंव वसी'अ (विस्तृत) हो और क़ब्र वाले की नामवरी (प्रसिद्धि) फैली हुई हो उतना ही अधिक उस का ए'तबार और ज़ायरीन की ता'अदाद में बढ़ोतरी का सबब होती है ।

क़ाहिरः के भीतर बड़ी क़ब्रों में से हुसैन, सय्यदः ज़ैनब,सय्यदः आयशः, सय्यदः सकीनः,सय्यदः नफीसः, इमाम शाफ़ेयी और इमाम लैस की क़ब्रें हैं अथवा बद्वी की क़ब्र तंता में, दुसूक़ी की क़ब्र दुसूक़ में, शाज़ली की क़ब्र हुमेसरः नाम की एक बस्ती में और हुसैन की ख्याली क़ब्रें हैं जिस का लोग क़स्द करते हैं,मिन्नत और नेक कार्यों के ज़रिये उन की नज़्दीकी ढूँडते हैं बल्कि हद पार करके उनका चक्कर लगाते हैं,उन से शिफ़ा (रोगमूक्ति) माँगते हैं और परेशानियों के वकत उन से ज़रूरतें पूरी करने के इच्छुक होते हैं।

सय्यद बद्वी की क़ब्र : साल में उस के मौसम् (ऋतु) मुक़र्रर हैं जो हज्जे अक्बर की तरह (प्रकार) होते हैं जिस का इरादः देशी विदेशी शीअः सुन्नी सब करते हैं।

और जलालुद्दीन रूमी की क़ब्र और मज़ार पर लिखा हुआ है कि यह तीन धर्मों के लोग मुसलमानों, यहूदियों अथवा ईसाइयों के मुवाफिक़ है, और इस बुत को कुत्बे आज़म का नाम दिया जाता है।

शाम देश के विषय में भरोसेमंद रेसर्च स्कालरों ने लिख्खा है कि केवल दिमश्क़ में एक सौ चौरानवे क़ब्रें हैं जिस में से चौव्वालिस क़ब्रें अधिक मशहूर (प्रसिद्ध) हैं और सत्ताइस से अधिक क़ब्रों की निस्बत सहाबए कराम की ओर की जाती है, और दिमश्क़ में यहया पुत्र ज़कारिया के सिर की क़ब्र है जो मस्जिदे उमवी के भीतर है,और मस्जिद के बग़ल में सलाहुद्दीन और इमामुद्दीन ज़ंगी की क़ब्रें और इसके अतिरिक्त दूसरी क़ब्रें हैं जिन की ज़ियारत की जाती है और उन से वसीलःपकड़ा जाता है,अथवा शाम देश में फुसूसुलहिकम नामी किताव के मुसन्निफ़

(लेखक) इब्ने अरबी की क़ब्र है जो गुमराह और बदकार व्यक्ति था।

टरकी में चार सौ से अधिक जामा मस्जिदें हैं तक़रीबन कोई भी मस्जिद क़ब्र से खाली नहीं है, सब से अधिक मशहूर जामा मस्जिद कुस्तुनतुनिया में है जो अबूअय्यूब अंसारी की क़ब्र पर बनाई गई है।

और भारत में एक सो पचास से अधिक क़ब्रें हैं जिस की ज़ियारत लोग करते हैं।

इराक़ में केवल बग़दाद के भीतर एक सौ पचास से अधिक जामा मस्जिद हैं बहुत कम इमकान (संभावना) है कि कोई भी जामा मस्जिद क़ब्र से खाली हो, नगर मूसिल में छिहत्तर से अधिक क़ब्रें हैं जो आम मस्जिदों में और मुस्तक़िल तौर पर हैं, अल इनहिराफात अल अक़दिय्यः(२८६,२६४,२६५)।

और भारत में शैख बहाउद्दीन मुलतानी की क़ब्र ज़ियारत का स्थान बन चुकी है, लोग उस के लिए अनेक प्रकार की इबादतें करते हैं उदहारण के तौर पर माथा टेकना, अथवा मिन्नतें माँगना इत्यादि।

कभी यह चीज़ क़ब्रों में से किसी क़ब्र की झूटी इशाअतअ (प्रचार) से प्रारम्भ होती है वह इस प्रकार कि यह क़ब्र ज़ियारत करने वालों के लिए लाभदायक और उस से माँगने वाले के लिए शिफ़ा है, यहाँ तक कि लोगों के बीच करामात की झूटी कहानियाँ सच्चाई में बदल जाती हैं फिर अनेक प्रकार के शिर्क (अनेकेश्वरवाद) अर्थात तवाफ़ (क़ब्रों के इर्द गिर्द चक्कर लगाना) और अल्लाह के अतिरिक्त से प्राथना की शकल में ज़ाहिर होती हैं जैसा की यह सब चीजें गुज़श्तः (भूतकाल) क़ब्रों के समीप होती हैं चाहे क़ब्र की निस्बत (संबन्ध) क़ब्र वाले की ओर सच्ची हो अथवा झूटी।

इस वकत मुझे शैख बर्कात की क़ब्र का क़िस्सः याद आरहा है जिसे कुछ लोगों ने बयान किया और यह किस्सः दो जवान आदिल और सईद के बीच घटा दोनों विश्व विध्यालय से डिगरी लेने के पशचात ऐसे ग्राम में शिक्षा देने लगे जिस में क़ब्रों की आदर करना एंव उन से मिन्नतें माँग कर धोका खाना आम सी बात थी आदिल बात कर रहा था और वह

दोनों ग्राम के स्कूल की ओर जाने वाली सड़क पर चल रहे थे अचानक एक माँगने वाला आधा पागल व्यक्ति बस पर सवार हुआ जो बुढ़ापे के कारण काँप रहा था और दायें बाएं झूल रहा था और अपना थूक अपनी मैली कुचेली आस्तीन में पोंछ रहा था, वह मुसाफिरों से माँग रहा था और उन्हें डरा धमका रहा था, और उन्हें यह भय दिला रहा था कि यदि वह उन को सराप दे तो उन को लेकर बस रास्ते में पलट जाएगी और वह मुस्तजाबुद्दअवात (जिस की संपूर्ण दूआएं क़बूल की जाती हों) होने का दावा कर रहा था।

शायद सईद की पालन पोषण ऐसे खानदान में हुई थी जो करामात अवलिया अबदाल और महान लोगों से अधिकतर मुतअस्सिर (प्रभावित) थे इसी कारण वह घबरा गया एवं परेशान होगया फिर सईद ने आदिल से कहा कि इसे शीघ्र कुछ दिरहम दे दे इस बात से डरते हुए कि वास्तव में बस पलट न जाए क्योंकि माँगने वाला व्यक्ति अब्दुल करीम अबु शत्तः की गिन्ती ऐसे पवित्र फक़ीरों में होती है जो

मुस्तजाबुद्द'अवात हैं आदिल ने यह सुन कर आश्चर्य किया और कहने लगा निः संदेह अहले सुन्नत वल जमाअत करामात स्वीकारते हैं परन्तु यह ऐसे परहेज़गार एंव नेक व्यक्तियों के लिए है जो लोगों की निगाहों से छुप कर अमल करते हैं न कि इन जैसे फक़ीर लोग जो दीन को खोखला कर रहे हैं। इतना सुनना था कि सईद चीख पड़ा ऐसा मत कहो क्योंकि वह बातें जो आदत के खिलाफ़ उस के हाथों पर ज़ाहिर हुई हैं उसे हर एक छोटा बड़ा नक़ल करता है, तुम देखना थोड़ी देर बाद यह बस से उतर जाएगा और हम बस में होंगे परन्तु यह पैदल चल कर हम से पहले पहुँच जाएगा और हमारा प्रतिक्षा करेगा हाँ यह करामत है क्या तुम करामत को नहीं मानते?।

आदिल : मैं करामत का बिल्कुल इन्कार नहीं करता क्योंकि अल्लाह तआला इस बात की शक्ति रखता है कि वह अपने बंदों (दासों) में से जिस की चाहे आदर करे परन्तु करामत हमारा खाना पीना होजाए और हमें उन जैसे जीवित और मृत्य को अल्लाह

तआला के साथ शिर्क़ के दरवाजे में शामिल कर दे, पैदा करने में, हूक्म देने में और दुनिया में तसर्रुफ (प्रयोग) करने में यहाँ तक कि हम उन से डरें। और उनके करोध से बचें तो ऐसा नही हो सकता।

सईद : तो इसका अर्थ यह है कि आप इस बात को सच नहीं मानते कि (शैख़ अहमद अबू सरूद) अरफात से इस्तम्बूल आए और अपने घर वालों के साथ भुनी हुई भेड़ खा कर रातों रात अरफात लौट गए।

आदिल : मैं आप का मज़ाक़ नहीं उड़ा रहा हूँ लेकिल अवाम की बातें उनके खुराफात को ऐसे कलाम का दर्जः दे दिया जाए जो नाज़िल किया हुआ मुहकम हो, नक़द की सलाहियत न रखता हो तो ऐसा नहीं हो सक्ता।

सईद : लेकिन ये करामतें केवल अवाम से मनकूल नहीं है बल्कि हमारे मुअज़्ज (आदर्णिय) मशायख (बुजुर्ग) उन में से अधिकतर करामतें क़ब्र और अस्थान के विषय में बयान करते हैं।

आदिल : ठीक है सईद साहब आप का क्या विचार है अगर मैं परेक्टिकली तौर पर दलील से स्पष्ट कर दुँ कि यह सब क़ब्रें झूटी एवं बकवास हैं और उन में से अधिकतर मजारों की कोई हक़ीक़त नहीं है और न तो क़ब्र की कोई हक़ीकत है और न साहिबे क़ब्र की और न ही वली की कोई हक़ीक़त है, यह तो केवल फैलाई हुई अफवाह और झूटी खबरें हैं जो लोगों में इस प्रकार फैल गई हैं कि लोगों नें उसे मान लिया है, इतना सुनना था कि सईद परेशान होगया और बार बार यह शब्द दुहराने लगा अल्लाह की पनाह, अल्लाह की पनाह, फिर थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे और बस चलती रही यहाँतक कि उन को उस चौराहे पर पहुँचादिया जो उनके गाँव से मिला हुआ था, तो अचानक आदिल सईद की ओर मुतवज्जः हो कर कहा हे सईद! क्या इस चौराहे पर कोई क़ब्र अथवा स्थान या किसी वली का मज़ार है?
सईद : नहीं और क्या यह बात अक़ल (बुद्धि) में आने वाली है कि कोई वली रास्ते के बीच अथवा चौराहे पर दफन किया जाए?

आदिल : तो तुम्हारा क्या ख्याल है? यदि गाँव में हम यह अफवाह फैलादें कि इस चौराहे पर किसी बुज़ुर्ग की पुरानी क़ब्र है जिस की निशानियाँ तक मिट चुकी हैं और उस की करामत एवं उस के पास दुआ की क़बुलियत के किस्से गढ़ लें फिर देखें कि लोग इसे सच माँनते हैं या नहीं, और मुझे पुर्ण रूप से गुमान है कि लोग इस खबर को सत्यता पर महमूल करेंगे बल्कि होसक्ता है कि आने वाले बरस में लोग वहाँ पर झुटे शैख के नाम की कोई जगह चुन लें अथवा बड़ा सा मज़ार बनालें और अल्लाह को छोड़ कर उस से माँगने लगें, जब्कि वह मिट्टी का ढेर है यदि धरती की तह तक उस की खुदाई की जाए तो उस जगह कुछ भी न मिलेगा।

सईद : अरे भाई छोड़ो यह सब बातें,क्या आप ने लोगों को नादान समझ रख्खा है, इस हद तक मूर्ख? आदिल ठीक है तुम्हरा क्या नूक़्सान है यदि तुम मेरी मदद करो एवं मेरी बात मानो या तुम अंजाम से भयभीत हो ?

सच माँनते हैं या नहीं, और मुझे पुर्ण रूप से गुमान है कि लोग इस खबर को सत्यता पर महमूल करेंगे बल्कि होसक्ता है कि आने वाले बरस में लोग वहाँ पर झुटे शैख के नाम की कोई जगह चुन लें अथवा बड़ा सा मज़ार बनालें और अल्लाह को छोड़ कर उस से माँगने लगें, जब्कि वह मिट्टी का ढेर है यदि धरती की तह तक उस की खुदाई की जाये तो उस जगह कुछ भी न मिलेगा।

सईदः अरे भाई छोड़ो यह सब बातें,क्या आप ने लोगों को नादान समझ रखा है, इस हद तक मूर्ख ?

आदिल ठीक है तुम्हरा क्या नूक़्सान है यदि तुम मेरी मदद करो एंव मेरी बात मानो या तुम अंजाम से भयभीत हो ?

सईदः मैं भयभीत नही हुँ परन्तु मैं इस से अप्रसन्न हूँ।

आदिलः अच्छी बात है, यदि आप आधा मुवाफिक हो जायें तो इस विषय में आप का क्या विचार है? और हम झूटे शैख का नाम बर्कात रखदें?

सईदः ठीक है जैसी आप की इच्छा।

फिर आदिल एंव सईद सरल अंदाज़ में इस बात को अपने शिक्षा देने वाले मित्रों और हज्जामों की दुकानों के पास फैलाने पर सहमत होगये क्योंकि नाई की दुकानें एलान के महत्व वसाइल में से है, फिर जब वह दोनों बस से उतरे तो सलीम नाई की दुकान की ओर मुतवज्जह हुये और नाई की दुकान में दाखिल होकर उस से वलियों के विषय में बात चीत करने लगे और कहा कि नेक वलियों में से एक वली एक ज़माने से यहाँ पर दफन हैं,अल्लाह के समीप उनका बड़ा भारी मक़ाम है और उन से मदद चाहने वाले लोग कम हैं, नाई ने उस क़ब्र की जगह के विषय में पूछा तो दोनों ने कहा कि वह इस चौराहे के निकट है जो गाँव में दाखिल होने की जगह में पड़ता है तो नाई बोला कि संपूण प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिस ने हमारी बस्ती को वली के कारण आदर दी है, मेरी बहुत दिनों से यह चाहत थी, क्या यह बात अक़ल मे आने वाली है की पड़ोस की बस्तियाँ अल जदीदः एंव उम्मुल कौसः उनके पास दसियों नेक

लोग हों और हमारे पास एक भी न हों और न ही उनका कोई स्थान हो ?

आदिल ने कहाः हाजी सलीम साहब शैख बर्कात अधिक नेक लोगों में से थे और उनका मक़ाम ऊँचे दरवाज़े के निकट है,

नाई चीख पड़ा आप को शैख बर्कात के विषय में (अल्लाह तआला उन की खूबियों एंव गुणों को बा बर्कत बनाये) ज्ञान है फिर भी आप चुप हैं, उस के पशचात खबर पूरे गाँव में इस प्रकार फैल गई जैसे सूखी हुई घास में आग फैल जाती है, और इस विषय में अधिक चर्चा होने के कारण लोगों ने इसे सपने में देखना शुरू कर दिया और लोग अपनी मज्लिसों (सभा) में उस की अधिकतर लम्बाई,उस की मोटी पगड़ी और उस की बहुत ज़्यादह करामतें बयान करने लगे, मिसाल के तौर पर किस प्रकार अज़ान के वक़्त अज़ान देने की जगह उनके निकट स्वयं चली जाया करती थी इत्यादि, और स्कूल में पूरे अध्यापकों के बीच उसे स्वीकारने अथवा अस्वीकारने के बीच बात चीत चल पड़ी, जब

मुआमलः हद से अधिक बढ़ गया तो अध्यापक सईद बर्दाश्त करने की सकत न रख सके और ज़ोर से बोले अय अक़्लमंदो (बुद्धिमानों) इस खुराफात को छोड़ दो, अय लोगो सुनोः तो सब लोग हैरान होकर बोले खुराफात? तो आप का ख्याल है कि शैख बर्कात मौजूद नही हैं?

सईदः जी हाँ मौजूद नही हैं और न ही उन की क़ब्र की कोई हक़ीकत (सत्यता) है यह तो केवल अफवाह है और चौराहा जो मिट्टी के ढेर पर बना है वहाँ न कोई वली है न कोई शैख,और न ही कोई स्थान है, यह सुन कर अध्यापक जन बिफर गये, बोले तुम क्या बक रहे हो तुम्हारी जुर्रत कैसे हुयी कि तुम शैख बर्कात के विषय में बात करो शैख बर्कात के हाथों गाँव का पच्छिमी सोता जारी हुआ और उनका मक़ाम अधिक बड़ा है, सईद लोगों के चीखने चिल्लाने से परेशान होगया परन्तु उस ने कहा अय लोगो! अपने दिमाग़ से काम लो तुम बुद्धिमान एंव छात्र हो ऐसा नही होना चाहिए कि जब भी तुम से कोई व्यक्ति किसी क़ब्र अथवा मज़ार के बारे में

बताए या नींद में शैतान तुम्हारी बुद्धि से खिलवाड़ करे तो उसे सत्य मान लो।

उसी वक़्त स्कूल के नाज़िम (व्यवस्थापक) साहब बहसोमबाहसः में शरीक हो गये उन्हों ने कहाः परन्तु शैख की सिफात मौजूद और क़ाबिले भरोसः हैं, क्या आप ने कल का समाचार पत्र नहीं पढ़ा? तो सईद आश्चर्य में पड़ गया और उन से पूछा कि अखबार ने क्या लिखा है?

नाज़िम साहब ने कहाः अखबार ने सुरखी लगाई हैः "शैख बरकात के स्थान का जुहूर (प्रकट)" अखबार लिखता है कि शैख बरकात का जन्म " अल्लाह आप की खूबियों (गुणों) को बा बरकत बनाए " ११०० हिजरी में हुआ आप सय्यदना खालिद पुत्र वलीद ﷺ के खानदान का खुलासः हैं आप ने फलाने फलाने बड़े ज्ञानियों से शिक्षा लिया है और आप ने तुर्की फौजों के संग शरीक हो कर सलीबियों से कुछ जंगें (युद्ध) लड़ी हैं, जब सलीबियों के संग घमासान की युद्ध होने लगी तो युद्ध को अपने हाथ में ले लिया, अपने मुंह से उन पर फूँक मारी तो

जांच परख लें, वरना हम में से हर कोई ऐसा दावा करेगा जो उसके लिए ज़ाहिर होगा, कब्रों के बारे में वलियों के बारे में करामतों के बारे में फिर सईद ने जोर दार आवाज़ में कहा निःसंदेह शैख बरकात की जगह विवादों में है और यह झूठी अफवाह है जिसे मैंने और अध्यापक आदिल ने गढ़ा था ताकि उसके ज़रिये फसादी एवं नादान लोग और सच्चाई की छानबीन न करने वालों को साबित क़दम करें। यह अध्यापक आदिल आप के सामने हैं यदि चाहो तो इन से पूछ लो।

लोगों ने आदिल की ओर देखा और कहने लगे अध्यापक आदिल भी तुम्हारी तरह झगड़ालू हैं कोई भी बात हो उस की दलील माँगते हैं औलिया एंव बुजुर्गों से कीना कपट रखते हैं और जब आप और आदिल यह बात कह रहे हैं तो हमें विश्वास है कि शैख बरकात "अल्लाह इन की खूबियों (गुणों) को बा बरकत बनाए " बाप दादों के ज़माने में मौजूद थे संसार कभी भी वलियों बुजुर्गों और उन के स्थान से

खाली नहीं रहती, हम गुमराही से अल्लाह की पनाह माँगते हैं।

इतना सुनना था कि आदिल और सईद चुप हो गए, घंटी बजी तो अध्यापक जन पाठ पढ़ाने चले गए और अध्यापक सईद अपने आप से बात करने लगे शैख बरकात... उन की करामतें बुद्धि में आने वाली हैं या नहीं हैं..?क्या ऐसा संभव है कि यह सब गलती पर हों और समाचार पत्र झूटा हो ?।

आश्चर्य है कल चौराहे पर बड़े बड़े लोग इकट्ठा हुए और उन्हों ने शैख बरकात के नाम जश्न एंव जल्से का व्यवस्था किया, परन्तु शैख़ बरकात इसे तो अध्यापक आदिल ने गढ़ा था, क्या यह संभव है कि अक़्लें (बुद्धियाँ) मारी गई हों, यह तो असंभव है, यह तो असंभव है,।

और सईद के दिमाग़ में नया ख्याल जनम लेने लगा हो सक्ता है कि शैख बरकात सत्य में मौजूद हों, हो सक्ता है कि शैख आदिल पहले से जानते रहे हों परन्तु वे स्वयं वहम में पड़ गए कि उन्हों ने शैख बरकात के विषय में गढ़ा था।

अध्यापक सईद ने सोंच विचार किया, शैतान से अल्लाह की पनाह माँगी ताकि यह विचार उस के दिमाग़ से निकल जाए परन्तु वह कामियाब न हो सके, दूसरे दिन स्कूल में उसी ढ़ंग की बात चीत होती रही और यह पढ़ाई के अन्तिम दिन थे छुट्टी होने पर जब अध्यापक जन अपने अपने घर चले गए तो मुनाक़शः (आपस का झगड़ा फसाद) संपन्न हो गया।

आने वाले बरस में अध्यापक आदिल और अध्यापक सईद बस पर सवार हो कर गाँव के स्कूल में आरहे थे अध्यापक आदिल पुरानी चीजें भूल चुके थे जब्कि स्वयं उन्हों ने ही यह सब गढ़ा था अथवा उसे फैलाया था परन्तु वे अध्यापक सईद की ओर मुतवज्जः हुए तो वे जल्दी जल्दी अपनी जुबान से ज़िक्र एंव दुआएं कर रहे थे जिस वक़्त वह लोग गाँव के चौराहे के निकट पहुँचने वाले थे।

और अधिक हैरान उस वक़्त हुए जब वे चौराहे पर पहुँचे और शैख बर्कात के स्थान की एक खूबसुरत आलीशान बिल्डिंग चौराहे पर नज़र आरही थी और

उस के बाजु में एक आलीशान मस्जिद जो तुरकी तरीक़े पर बनाई गई थी,अध्यापक आदिल मुस्कुरा दिए वह जानते थे कि लोग कितने भोले भाले और नादान हैं और शैतान किस प्रकार उनके बीच शिर्क फैलाने में सफल हो गया फिर वह अध्यापक सईद की ओर मुतवज्जेह हुए ताकि वह भी उन की मुस्कान में शामिल हों पर अचानक अध्यापक सईद दुआऐं कर रहे थे बल्कि सईद ने ज़ोरदार आवाज़ में डराइवर को आवाज़ दी कि वह थोड़ी देर बस रोके रखे फिर उन्होंने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाये और शैख बरकात की रूह़ पर फातिहः पढ़ने लगे (मुजल्लः बयान थोड़ी सी रद्दोबदल के साथ)।

क़ब्रों पर लोग क्या करते हैं

क़ब्रों से अक़ीदत रखने वाले अधिकतर लोग अपने संग बकरियाँ, गायें, शक्कर, क़हवः चाय और अनेक प्रकार के भोजन अथवा धन दौलत के संग क़ब्रों की ओर जाते हैं ताकि उन चीज़ों को चढ़ा कर क़ब्र वाले की नज़्दीकी हासिल करें और यह लोग वली या शैख की नज्दीकी ढूँढने के लिये पशु ज़िबह करते हैं

क़ब्र का तवाफ करते हैं एवं उसकी मिट्टी में लोटते हैं और उन से ज़रूरतें पूरी करने एवं कठिनाइयों के दूर करने की इच्छा करते हैं।

बल्कि आप देखेंगे कि फितनें में मुबतला लोग मृतकों और क़ब्रों में दफन किए हुए लोगों की क़समें खाते हैं,जब कोई अल्लाह की क़सम खाता है तो यह लोग उस पर प्रसन्न नहीं होते बल्कि अगर अल्लाह की क़सम खाए और कहे महान अल्लाह की क़सम अथवा कहे अल्लाह की क़सम खाता हूँ तो यह लोग न प्रसन्न हूँगे और न ही उसे स्वीकारेंगे परन्तु जब वह उन के वली के नाम की क़सम खाए तो उसे स्वीकार कर लेंगे और उसे सत्य समझेंगे।

नौबत यहाँ तक पहुँच गई कि इन जैसे कुछ लोगों ने क़ब्रों के लिए हज को शरअी (धार्मिक) हैसियत दे दी और उस के लिए उन्हों ने खास तरीकः गढ़ा यहाँ तक कि उन में से कुछ ग़ाली(अपनी सीमा पार कर जाने वाले) व्यक्तियों ने इस विषय में पुस्तक लिख डाला है और उस का नाम रखा " मज़ारों के हज का नियम" क़ब्रों को अल्लाह के घर से मुशाबहत

देकर। बल्कि इन लोगों ने बिद्अत और शिर्क में मुबालगः करते हुए क़ब्रों की ज़ियारत के लिये आदाब मुक़र्रर किया मिसाल (उदहारण) के तौर पर ज़ियारत करने वालों के लिए मुनासिब है कि क़ब्र की ज़ियारत के वक़्त उस की सम्मान में अपने जूते निकाल दें और गुंबद में प्रवेश उस के दर्बान की इजाज़त से पूरा होगा, क़ब्र का नोकर क़ब्र के चारों ओर ज़ियारत करने वालों के तवाफ की ज़िम्मेदारी लेता है ठीक उसी प्रकार जिस तरह मुसलमान क'अबः के चारों ओर तवाफ की ज़िम्मेदारी लेते हैं, ज़ियारत करने वाले विभिन्न प्रकार से क़ब्रों एवं गुंबदों से तबर्रुक प्राप्त करते हैं, कुछ लोग क़ब्रों की मिट्टी उठा लेते हैं और कुछ क़ब्र के इर्द गिर्द बनी दीवार पर हाथ रखते हैं,उसे छुते हैं फिर अपने बदन और कपड़ों पर हाथ फेरते हैं।

यदि आप मज़ारों पर जाएंगें तो अल्लाह के अतिरिक्त की आश्चर्यजनक प्रकार से इबादत देखेंगे, उदहारण के तौर पर क़ब्र वाले से दुआ करना,उस से मदद माँगना, उस से दुआ करने में गिड़गिड़ाना, बल्कि

आप देखेंगे कि स्त्री अपना शिशु उठाए हुए उसे हिलाकर क़ब्र में दफन किये हुए शैख से मुखातिब है,अपने शिशु के विषय में शैख से बरकत की आशा किये हुये है, अतः आप देखेंगे कि कुछ व्यक्ति गण क़ब्र को क़िबलः बनाकर सजदः कर रहे हैं और उन गुंबदो के निकट मिन्तें पेश करते हैं।

कुछ लोग क़ब्रों के निकट उन से ज़रूरत पुरी करने एवं बीमारी से ठीक होने की उम्मीद लगाकर एक लम्बे समय तक ठहरते हैं, और इसी कारण कुछ गुंबदों के साथ ज़ियारत करने वालों के लिये इन्तिज़ार के कमरे बने होते हैं।

और ज़ियारत करने वालों पर भय, इत्मिनान और असर इस हद तक ज़ाहिर होता है जो रोने की हद तक पहुँच जाता है तो यह क़ब्रों में दफन किये हुये लोग अल्लाह के अतिरिक्त इलाह बने बैठे हैं जब्कि अल्लाह तआला को पसंद नहीं है कि उस के साथ किसी नबी की इबादत की जाए और न फरिश्ते की तो वह कैसे राज़ी (प्रसन्न) होगा कि उस के संग इन के अतिरिक्त की इबादत की जाए।

दिलों की यकसानियत (समता)

यह क़ब्रों में दफन किए हुए लोग अपनी मदद और लाभ पहुँचाने की भी शक्ति नहीं रखते चे जाए कि वह अपने अतिरिक्त दूसरों को लाभ पहुँचां ,और जो लोग उनकी आदर के क़ायल हैं,उन से डरते हैं उन की हालत वफद (प्रतिनिधि मंडल) सक़ीफ जैसी है,जब वह लोग इस्लाम ले आए तो अपने बुतों (मूर्तियों) से डर रहे थे जब्कि वह लाभ एवं हानि की शक्ति नहीं रखते हैं।

मूसा पुत्र उक़्बः ने कहा कि जब इस्लाम लोगों के दिलों में रच बस गया तो तमाम क़बीलों ने अपने प्रतिनिधि मंडलों को भेजना शुरू किया ताकि वह अपने इस्लाम का एलान नबी करीम ﷺ के समीप कर सकें, क़बीलः सक़ीफ के दस से अधिक लोग नबी करीम ﷺ के पास पहुँचे तो आप ﷺ ने उन्हें मस्जिद में ठहराया ताकि वह लोग क़ुरआने करीम सुनें, जब उन लोगों ने अपने इस्लाम के इज़्हार का इरादः किया तो एक दूसरे को देखने लगे क्योंकि उन लोगों ने अपने उस बुत को याद किया जिस की वह

लोग पूजा करते थे और उस का नाम उन्हों ने रब्बः रख्खा था, उन लोगों ने ब्याज़, बलात्कार, शराब के विषय में पूछा कि उसे क्या करें? आप ﷺ ने फरमाया : कि उसे गिरादो,उन लोगों ने कहा : यह तो अधिक कठिन है, यदि रब्बः को इस बात का ज्ञान हो गया कि आप उसे गिराना चाहते हैं तो वह उस के घर वालों को एवं उस के पड़ोसियों को हलाक कर देगी,यह सुन कर उमर बोल पड़े तुम्हारी बरबादी हो,कितनी बड़ी जिहालत है रब्बः बुत तो पत्थर है,उन लोगों ने कहा कि ऐ खत्ताब के पुत्र हम तुम्हारे पास नहीं आए हैं फिर उन लोगों ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! उस के गिराने की ज़िम्मेदारी आप ले लें,हम लोग तो उसे कदापी नहीं गिराएंगे , आप ﷺ ने फरमाया कि मैं तुम्हारी ओर उन लोगों को भेजूँगा जो उसे गिरादेंगे फिर उन लोगों ने अपनी क़ौम में वापस जाने की इजाज़त मांगी, और उन लोगों ने अपनी क़ौम को इस्लाम की ओर बुलाया तो उन लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया कुछ दिन तक वह लोग ठहरे रहे उन के दिलों में बुत का डर

समाया हुआ था कि खालिद पत्र वलीद मुग़ीरा पुत्र शो'अबः और कुछ दूसरे सहाबः के संग उन के पास पहुँचे और बुत का रुख किया उस वक़्त बहुत सारे नौजवान,महिलायें और बच्चे इकठ्ठा होगए, उन्हें यक़ीन था कि मूर्ति नहीं गिरेगी,और शीघ्र ही वह उन लोगों को हलाक करदेगी जो उसे हाथ लगाएंगे , मुगीरः पुत्र शो'अबः ने कहा : अल्लाह की क़सम! मैं क़बीलः सक़ीफ के लोगों को हंसाऊँगा, उन्होंने उस मूर्ति को कुल्हाड़ी मारी फिर गिर कर एड़ियाँ रगड़ने लगे लोग चीख पड़े, उन लोगों को यक़ीन होगया कि मूर्ति ने उन्हें क़त्ल कर दिया है, फिर उन लोगों ने खालिद पुत्र वलीद और उन के साथियों से कहा कि आप में से कोई उस के निकट जाए, जब मुगीरः ने मूर्तियों की हिमायत में उन की प्रसन्नता देखी तो खड़े होगए और कहा अल्लाह की क़सम ऐ सक़ीफ के लोगो! यह मरदूद, कमीनः पत्थर एंव मिट्टी का ढेला है, अल्लाह की शाँति की ओर मुख कर लो और उस की इबादत करो फिर उस मूर्ति पर मार लगाई और उसे टुक्ड़े टुक्ड़े कर दिया फिर सहाबः

उस पर चढ़ गए और एक एक पत्थर को गिरा दिया।

आज यह मज़ारें और क़ब्रें यदि कोई एकेश्वरवादी गिराए तो यह सब भी अपने लिए बदलः लेने की शक्ति नहीं रखते।

शिर्क कैसे फैला

यदि आप ध्यान दें कि धर्ती पर किस प्रकार शिर्क फैला तो आप को पता चलेगा कि नेक लोगों के विषय में गुलू (हद से गुज़र जाना) इस का कारण है नूह عليه السلام की क़ौम एकेश्वरवादी थी वह केवल अल्लाह तआला की इबादत करते थे उस के संग किसी को साझी न टहराते थे, धर्ती पर शिर्क बिल्कुल न था, उन में पाँच व्यक्ति नेक थे जिन के नाम वद्,सुवाअ, यगूस, यऊक़ और नस्र थे यह लोग इबादत गुज़ार थे लोगों को धर्म सिखाते थे, जब वे मर गए तो क़ौम दुखी हो गई और उन्हों ने कहा कि वह लोग जो हम से इबादत की फज़ीलत (श्रेष्ठता) बताते थे और हमें अल्लाह तआला की आज्ञा पालन का हुक्म देते थे हम से रुखसत हो

गए, तो शैतान ने उन के दिलों में यह वस्वसः (बुरे विचार) डाला कि यदि तुम लोग उन की चित्रें मुजस्समों की शक्ल में बनालो और इसे अपनी मस्जिदों के पास गाड़ दो, जब तुम लोग इन्हें देखोगे तो यह मुजस्समें तुम्हारे भीतर इबादत की याद ताज़ः कर देंगे और तूम लोग इबादत के लिए चुस्त हो जाओगे, लोगों ने शैतान की पैरवी की और उन्हों ने एक चिन्ह के तौर पर बुत बना डाला ताकि उन्हें देख कर इबादत और नेकी की याद ताज़ः हो, ज़मानः बीत गया इस शताब्दी के लोग रुखसत होगए उन के पश्चात उन की औलाद का दौर आया और वे इस हाल में बड़े हुए कि इन के बाप दादा उन मुजस्समों और बुतों की ता'रीफ और उस की आदर करते थे क्योंकि यह मुजस्समें इन्हें नेक लोगों की याद दिलाते हैं, फिर उन के बाद दूसरी नसल ने जन्म लिया तो उन से इब्लीस ने कहा कि तुम से पहले जो लोग थे वे इन मुजस्समों की इबादत करते थे, जब सूखा पड़ता या उनको कोई ज़रूरत (आवश्यकता) पड़ती थी तो वह लोग इन मुजस्समों

की पनाह ढूँडते थे, तुम इन की पूजा करो, तो उन लोगों ने मुजस्समों की पूजा शुरू (प्रारम्भ) कर दी यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उन की ओर नूह عليه السلام को भेजा आप ने उन लोगों को साढ़े नौ सो साल तक एकेशवरवाद की शिक्षा दी परन्तु बहुत थोड़े लोग आप पर ईमान लाए तो अल्लाह तआला को उन पर क्रोध आगया और उन्हें तूफान के ज़रिए हलाक कर दिया।

यह चीज़ नूह عليه السلام की क़ौम में पैदा हुई तो इब्राहीम عليه السلام की क़ौम में शिर्क कैसे फैला? वह लोग सितारों एंव सय्यारों की पूजा करते थे, उन का गूमान था कि संसार में इन सितारों का हुक्म चलता है,यह परेशानियाँ भगाते हैं दुआएं स्वीकारते हैं, जरूरत पूरी करते हैं, उन का अक़ीदः (विश्वास) था कि यह सितारे अल्लाह की और उस की सृष्टी के बीच वास्तः (माध्यम) हैं और इस संसार की व्यवस्था इन के सुपुर्द है फिर उन लोगों ने सितारों और फरिश्तों की अपने गढ़े हुए शक्ल के मुताबिक़ (अनुसार) बुत वना डाला, इब्राहीम عليه السلام के पिता भी बुत बनाते थे

फिर अपने बच्चों को उसे बेचने के लिये देते थे और इब्राहीम ﷺ को भी मूर्तियों के बेचने पर मजबूर करते थे तो इब्राहीम ﷺ आवाज़ लगाते थे कि कौन व्यक्ति ऐसी चीज़ मोल लेगा जो न हानि पहुँचासक्ती है और न लाभ? इब्राहीम ﷺ के भाई बुतों को बेच कर वापस लौटते और इब्राहीम ﷺ बुतों को लेकर, फिर इब्राहीम ﷺ ने अपने पिता और अपनी क़ौम को इन बुतों को छोड़ देने के लिए कहा परन्तु क़ौम ने आप की बात को स्वीकार न किया, फिर इब्राहीम ﷺ ने उन की मूर्तियों के टुक्ड़े टुक्ड़े कर दिए तो उन लोगों ने इब्राहीम ﷺ को आग में जला देने का निर्णय किया परन्तु अल्लाह तआला ने इब्राहीम ﷺ को आग से बचा लिया।

शिर्क के वारिस (उत्तर धिकारी) लोग

यह नूह और इब्राहीम ﷺ के क़ौम की हालत थी,आज हम क़ब्रों पर विश्वास रखने वालों से पूछते

हैं कि क़ब्र और मज़ार से किस प्रकार उनका संबंध शुरू होकर उन्हें शिर्क तक पहुँचाता है?
संबंध नेक और नेक लोगों की बुज़ुर्गी बयान करने से आरंभ होता है, फिर उस जगह की ज़ियारत को अच्छा सम्झा जाता है और आखिरत (प्रलोक) की याद ताज़ः करने के लिये उत्तम व्यक्ति की याद और उस पर भरोसः करने के लिए फिर उनके पास अल्लाह तआला से माँगना क़बूलियत की आशा करते हए फिर क़ब्र को छूना,उस को चूमना,और उस से बर्कत हासिल करना,फिर उसे माध्यम और वास्तः बना कर अल्लाह तआला से सिफारिश माँगना इत्यादि।
उन का गूमान है कि क़ब्र में दफन किया हुवा व्यक्ति पवित्र और प्रतिष्ठित है, अल्लाह का क़रीबी और बड़ी हस्ती है,अल्लाह के समीप उस का एक मक़ाम है जब्कि ज़रूरत वाला व्यक्ति गुनाहों में लिथड़ा हुआ स्वंय वह अल्ला तआला से नहीं माँग सकता तो अवश्य है कि क़ब्रों में दफन व्यक्ति को अपने और अल्लाह के बीच माध्यम बनाए।

फिर शैतान ज़ियारत करने वालों के दिलों में यह बात डालता है,उन से कहता है कि जब तक क़ब्रों में मदफ़ून सम्मानित प्राण मौजूद हैं अल्लाह तआला ने उन को अधिकार एंव शक्ति दे रखी है... तो ज्यारत करने वाला अपने हृदय में उन मृतकों के सम्मान को महसुस करता है,उन से डरता है,और उम्मीदें लगाता है फिर उस के बाद उन से डरता है और आशा करता है फिर उस के पश्चात उन से दुआएं माँगता है और उनके ज़रिए मदद माँगता है फिर उस पर मस्जिद, गुंबद और मज़ार बनाता है, उस में दिया जलाता है, उस पर प्रदे लटकाता है, उस की इबादत करता है माथा टेक कर और तवाफ करके, उसे चूम कर, और छु कर, उस का इरादः करके और उसके निकट पशु ज़िबह करके,फिर यह लोग उसके विषय में करामत और क़िस्से कहानियों के ताने बुनते हैं कि फलानी स्त्री ने उस से माँगा तो उस की शादी होगई और दूसरी को संतान मिली इत्यादि आदि,और कुछ लोग तो इस बात की रट लगाते हैं कि जिसने स्थानों की ज़ियारत की तो उस की ज़रूरत पूरी हुई

और अपनी मुराद पा लिया,बल्कि कुछ व्यपारियों से पूछा गया कि क्यों आप खरीदने वालों के सामने मज़ार की क़सम खाते हैं और अल्लाह की क़सम नहीं खाते तो उन्होंने कहा कि यह लोग यहाँ पर अल्लाह की क़सम खाने पर प्रसन्न नहीं होते हैं और हमारे फलाने बुज़ुर्ग की क़सम पर प्रसन्न हो जाते हैं।

ध्यान दीजिये किस प्रकार उनके यहाँ क़ब्र का सम्मान अल्लाह तआला के सम्मान से अधिकतर है,और जब बात ऐसी है तो क्या अन्तर है मिट्टी के ढेर एंव पत्थर और लक्ड़ियों के भीतर अथवा मज़ार और स्थान तथा तस्वीरों और मूर्तियों के बीच या सृष्टी में से अन्य चीज़ों के भीतर?

कोई अन्तर नहीं है; मूल्य चीज़ भेद का पाया जाना है, क़ब्र वाले की ओर ध्यान करना,इस बात का विश्वास रखना कि वह लाभ और हानि का अधिकार रखता है, बे नियाज़ कर देता है और सिफारिश करता है।

इन लोगों की हालत इस के निकटतर है जिसे अबू रजा'अ अतारदी ﷺ ने बयान किया है, उन्हों ने कहा कि हम जाहिलियत में मूर्तियों की, पत्थरों की , एंव पेड़ों की पूजा करते थे हम में से एक व्यक्ति पत्थर की पूजा करता था परन्तु जब कोई उस से सुन्दर पत्थर मिल जाता तो वह अपने पत्थर को फेंक कर दूसरे पत्थर की पूजा शुरू कर देता,और जब हम पत्थर न पाते तो मिट्टी का ढेर इकट्ठा कर लेते फिर हम बकरी लाकर उस का दूध उस पर दूहते और हम उस का तवाफ करते, एक बार हम यात्रा पर निकले हमारे संग हमारा वह ईश्वर भी था जिस की हम पूजा करते थे वह एक पत्थर था जिसे हम थैले में रख लिया करते थे, जब हम खाना पकाने के लिये आग जलाते और हंडी रखने के लिये तीसरा पत्थर न पाते तो अपने ईश्वर को रख दिया करते थे और हम कहते कि यह उस के लिए अधिकतर गरमी का कारण होगा जब्कि वह आग के निकटतर होगा,एक बार हम ने एक जगह पर पड़ाव किया और हम ने थैले से पत्थर निकाला और जब

हम ने कूच का निर्णय लिया तो मेरी क़ौम का एक बूढ़ा चिल्लाया खबरदार! तुम्हारा ईश्वर खो गया है उसे ढूँडो तो हम हर कठिनाई और आसानी से क़ाबू में आने वाली ऊँटनी पर सवार हो कर अपने इश्वर को ढूँडने लगे, हम ढूँड रहे थे कि मैं ने अपनी क़ौम के एक दूसरे व्यक्ति की आवाज सुनी वह कह रहा था कि मुझे तुम्हारा ईश्वर मिल गया है अथवा उस जैसा ईश्वर,यह सुन कर मैं अपने कूच करने की जगह वापिस आया तो मैं ने देखा कि मेरी क़ौम के लोग एक मूर्ति के समीप माथा टेके हुये हैं हम वहाँ आए और हम ने उस जगह एक ऊँट भेंट चढ़ाया।

इस्लाम से पहले की नादानी पर आश्चर्य कीजिए और उस से अधिक आज इन की इस नादानी पर आश्चर्य कीजिए, अल्लाह की क़सम! सेंचिए कि क्या अन्तर है उस व्यक्ति के बीच जो पत्थर की पूजा करता है और जो क़ब्र की पूजा करता है, उस व्यक्ति के बीच जो अपनी जरूरतें मूर्तियों से वाबिस्तः करता है और उस व्यक्ति के बीच जो

अपनी जरूरतें सड़ी गली हड्डियों से वाबिस्तः करता है, उस मनुष्य के बीच जो अवलिया के क़ब्रों की पूजा करता है और वह मनुष्य जो मिट्टी एंव जल की पूजा करता है? जी हाँ सब के सब यही कहेंगे कि हम उन की पूजा केवल इस लिए करते हैं कि यह (बुज़ुर्ग) अल्लाह के नज़्दीकी के मक़ाम तक हमारी रसाई करादें और यही वह चीज़ है जिस ने क़ब्रों से संबंध रखने वालों को स्पष्ट रूप से बुत परस्ती (मूर्तिपूजा) में डाल दिया है जिस में शको शुब्हे की कोई गुंजाइश नहीं।

चार ए'तिराज़ (आपत्तियाँ)

पहली आपत्ती : कुछ लोग जो क़ब्रों से संबंध रखते हैं, लोगों को उस की ओर बुलाते हैं कभी कहते हैं कि आप लोगों का व्यवहार हमारे ऊपर अधिक दुःशील है, हम मृतकों की इबादत नहीं करते हैं परन्तु इन कब्रों में दफन किए हुए लोग अवलिया एवं सदाचारी हैं,अल्लाह तआला के समीप इन का एक मुक़ाम एवं प्रतिष्ठा है यह लोग हमारे लिये अल्लाह तआला से सिफारिश करेंगे,

हम कहेंगे कि यही तो कुरैश के काफिरों का शिर्क है वह अपनी इबादतों में बुतों को शरीक करते थे,अरब के अनेकेश्वरवादी तौहीदे रुबूबिय और यह कि पैदा करने वाला, रोज़ी (जीविका) देने वाला, व्यवस्था करने वाला वह केवल अल्लाह तआला ही की ज़ात है जिस का कोई भागी दार नहीं जैसा कि अल्लाह तआला इर्शाद फर्माता है :

﴿ قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ أَمَّن يَمْلِكُ ٱلسَّمْعَ وَٱلْأَبْصَٰرَ وَمَن يُخْرِجُ ٱلْحَىَّ مِنَ ٱلْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ ٱلْمَيِّتَ مِنَ ٱلْحَىِّ وَمَن يُدَبِّرُ ٱلْأَمْرَ ۚ فَسَيَقُولُونَ ٱللَّهُ ۚ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣١﴾ ﴾

یونس: ३१

" आप कहिए कि वह कौन है जो तुम को आकाश और धरती से रिज़्क़ पहुँचाता है या वह कौन है जो कानों और आँखों पर पूरा हक़ रखता है,और वह कौन है जो जानदार को बेजान से निकालता है और बेजान को जानदार से निकालता है,और वह कौन है जो सभी कामों का संचालन (नज़्म) करता है बेशक

वह यही कहेंगे कि अल्लाह,तो उन से कहिए कि फिर डरते क्यों नहीं"

इस के यद्यपि नबी करीम ﷺ ने उन से जंग (युद्ध) किया उन के खून और उन के धन को हलाल सम्झा क्योंकि उन लोगों ने संपूर्ण इबादतें अल्लाह तआला के लिए खास नहीं किया, कुर्आनी आयतें और नबी करीम ﷺ की हदीसें जो अल्लाह के अतिरिक्त इबादत से डराती हैं वे स्पष्ट रूप से बयान करती हैं कि अल्लाह के संग शिर्क करने का अर्थ यह है कि उपासक अल्लाह की इबादत में उस का कोई भागीदार बनाए चाहे वह मूर्ति हो या पत्थर,नबी हो अथवा वली,या क़ब्र।

जी हाँ शिर्क यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त के लिये ऐसा कार्य किया जाए जो अल्लाह तआला के लिए ख़ास हो चाहे उस पर जाहिलियत वाला नाम पुकारा जाए मिसाल के तौर पर मूर्ति अथवा बुत या दूसरा नाम रख दिया जाए जैसे वली,क़ब्र,मज़ार।

यदि आज हमारे सामने कोई नया फिरक़ः (दल) प्रकट हो और वह दावा करे कि अल्लाह की पत्नी है और बच्चे हैं तो उस पर ईसाई होने का हुक्म लग जाएगा और उनके ऊपर वह आयतें फिट होंगी जो ईसाइयों के विषय में नाज़िल हुई हैं यद्यपि वह लोग अपने आप को ईसाई न कहें क्योंकि उन दोनों का हुक्म एक है तो इसी प्रकार आज क़ब्रों की इबादत करने वालों का है।

दूसरी आपत्ती :

कभी क़ब्रों से संबंध रखने वाले व्यक्ति गण ए'तराज़ करते हैं,वे कहते हैं कि हम क़ब्रों में दफन किए हुए अवलिया और सदाचारी लोगों से उन की सिफारिश हासिल करने के लिए उन की नज़्दीकी हासिल करते हैं, क्योंकि मरने वाले लोग सदाचारी हैं, यह दिन में रोज़ह रखने वाले और रात्रि के अन्तिम भाग में रोने वाले थे अल्लाह तआला के समीप इन की आदर और इनका एक स्थान है, हम इन से इस बात के इच्छुक हैं कि यह लोग अल्लाह तआला के यहाँ हमारी सिफारिश करें।

तो हम उन से कहेंगे कि ऐ लोगो! तुम्हारी बर्बादी हो, अल्लाह तआला की ओर बुलाने वाले की बात स्वीकार करो और उस पर ईमान लाओ, सिफारशी बनाने को अल्लाह तआला ने शिर्क क़रार दिया है, अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ وَيَعۡبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمۡ وَلَا يَنفَعُهُمۡ وَيَقُولُونَ هَٰٓؤُلَآءِ شُفَعَٰٓؤُنَا عِندَ ٱللَّهِۚ قُلۡ أَتُنَبِّـُٔونَ ٱللَّهَ بِمَا لَا يَعۡلَمُ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِي ٱلۡأَرۡضِۚ سُبۡحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشۡرِكُونَ ١٨ ﴾ يونس: ١٨

" और ये लोग अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उनको नुक़्सान पहुँचा सकें और न अनको फायदा पहुँचा सकें, और कहते हैं कि ये अल्लाह के सामने हमारी सिफारिश करने वाले हैं आप कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को ऐसे उमूर की खबर देते हो जिसे वह नहीं जानता आकाशों में और न धरती में, वह पाक और बरतर है उन लोगों के शिर्क से।

अथवा हम उन लोगों से कहेंगे कि हम इस बात में तुम्हारा साथ देते हैं कि संदेशवाहकों और अवलिया को अल्लाह तआला ने शिफारिश का हक़ दिया है और वह लोग अल्लाह तआला के निकटतर हैं परन्तु हमारे प्रभू ने उन से माँगने एवं दुआ करने से रोका है।

जी हाँ संदेशवाहक, अवलिया और शहीद लोगों को अल्लाह तआला के यहाँ सिफारिश का हक़ मिलेगा परन्तु उन को इस बात का हक़ नहीं है कि वह जिसकी चाहें सिफारिश करें और जिस को चाहें छोड़ दें, कदापि ऐसा नहीं होगा बल्कि वह लोग किसी की सिफारिश नहीं करेंगे परन्तु यह कि अल्लाह तआला उन को इजाज़त (आज्ञा) दे और जिस की सिफारिश की जाए उस से प्रसन्न हो।

तीसरी आपत्ती :

कुछ क़ब्रों से लगाव रखने वाले लोग यह ए'तराज़ (आपत्ती) करते हैं कि बहुत सारे मुसलमान पहले और आज क़ब्रों पर बिल्डिंग बनाते हैं, मज़ार और गुंबद बनाकर उस के पास दुआएं करते हैं तो क्या

पूरी उम्मत गुमराही में है और आप लोग हक़ पर हैं?

तो हम उन से कहेंगे कि अधिकतर यह मज़ारें और क़ब्रें झूटी हैं क़ब्र वाले की ओर उन की निसबत करना ठीक नहीं है जैसा कि पिछली कहानी से ज्ञान हुआ, अव्य क़ब्रों पर बिल्डिगें बनाना और उन के पास दुआ करने को ठीक समझना अप्रिय बिदअत् है जैसा कि नबी करीम ﷺ का इर्शाद है :

''لعن الله اليهود والنصاري اتخذوا قبور أنبياءهم مساجد و يحذر ما صنعوا ''(متفق عليه)

"अल्लाह की फटकार हो यहूदो नसारा पर जिन्हों ने संदेशवाहकों की कब्रों को सजदह गाह बना लिया,और उन के काम से आप चौकन्ना कर रहे थे"

चौथी आपत्ती :

यहाँ एक संदेह है जिसे शैतान ने लोगों के दिलों में डाल दिया है वह यह कि नबी करीम ﷺ की क़ब्र मस्जिदे नबवी के भीतर बिला किसी आपत्ती के दाख़िल कर दी गई है यदि यह काम हराम होता तो

नबी करीम ﷺ को उस में दफन न किया जाता, जैसा कि यह लोग नबी करीम ﷺ की क़ब्र पर गुंबद के कारण दलील पकड़ते हैं।

उत्तर : नबी करीम ﷺ को वहाँ दफनाया गया जहाँ आप की मृत्यु हुई और संदेशवाहकों को उसी स्थान में दफनाया जाता है जहाँ पर उन की मृत्यु होती है जैसा कि इस विषय में हदीसें आयी हैं, तो आप ﷺ को आयशा के कमरे में दफन किया गया न कि आप को मस्जिद में दफन किया गया बल्कि आप को कमरे में ही दफन किया गया था, पहले ऐसा ही था, सहाबः ने नबी करीम ﷺ को आयशा के कमरे में दफन किया था ताकि बाद में कोई व्यक्ति नबी ﷺ की क़ब्र को सजदह गाह न बना सके जैसा कि हदीसे आयशा में है :

(قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم في مرضه الـــذي لم يقم منه لعن الله اليهود والنصارى اتخذوا قبور أنبيـــائهم مساجد لولا ذلك أبرز قبره غير أنه خشي أو خشي أن يتخذ مسجدا) (متفق عليه)

" आयशा रज़ियल्लाहो अनहा कहती हैं कि नबी करीम ﷺ ने अपनी मृत्यु वाली बीमारी में फर्माया : " अल्लाह की फटकार हो यहूदो नसारा पर जिन्हों ने संदेशवाहकों की कब्रों को सजदह गाह बना लिया, फर्माती हैं कि यदि इस बात का डर न होता तो आप की क़ब्र ज़ाहिर कर दी जाती परन्तु इस बात का डर है कि इसे सजदह गाह न बना लिया जाए " जी हाँ शुरू में आप को आयशा के घर में दफन किया गया और आयशा का घर पूरबी किनारे से मस्जिदे नबवी में मिला हुआ था, ज़मानः बीता, लोगों की संख्या बढ़ी और सहाबः हर तरफ से मस्जिदे नबवी को कुशादः (चौड़ा) कर रहे थे सिवाय क़ब्र की ओर के, उन्हों ने पश्चिम उत्तर दक्षिण से मस्जिद को कुशादः किया सिवाय पूरबी किनारे के, उस तरफ से मस्जिद को कुशादः नहीं किया गया क्योंकि क़ब्र उस में रूकावट बन रही थी।

८८ हिजरी में नबी करीम ﷺ की मृत्यु के सतहत्तर साल पश्चात और मदीनः के अधिकतर सहाबः के मरने के पश्चात खलीफः वलीद पुत्र अब्दुल मलिक

ने मस्जिदे नबवी कुशादः करने के लिए उसे गिराने और हर ओर से उसे चौड़ा करने का हुक्म दिया जिस में तमाम पत्नियों के कमरे भी उस में शामिल किए गए, उस समय पूरबी ओर से मस्जिदे नबवी को चौड़ा किया गया और आयशा के कमरे को भी मस्जिद में दाखिल किया गया,तो इस प्रकार क़ब्र मस्जिद में होगई।{अलरद्द अलल अखनानी(१८४) मजमूउ अल फतावा(२७/२७२२३) तारीख इबने कसीर(६७४/७४)।

तो यह रहा मस्जिद और क़ब्र का क़िस्सः, किसी के लिए भी जायज़ नहीं है कि सहाबा के पश्चात जो चीज़ पाई जाए उस से दलील पकड़े क्योंकि यह सहीह़ हदीसें और सलफे सालिहीन ने जो सम्झा है उस के खिलाफ है, वलीद पुत्र अब्दुल मलिक ने गलती की अल्लाह उसे क्षमा दे जिस ने नबवी कमरों को मसिजद के भीतर दाखिल किया क्योंकि नबी करीम ﷺ ने क़ब्रों पर मस्जिदें बनाने से रोका है,दर हक़ीक़त होना तो यह चाहिये था कि कमरों को छेड़े

बिना मस्जिदे नबवी को दूसरी सिमतों से चौड़ा किया जाता।

और इसी प्रकार वह गुंबद जो नबी करीम ﷺ की क़ब्र पर है उस को बनाने का हुक्म न तो नबी करीम ﷺ की ओर से था और न सहाबः की ओर से और न ही ताबईनो तबे ताबईन की ओर से था और न ही उम्मत के उलमा और मज़हब के इमामों की ओर से, बल्कि यह गुंबद जो नबी करीम ﷺ की क़ब्र पर है मिस्र के पुराने बादशाहों में से एक बादशाह क़लदून अल- सालिही जो ६७८ हिजरी में मन्सूर बादशाह के नाम से जाना जाता था का बनाया हुवा है{देखिये अलबानी की तह़जीर-अल - साजिद (६३) सा'द सादिक़ की सिराअ बैन-अल-हक्क वल बातिल (१०६) तत़हीरुल एतेक़ाद (४३)।

पुकार पुकार

मैं उन लोगों से मुखातिब हुँ जो क़ब्रों में दफन किए हुए लोगों से लगाव रखते हैं, ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात स्वीकार करो और उस पर ईमान लाओ तुम्हें अल्लाह की सौगंध,

विचार करो,क्या तुम जानते हो कि सलफे सालिहीन क़ब्रों को पक्का करते थे? या किसी इन्सान से उम्मीदें लगाते थे? या किसी क़ब्र, किसी स्थान का वसीलह पकड़ते थे और अधिक ज्ञान रखने वाले बादशाह से ग़ाफिल रहते थे ?

क्या तुम जानते हो कि उन में से कोई भी नबी करीम ﷺ की क़ब्र के निकट या आप ﷺ के किसी सहाबी या आप के घर वालों में से किसी की क़ब्र के पास खड़े हो कर उस से जरूरतें पूरी करने अथवा कठिनाइयाँ दूर करने के इच्छुक हो ?

और क्या तुम जानते हो कि रिफाई, दसूक़ी, जीलानी और बदवी अल्लाह के समीप मान्य और उनका वसीलह ईश्दूतों एंव संदेष्टाओं, सहाबा और ताबईन से बढ़ कर हैं ?

मदीनः मुनव्वरः में उमर ﷺ के दौरे खिलाफत में सहाबा को देखो; जब धरती सूख गई और वर्षा रुक गई तो उमर लोगों को लेकर बाहर निकले और इस्तिस्क़ा (वर्षा की नमाज़) पढ़ाई फिर आप ने अपने दोनो हाथों को उठाया और कहा : ऐ अल्लाह! जब

हम पर सूखा पड़ता था तो हम अपने नबी की दुआ का वसीलः लेते थे, और तू हम पर वर्षा नाज़िल करता था... ऐ अल्लाह! अब हम तेरे नबी के चचा की दुआ का वसीलः ले रहे हैं फिर आप हज़रत अब्बास की ओर मुतवज्जेः हुए और फर्माया : ऐ अब्बास खड़े हो जाइए और अल्लाह तआला से दुआ कीजिए कि वह हमे सैराब करे, तो हज़रत अब्बास खड़े हुए और अल्लाह तआला से दुआ की और लोगों ने उन की दुआ पर आमीन कही, लोग रोये गिड़गिड़ाये यहाँ तक कि उनके ऊपर बादल इकट्ठा होगए और वर्षा हो गई।

ऐ लोगो! सहाबा को देखो वह हमसे अधिक समझदार हम से अधिक नबी करीम ﷺ से मुहब्बत करने वाले थे जब उन्हें कोई ज़रूरत पड़ती अथवा उन पर कोई परेशानी आती तो वह लोग नबी करीम ﷺ की क़ब्र पर जा कर यह नहीं कहते थे कि ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह तआला से हमारे लिए शिफारिश कीजिए, कदापि नहीं वह लोग जानते थे कि मृतक से दुआ माँगना जायज़ नहीं है यद्यपि वह

अल्लाह का भेजा हुवा नबी या क़रीबी वली हो, जब उन्हें कोई ज़रूरत पड़ती तो वह लोग परेशनियाँ दूर होने के लिए अच्छी दुआवों का सहारा लेते थे।

परन्तु अफसोस अधिक अफसोस आज के भोले भाले लोगों पर जो सड़ी गली हड्डियों के पास भीड़ लगाते हैं,उन से क्षमा और कृपा के इच्छुक होते हैं।

ऐ हमारी क़ौम! तुम्हारी बरबादी हो क्या तुम जानते हो कि नबी करीम ﷺ ने तस्वीरें और मुजस्समे बनाने से रोका है तो क्या (अल्लाह की पनाह) यों ही बेकार और खिलवाड़ के तौर पर रोका है या आप को इस बात का डर था कि कहीं मुसलमान तस्वीरों और मुजस्समों की इबादत करके अपनी पुरानी जाहिलीयत की ओर पलट न जाएं ?

क्या अन्तर है उस व्यक्ति के बीच जो तस्वीरों और मुजस्समों का क़ायल है और उस व्यक्ति के बीच जो मज़ारों और क़ब्रों का सम्मान करता है जब्कि इन में से हर एक शिर्क की ओर खींच कर ले जाते हैं और एकेश्वरवादी में बिगाड़ पैदा करते हैं।

शिर्क के अस्बाब में से अल्लाह के अतिरिक्त की क़सम खाना है

न क'अब: की क़सम खाना जायज़ है और न अमानत की, न आदर एवं सम्मान की क़सम खाना जायज़ है और न किसी व्यक्ति के बरकत की, न किसी की जीवन की क़सम खाना जायज़ है और न नबी करीम ﷺ के मुक़ाम की न किसी वली के मरतबे की, न बाप दादों की क़सम खाना जायज़ है और न माताओं की, यह सब ह़राम हैं क्योंकि क़सम खाना आदर एवं सम्मान है जो अल्लाह के अतिरिक्त के लिए जायज़ नहीं है।

इमाम अहमद ने इब्ने उमर से मरफूअन रिवायत की है :

”من حلف بغير الله فقد أشرك“مسند احمد(٥٨٠٠)

“ जिस ने अल्लाह के अतिरिक्त की क़सम खाई उस ने शिर्क किया ”

और नबी करीम ﷺ ने फर्माया :

”من كان حالفا فليحلف بالله أو ليصمت“بخاري(٢٤٨٢)

" जो क़सम खाना चाहता है उसे चाहिए कि अल्लाह की क़सम खाए या चुप रहे "

जब किसी व्यक्ति ने अल्लाह के अतिरिक्त की क़सम खाई और उस का यह विश्वास है कि जिस चीज़ की क़सम खाई जारही है उस की अज़्मत (महिमा) अल्लाह तआला की अज़्मत की तरह़ है तो यह महा शिर्क है और अगर इस बात का विश्वास रखा कि जिस की क़सम खाई जारही है वह अल्लाह से कम्तर है तो यह छोटा शिर्क है।

और यदि किसी व्यक्ति की जुबान पर इस प्रकार की कोई चीज़ बिना इरादः आ जाए तो उस का कफ्फारः (प्रायश्चित्त) यह है कि वह लाइलाह इल्लल्लाह कहे, जैसा कि इमाम बुखारी ने रिवायत की है कि नबी ﷺ ने इर्शाद फर्माया :

"من حلف فقال في حلفه واللات والعزى فليقل لا إله إلا الله" بخاري(٤٤٨٢)

" जिस ने क़सम खाई और अपनी क़सम में कहा लात और उज़्ज़ा की क़सम तो उसे लाइलाह इल्लल्लाह कह लेना चाहिए "

और अगर अल्लाह के अतिरिक्त की क़सम किसी व्यक्ति की ज़ुबान पर बार बार आ जाये तो उस पर अनिवार्य है कि वह उस के छोड़ने की कोशिश करे, कुछ लोग अल्लाह की झूटी क़सम खाते हैं जब्कि उन्हें अपने शैख की झूटी क़सम खाने की जुर्अत नहीं होती।

कुछ शिर्किय: शब्द जो लोगों की ज़ुबान ज़द हैं वह यह हैं, जैसे कुछ लोगों का यह कहना कि जो अल्लाह ने चाहा और आप ने चाहा, या अगर अल्लाह न होता और फलाने, या मेरा काई नहीं है सिवाय अल्लाह के और आप के, और ये अल्लाह की और आप की बरकतें हैं,

और ठीक इस प्रकार कहना है : जो अल्लाह ने चाहा फिर फलाने व्यक्ति ने और अगर अल्लाह न होता फिर फलाने व्यक्ति।

तावीज, काग़ज़ और पत्ते, नज़र इत्यादि के डर से लटकाना शिर्क के अस्बाब में से है, जब कोई इस बात का विश्वास रख्खे कि यह चीज़ें केवल मुसीबतों के हटाने और दूर करने के अस्बाब और तरीक़े हैं

तो यह छोटा शिर्क है, परन्तु यदि कोई यह विश्वास रख्खे कि यह चीज़ें स्वयं असर करती हैं और परेशानियाँ दूर करती हैं तो यह महा शिर्क है क्योंकि उस ने अपना संबंध अल्लाह के अतिरिक्त से जोड़ लिया और संसार में अल्लाह के संग अल्लाह के अतिरिक्त के लिये अधिकार को स्वीकार कर लिया।

तावीज़ की दो क़िस्में हैं

पहली क़िस्म : जो कुर्आन से हो अर्थात कोई व्यक्ति ऐसा वस्त्र अथवा चमड़ा या सोने का टुक्ड़ा लटकाए जिस पर कुर्आने करीम की आयतें लिख्खी हुई हों, यह जायज़ नहीं है क्योंकि ऐसा करना नबी करीम ﷺ से साबित नहीं है और कभी यह कुर्आन के अतिरिक्त चीज़ों के लटकाने की ओर ले जाती है।

दूसरी क़िस्म : जो कुर्आन के अतिरिक्त से हो जैसे कोई व्यक्ति ऐसी चीज़ लटकाए जिस पर जिनों के नाम और जादूगरों की लकीरें हों, और यह शिर्क के अस्बाब में से है, अल्लाह की पनाह ...।

इब्ने मस्ऊद رضي الله عنه ने फर्माया :

''من قطع تميمة من إنسان فكأنما أعتق رقبة''

" जिस ने किसी इंसान का तावीज़ काट दिया तो गोया उस ने एक गुलाम (दास) आज़ाद किया "

हुजैफः पुत्र यमान ﷺ ने एक व्यक्ति को देखा जिस ने अपने हाथ में पीतल या लोहे का कड़ा पहने हुए था तो उस से पूछा यह क्या है ? जवाब दिया कि बीमारी के कारण है, तो आप ﷺ ने फर्माया : इसे निकाल दो क्योंकि यह बीमारी के सिवाय कुछ ज़्यादः नहीं कर सक्ता, और यदि तू इस हाल में मरा कि कड़ा तेरे हाथ में रहा तो तू कभी भी कामयाब न होगा।

इसी प्रकार झाड़ फूँक और वह दुआएं एंव वज़ीफे जो बीमारों पर पढ़े जाते हैं तो इस में जायज़ केवल वह हैं जो अल्लाह के कलाम और उस की सिफतों से किए जाते हैं जैसे सूरतुल फातिहः या मुअव्वज़ात बीमार पर पढ़ना या सुन्नते नबविय्यः से साबित चीज़ों के ज़रिए दुआ करना।

बहर ह़ाल जिनों के नाम अथवा फरिश्ते संदेश्वाहकों एंव सदाचारी लोगों के नामों को दुहराना तो यह

अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ करना है जो महा शिर्क है।

शर्अी वज़ीफों का तरीकः " नियम "

वज़ीफे पढ़ कर बीमार पर फूँक मारे अथवा पानी में पढ़ कर उसे पिलाए।

शिर्क में से इल्मे ग़ैब (छिपी हुई बातों के ज्ञान) का दावा करना है

अल्लह तआला के सिवाय ग़ैब का ज्ञान किसी को नहीं है, अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ قُل لَّا يَعۡلَمُ مَن فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ ٱلۡغَيۡبَ إِلَّا ٱللَّهُۚ وَمَا يَشۡعُرُونَ أَيَّانَ يُبۡعَثُونَ ﴾ النمل: ٦٥

" कह दीजिए कि आकाश वालों में से और धरती वालों में से अल्लाह के सिवाय कोई भी ग़ैब (की बातें) नहीं जानता उन्हें तो यह भी मालूम नहीं कि दोबारा ज़िन्दा किए जाएंगे "

तो किसी व्यक्ति के लिए कदापि ग़ैब का ज्ञान संभव नही है, न किसी मुक़र्रब फ़रिश्ते के लिए और न ही किसी ईशदूत के लिए न किसी इबादत गुज़ार वली

के लिए और न किसी ऐसे इमाम के लिए जिस की लोग पैरवी करते हों कदापि नहीं ,कदापि नहीं, ग़ैब का ज्ञान अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं है, परन्तु वह अल्लाह का रसूल हो जिस पर अल्लाह तआला वह्य के ज़रिए कुछ ग़ैब की चीज़ें नाज़िल करे जैसा कि अल्लाह तआला ने अपने नबी को काफिरों के मक्रो फरेब से खबरदार किया और क़ियामत की निशानियाँ बताईं और इस प्रकार अन्य चीजें।

जो व्यक्ति भी ग़ैब जानने का दावा करे चाहे जौनसा तरीक़ः इख्तियार करके, जैसे हथेली या प्याला पढ़ कर या सितारों की ओर देख कर या कहानत (शकून विचारने) अथवा जादू के ज़रिए तो ऐसा व्यक्ति झूटा और काफिर है,और जो खबरें ग़ायब चीजों के विषय में या कुछ बीमारियों के अस्बाब के विषय में बाज़ीगरों और दज्जालों से प्राप्त होती हैं तो यह जिनों और शैतानों को इस्तेमाल करके होती हैं। कुछ कमज़ोर ईमान वाले नजूमियों के पास जा कर उन से अपने भविष्य और विवाह के विषय में पूछते

हैं जब्कि यह ह़राम है, जिस ने ग़ैब का दावा किया या ग़ैब दानी का दावा करने वाले व्यक्ति को सत्य माना तो बह मुश्रिक एंव काफिर है।

इसी प्रकार अखबार और मेगज़ीन में छपे हुए भाग का सहारा लेना या उन लोगों से फून के ज़रिए बात करना, अथवा ग़ैब दानी का दावा करने वाले लोगों से पूछना, यह सब ह़राम है।

शिर्क के अस्बाब में से जादूगरी शकून विचारने अथवा जोतिशी का पेशा इख्तियार करना है

जादू ,अफसूँ ,मन्तर खास प्रकार की बड़बड़ाहट कुछ दवाएं और धूनी देने का नाम है और इस की हक़ीक़त है कभी यह दिलों और कभी पती पत्नी के बीच बिगाड़ पैदा करता है और यह बड़े गुनाहों में से है, नबी करीम ﷺ ने फर्माया :

''اجتنبوا السبع الموبقات قالوا يـ رسول الله وما هـــن قـــال الشرك بالله والسحر...'' بخاري (٢٥٦٠)

"सात हलाक करने वाली चीजों से बचो, सहाबः ने पूछा वह क्या हैं ?आप ﷺ ने इर्शाद फर्मायाः अल्लाह के साथ शिर्क करना अथवा जादू..."

जादूगरी में शैतानों से मदद ली जाती है, उन से लगाव रखखा जाता है और उन की नज़्दीकी उन चीज़ों के जरिए प्राप्त की जाती है जिसे वह पसंद करते हैं ताकि शयातीन जादूगर की बात मानें अथवा इस में ग़ैबदानी का दावा करना है जो कुफ्र और गुमराही है इसी कारण अल्लाह ने फर्मायाः

﴿ إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدُ سَحِرٍّ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَى ﴾ طه: ٦٩

" उन्हों ने जो कुछ बनाया है यह केवल जादूगरों के करतब्य हैं और जादूगर कहीं से भी आए कामयाब नहीं होता "

जादूगर के क़त्ल का हुक्म दिया गया है जैसा कि सहाबा की जमाअत ने ऐसा किया ,आश्चर्य है जिस दौर से हम गुज़र रहे हैं लोगों ने जादू के विषय में नादानी बरती है बल्कि कभी कभार हद से आगे बढ़ कर जादूगरी को ऐसा गुण मानते हैं जिस पर लोग गर्व करते हैं और जादूगरों को सम्मान एंव पुरुस्कार देते हैं जादूगरों के लिए सभा एवं एक दूसरे से बढ़त हासिल करने के लिए महफिलें जमाते हैं जिस में हज़ारों मनोरंजन हासिल करने वाले एवं वाह वाही

करने वाले लोग शिर्कत करते हैं ऐसा अक़ीदे में ग़फ़्लत के कारण होता है।

क्या ही अच्छा होता कि जादूगरों के संग वह कुछ किया जाए जिसे अबूज़र ग़िफ़ारी ﷺ ने किया, वह किसी अमीर के पास गए तो उन्हों ने उस के पास एक जादूगर देखा जो अपने हाथ में लिए तलवार से खिलवाड़ कर रहा था, लोगों की नज़रबंदी करके उन्हें यह दिखला रहा था कि वह एक व्यक्ति का सिर काट कर उसे पुनः अस्ली हालत में कर देता है तो अबूज़र ﷺ दूसरे दिन वहाँ आए अपनी चादर ओढ़े हुए अपनी तलवार उस के नीचे छुपाए हुए थे फिर खलीफः के पास पहुँचे तो देखा कि जादूगर खलीफः के सामने तलवार से खेल रहा है, लोगों के सामने अपनी जादूगरी दिखा रहा है और लोग हैरत एवं आश्चर्य में हैं तो अबूज़र उस के निकट गए फिर अचानक अपनी तलवार निकाल कर उसे हवा में लहराया और उस जादूगर की गर्दन पर झुक कर उस का सिर शरीर से अलग कर दिया जादूगर चीख़

मार कर गिर पड़ा, अबूज़र ﷺ ने फरमाया : कि मैं ने नबी करीम ﷺ से सुना है आप ने फर्माया कि : "जादूगर की हद उसे तलवार से मारना है"{तिर्मिज़ी} फिर अबूजर ﷺ ने उस की ओर मुतवज्जेः हो कर कहा : अपने आप को जीवित कर अपने आप को जीवित कर।

नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फर्माया :

من أتى كاهنا أو عرافا فصدقه بما يقول فقد كفر بما أُنـــزل على محمد صلى الله عليه وسلم (مسند احمد)

" जो व्यक्ति किसी शकुन विचारने वाले अथवा जोतिशी के पास गया और उस के कथन को स्वीकारा तो उस ने मोहम्मद ﷺ के उपर उतारी गई चीज़ों को नकार दिया "

जिन चीज़ों के विषय में जानकारी अनिवार्य है वह यह है कि जादूगर, शकुन विचारने वाले, जोतिशी यह सब लोगों के अक़ीदे से खिलवाड़ करते हैं क्योंकि

यह इलाज करने वालों का रूप धार कर बीमारों को अल्लाह के अतिरिक्त ज़िबह करने का हुक्म देते हैं इस प्रकार कि वह लोग बकरी का ऐसा बच्चा ज़िबह करें जो इस प्रकार हो या इस प्रकार की मुर्गी हो इत्यादि...।

कभी कभी वह शिर्किया लकीरें एंव शैतानी तावीजें बनाते हैं इस तौर पर कि उसे अपनी गर्दनों में लटकाएं, अथवा उसे अपने बक्से में रख्खें या अपने घरों में रख्खें, उन में से कुछ ऐसे वली का रूप धार लेते हैं जिसके हाथों आदत के खिलाफ चीजें और करामतें ज़ाहिर होती हों, मिसाल (उदहारण) के तौर पर वह स्वयं को हथियार से मारे या स्वयं को कार के पहियों के नीचे करदे और उस के शरीर पर कुछ फर्क़ न पड़े या इस के अतिरिक्त नज़र बंदी जो वास्तव में शैतान के अमल का जादू है जिसे वह उन जादूगरों के हाथों ज़ाहिर करता है।

जादूगरों के शैतान अल्लाह तआला के ज़िक्र के समय उन से अलग हो जाते हैं जैसा कि एक

नौजवान ने बताया कि एक बार वह किसी देश की यात्रा पर गया और उस देश के किसी मैदान में दाखिल हो कर सर्कस देखने लगा उस ने कहा कि हम अनेक प्रकार के खेल कूद का मज़ः लेरहे थे कि अचानक एक स्त्री आती है और एक रस्सी पर अजीबो ग़रीब शक्ति के साथ चल रही है फिर वह दीवार पर कूद गई और उस पर इस प्रकार चल रही है जैसे मच्छर चलता है लोग उस के इस कर्तब्य से आश्चर्य में थे तो मैं ने जी में कहा कि ऐसा संभव नहीं है कि जो वह कर रही है वह पहलवानी हो जिस की उस ने अभ्यास की हो, यह सत्य है कि मैं गुनहगार हूँ परन्तू एकेश्वरवादी हूँ इस प्रकार की चीज़ो से मैं प्रसन्न नहीं हो सक्ता, मैं हैरान था कि क्या करूँ तो मुझे याद आया कि मैं जुमे के एक खुत्बे में मौजूद था जिस का विषय जादू और जादूगर था और शैख ने कहा था कि जादूगर शैतानों का प्रयोग करते हैं और जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो शैतानों की तद्बीरें और उन की शक्तियाँ ख़त्म (संपन्न) हो जाती हैं, मैं

अपनी कुर्सी से हट गया और मैदान की लकड़ी की ओर मुँह कर के चलने लगा, और लोग प्रसन्न हो कर तालियाँ लगा रहे थे, वह यह समझ रहे थे की मैं अधिक प्रसन्न होने के कारण जादूगरनी के निकट जारहा हूँ जब मैं उस जादूगरनी के निकट पहुँच गया तो मैं ने उस की ओर देख कर आयत अल कुर्सी पढ़ना प्रारम्भ किया :

﴿ ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْحَىُّ ٱلْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُۥ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ... ﴾
البقرة: ٢٥٥-

" अल्लाह तआला ही सच्चा माबूद है जिस के सिवाय कोई माबूद नहीं,जो ज़िंदा है और सब का थामने वाला है जिसे न ऊँघ आये न नींद "

तो औरत परेशान बल्कि अधिक परेशान हो गई, अल्लाह की क़सम मैं ने आयत अल कुर्सी पूरी नहीं की कि वह धरती पर गिर कर कांपने लगी, लोग खड़े हो गए एंव घबरागए, और उस को लाद कर हास्पिटल लेगए,अल्लाह तआला सत्य फर्माता है :

﴿ إِنَّ كَيْدَ ٱلشَّيْطَٰنِ كَانَ ضَعِيفًا ﴿٧٦﴾ ﴾ النساء: ٧٦

" यक़ीन करो कि शैतान की चाल (बिल्कुल कमज़ोर और) बहुत कमज़ोर है "

और फर्माया :

﴿ وَمَكَرُوا۟ وَمَكَرَ ٱللَّهُ ۖ وَٱللَّهُ خَيْرُ ٱلْمَٰكِرِينَ ﴿٥٤﴾ ﴾ آل عمران: ٥٤

" और काफिरों ने चाल चली और अल्लाह तआला ने भी योजना बनाई और अल्लाह (तआला) सभी योजनाकारों से अच्छा है "

शिर्क के अस्बाब में से मुजस्समों का सम्मान एंव यादगार अलामत खड़ी करनी है

तमासील तिमसाल की जमा (बहु) है और वह किसी इंसान अथवा हैवान का मोसव्वर मोजस्समः है और **नसब तज़कारियः** उन मोजस्समों को कहते हैं जिसे लोग बड़े और बुज़ुर्गों की सूरतों पर उसे मैदानों, पारकों में खड़ा कर देते हैं, क्या आप ने क़ौमे नूह

को नहीं देखा जब उन्हों ने अपने बुज़ुर्गों के लिए मुजस्समे बनाए, एक ज़मानः नहीं बीता यहां तक कि लोगों ने अल्लाह के अतिरिक्त उन की इबादतें (पूजा) प्रारम्भ करदीं इसी कारण नबी करीम ﷺ ने मुजस्समे खड़ा करने अथवा तस्वीरें लटकाने से रोका है क्योंकि यह शिर्क के अस्बाब में से हैं बल्कि नबी करीम ﷺ ने तस्वीरें बनाने वालों पर फटकार फर्माई है और बताया कि यह लोग क़यामत के दिन अज़ाब के एत्बार से सब से सख्त हूँगे अथवा तस्वीरें मिटाने का हुक्म दिया है, और फर्माया कि : फरिश्ते उस घर में दाखिल नहीं होते जिस में तस्वीर हो।

शिर्क के अस्बाब में से बिद्ई वसीलः अपनाना है

जैसे नबी करीम ﷺ के मुक़ाम और दर्जे का वसीलः,या मखलूक़ और उनके हक़ का वसीलः या मुर्दों से दुआ माँगना, उन से शफाअत तलब करना तो यह जायज़ नहीं है कि वह अपनी दुआ में यूँ कहे कि ऐ अल्लाह ! मैं तेरे नबी के मुक़ाम का

वसीलः या फलाने व्यक्ति के हक़ या फलाने मुर्दे की रूह़ का वसीलः माँगता हूँ यह सब नाजायज़ हैं।

जायज़ और शरई वसीलः

जायज़ और शरई वसीलः अल्लाह तआला के नामों और उस की सिफ़तों का वसीलः है जैसे यह कहे कि ऐ रह़ीम! कृपा कर ऐ ग़फ़ूर मुझे क्षमा करदे।

इसी प्रकार ईमान और अच्छे अमलों के ज़रिए अल्लाह तआला की ओर वसीला ढूँडना जैसे यह कहे कि ऐ अल्लाह! मेरा तुझ पर ईमान लाना और तेरे रसूल की तस्दीक़ करने के कारण मुझे अपनी जन्नत (स्वर्ग) में दाखिल करदे..।

और नेक लोगों का वसीलः ढूँडना जिंदा नेक लोगों की दुआओं के ज़रिए, जैसे किसी नेक जीवित व्यक्ति से कहना कि वह उस के लिए अल्लाह तआला से दुआ करे क्योंकि मुसलमान का अपने भाई के लिए दुआ उस की ग़ैर मौजूदगी में क़बूल की जाती है परन्तु क़ब्र में दफन किए हुए मृतक से दुआ की

दरख्वास्त करना जायज़ नहीं है,ऊपर लिख्खी हुई चीजें अल्लाह तआला के हुकुक में से हैं उस के बंदों पर जिसे अल्लाह के अतिरिक्त इख्तियार करना जायज़ नहीं है।

अल्लाह तआला पर ईमान

अल्लाह पर ईमान लाना, इस में इस बात का विश्वास रखना है कि अल्लाह तआला ही हर चीज़ का प्रभू है और वही सत्य पूज्नीय है उस के लिए अच्छे अच्छे नाम और बुलंद सिफतें (गुण) हैं अल्लाह फर्माता है :

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِۦ شَىْءٌ ۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ ﴿١١﴾﴾ الشورى: ١١

" उस जैसी कोई चीज़ नहीं और वह सुनने वाला देखने वाला है "

और हम इस बात पर ईमान लाते हैं कि अल्लाह तआला जब चाहता है जिस से चाहता है जब चाहता

है बात करता है, जैसा कि अल्लाह तआला का इर्शाद है:

﴿ وَكَلَّمَ ٱللَّهُ مُوسَىٰ تَكۡلِيمًا ﴿١٦٤﴾ ﴾ النساء: ١٦٤

" और अल्लाह तआला ने मूसा से बात की "

और कुरआने करीम अथवा संपूर्ण आसमानी किताबें अल्लाह तआला की बातें हैं।

और हम इस बात पर ईमान लाते हैं कि अल्लाह तआला अपनी ज़ात और अपने गुणों के ज़रिये सृष्टी से बुलंद एंव बरतर है,और यह कि उस ने आसमानों और धरती को छह दिन में पैदा किया फिर वह अर्श पर मुस्तवी हुआ उस का अर्श पर मुस्तवी होना उस प्रकार है जो उसकी महानता और बुज़ुर्गी के शायाने शान है, जिसकी हक़ीक़त अल्लाह के सिवाय कोई नही जानता, वह अपने अर्श पर बुलंद है परन्तु वह सृष्टी के अहवाल की खबर रखता है उन की बातें सुनता है और उन के कामों

को देखता है और उनके मुआमलात की तद्बीर (उपाय) करता है।

और हम इस बात पर ईमान लाते हैं कि मोमिन बंदे अपने रब को क़यामत के दिन देखेंगे,अल्लाह तआला फर्माता है :

﴿ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾ إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾ ﴾ القيامة: ٢٢ – ٢٣

" उस दिन बहुत से मुंह ताज़ा (और रौशन) होंगे अपने रब की तरफ देखते होंगे "

हमारे रब की वह सिफतें जिनके विषय में अल्लाह तआला ने अपनी किताब में बयान किया है और जिन के विषय में उसके संदेशवाहक ने बताया है हम उस पर ईमान लाते हैं और उसकी हक़ीक़त को बिलकुल उसी प्रकार मानते हैं जो अल्लाह तआला के शायाने शान हैं।

फरिश्तों पर ईमान

फरिश्तों पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि अलाह ने उन को नूर से पैदा किया और उन्हें ऐसे काम सौंपा है जिन्हें वह अच्छी तरह अंजाम देते हैं वह अल्लाह के दास हैं अल्लाह के हुक्म की नाफर्मानी नहीं करते वह संख्या, अल्लाह का डर, अथवा इबादत के एत्बार से हम से अधिक हैं।

इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है कि आकाश में एक घर है जिस का नाम बैते म'अमूर है जिस में रोज़ाना सत्तर हज़ार फरिश्ते दाखिल हो कर नमाज़ अदा करते हैं फिर उस से निकल जाते हैं फिर क़यामत तक उस में दोबारा दाखिल नहीं होंगे।

और अबुदाऊद एंव त़बरानी के नज़्दीक सहीह़ रिवायत में है कि नबी करीम ﷺ ने फर्माया :

"أذن لي أن أحدث عن ملك من ملائكة الله من حملة العرش ما بين شحمة أذنه إلى عاتقه مسيرة سبع مائة عام"

" मुझे इस बात की इजाज़त दीगई है कि अर्श उठाने वाले फरिश्तों में से किसी एक फरिश्ते के विषय में बताऊँ, उसके कान की लौ से लेकर उस की गर्दन तक की दूरी सात सौ साल है "

और कुछ फरिश्तों को खास काम की ज़िम्मेदारी दी गई है, जिबरील عليه السلام को ईश्दूतों की ओर वह्य पहुँचाने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है, इस्राफील عليه السلام को क़यामत के दिन सूर फूँकने की ज़िम्मेदारी दी गई है, मलकुलमौत को प्राण निकालने की और मालिक को नर्क की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है।

और अल्लाह तआला के फरिश्तों पर हम इमान लाते हैं यद्यपि हम उन्हें देख नहीं सक्ते।

और इसी प्रकार दूसरी सृष्टी भी है जो हमारी निगाहों से ओझल है और वह जिन्नात हैं जिन्हें आग से पैदा किया गया है, अल्लाह तआाला ने इन्हें इंसानों से पूर्व पैदा किया है जैसा कि अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ وَلَقَدْ خَلَقْنَا ٱلْإِنسَٰنَ مِن صَلْصَٰلٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٦﴾ وَٱلْجَآنَّ خَلَقْنَٰهُ مِن قَبْلُ مِن نَّارِ ٱلسَّمُومِ ﴾ الحجر: ٢٦ – ٢٧

" और बेशक हम ने इंसान को खनखनाती (सूखी) मिट्टी से, जो कि सड़े हुए गारे की थी पैदा किया है और उस से पहले जिन्नात को हम ने लौ (ज्वाला) वाली आग से पैदा किया "

जिन्नात भी मुकल्लफ हैं और इन्हें भी इबादत का हुक्म दिया गया है इन में से कुछ मोमिन और कुछ काफिर हैं इन में फर्माबर्दार और कुछ नाफर्मान हैं और ये कभी कभी इंसानों पर ज़्यादती करते हैं जैसा कि कभी कभी इंसान उन पर ज़्यादती करते हैं, और इंसानों की जिनों पर ज़्यादती में से है कि इंसान पेशाब पैखाने के पश्चात हड्डी या लीद से अपनी शरमगाह पोंछे,सहीह मुस्लिम में है कि नबी करीम ﷺ ने हड्डी ओर लीद के विषय में फर्माया : " तुम इन दो चीज़ों से इस्तिन्जा न करो क्योंकि यह दोनो चीज़ें तुम्हारे भाई जिन्नातों की खुराक है "।

और जिन्नातों की इंसानों पर ज़्यादती में से वस्वसः के ज़रिये उन पर अधिकार जमालेना उन्हें डराना और पछाड़ना है,मुसल्मानो को चाहिए कि शर्ई अज़्कार के ज़रिए उन से अपनी हिफाज़त करें जैसे आयत अल कुर्सी और मुअव्विज़ात पढ़ना और वह शर्ई अज़्कार जो नबी करीम ﷺ से साबित हैं, परन्तु उनकी नज़्दीकी ढुँडने के लिए पशु ज़िबह करना उनकी बुराई से बचने के लिए उन से दुआ माँगना तो सब शिर्क की शक्लें हैं।

निःसंदेह जिन्नात और शयातीन कम्ज़ोर हैं और उन की तद्बीर भी कम्ज़ोर है,परन्तु इंसान जब उस के गुनाह अधिक होजाते हैं और वह हराम चीजों की ओर देखने लगता है गाना बजाना सुनता है और उस का ईमान कम्ज़ोर हो जाता है और उस का तअल्लुक़ अपने रब से कम होजाता है,अल्लाह के ज़िक्रर और शर्ई अज़्कार के ज़रिए हिफाज़त से ग़ाफ़िल हो जाता है तो उस पर जिन्नात एवं शयातीन अधिकार जमा लेते हैं,।

अल्लाह तआला शैतान और उस के जत्थे के विषय में फर्माया :

﴿ إِنَّهُۥ لَيْسَ لَهُۥ سُلْطَٰنٌ عَلَى ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٩٩﴾ إِنَّمَا سُلْطَٰنُهُۥ عَلَى ٱلَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُۥ وَٱلَّذِينَ هُم بِهِۦ مُشْرِكُونَ ﴿١٠٠﴾ ﴾ النحل: ٩٩ - ١٠٠

" ईमान वालों और अपने रब पर भरोसा रखने वालों पर उसका कभी ज़ोर नहीं चलता हाँ उस का असर उन पर ज़रूर है जो उस से दोसती करें और उसे अल्लाह का साझीदार बनायें "

किताबों पर ईमान

और ये ऐसी किताबें हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने सृष्टी की हिदायत के लिए अपने संदेश्वाहकों पर उतारा है और यह बहुत अधिक हैं हम संपूर्ण पुस्तकों पर ईमान लाते हैं और उन में से चार किताबों के विषय में अल्लाह तआला ने हमें बताया है, कुर्आने करीम जिसे अल्लाह तआला ने मोहम्मद

ﷺ पर उतारा और तौरात मूसा عليه السلام पर, ज़बूर दाऊद عليه السلام पर और इन्जील ईसा عليه السلام उतारा।

और यह सब अल्लाह की बातें हैं, और कुर्आन उन सारी किताबों में सब से अन्तिम और सब से बड़ी किताब है अल्लाह तआला ने इस में तमाम वह चीजें इकठ्ठा करदी हैं जो पहले की किताबों में थीं, अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ وَأَنزَلْنَآ إِلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ بِٱلْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلْكِتَٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ ﴾ المائدة: ٤٨

" और हम ने तेरी तरफ सच्चाई से भरी यह किताब उतारी है,जो अपने से पहले की सभी किताबों की तस्दीक़ करती है और उन की मुहाफिज़ है "

ईश्दुतों और संदेश्वाहकों पर ईमान

अल्लाह तआला ने हर उम्मत में रसूल भेजा जिन्हों ने केवल उस ल्लाह की इबादत की ओर लोगों को

बुलाया जिस का कोई साझी नहीं और सब से पहले रसूल नूह عليه السلام हैं और सब से अन्तिम रसूल मोहम्मद ﷺ हैं।

रसूलों की त'अदाद बहुत अधिक हैं उन में से कुछ वह हैं जिन के नाम और उन के विषय में अल्लाह तआला ने हमें बताया है और उन में से कुछ वह हैं जिन के विषय में अल्लाह तआला ने हमें नहीं बताया है तो हम उन सब पर ईमान लाते हैं, अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ مِنْهُم مَّن قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُم مَّن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ﴾ غافر: ٧٨

" बेशक हम आप से पहले भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं जिन में से कुछ के (वाक़ेआत) हम आप को सुना चुके हैं और उन में से कुछ की कथायें तो हम ने आप को सुनायी ही नहीं"

ये सब इंसान पैदा किये गये हैं उन के और लोगों के बीच कोई अन्तर नहीं है,उन के और दूसरे लोगों के बीच केवल इत्ना अन्तर है कि उन की ओर वह्य आती है :

﴿ قُلْ إِنَّمَآ أَنَا۠ بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰٓ إِلَيَّ ﴾ الكهف: ١١٠

"आप कह दीजिए कि मैं तो तुम जैसा ही एक इंसान हूँ(हाँ) मेरी तरफ वह्य (प्रकाशना) की जाती है"

जी हाँ वह इंसान थे खाना खाते थे और पानी पीते थे,बीमार होते थे और मरते थे,और उन सब पर ईमान लाना वाजिब है जिस व्यक्ति ने उन में से किसी एक की रिसालत का इन्कार किया गोया उस ने सब को नकार दिया।

अल्लाह तआला क़ौमे नूह के विषय में फर्माता है :

﴿ كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾ ﴾ الشعراء: ١٠٥

" नूह़ की क़ौम ने भी रसूलों को झुटलाया "

और क़ौमे आद के विषय में अल्लाह तआला फर्माता है :

﴿ كَذَّبَتْ عَادٌ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾ ﴾ الشعراء: ١٢٣

" आद " कौम " ने भी रसूलों को झुटलाया "

हर एक उम्मत ने केवल अपने नबी को झुटलाया लेकिन सारे संदेशवाहको की रिसालत एक है तो जिस ने उन में से किसी एक को झुटलाया गोया उस ने सब को झुटलाया, तो इस बुनियाद पर ईसाइयों ने चूँकि मोहम्मद ﷺ को झुटलाया और उन की पैरवी न की लिहाज़ा (अव्य) उन लोगों ने मसीह बिन मर्यम को भी झुटलाया क्योंकि उन्हों ने मोहम्मद ﷺ के आने की खुशखबरी और उन की पैरवी का हुक्म दिया है तो उन लोगों ने मसीह عليه السلام की बात न मानी और तक़रीबन यही बात यहूदियों और उनके अतिरिक्त में है।

आखिरत (प्रलोक) पर ईमान लाना

आखिरत पर ईमान लाने का अर्थ उन चीज़ों का स्वीकार करना है जिन का ज़िक्र अल्लाह तआला ने अपनी किताब में और मरने के पश्चात जो पेश आयेगा के विषय में उस के रसूल ﷺ ने खबर दी है तो सब से पहले क़ब्र के अज़ाब और उस की नेमतों पर ईमान लाओ और यह चीज़ किताबो सुन्नत से साबित है। अल्लह तआला का इर्शाद है :

﴿ وَحَاقَ بِـَٔالِ فِرْعَوْنَ سُوٓءُ ٱلْعَذَابِ ﴿٤٥﴾ ٱلنَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُومُ ٱلسَّاعَةُ أَدْخِلُوٓا۟ ءَالَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ ٱلْعَذَابِ ﴾
غافر : ٤٥ ــ ٤٦

" और फिरऔन के पैरोकारों पर बुरी तरह का अज़ाब टूट पड़ा आग है जिस के सामने ये हर सुबह और शाम को लाये जाते हैं और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी (हुक्म होगा कि) फिरऔन के पैरोकारों को बहुत सख्त अज़ाब में डालो "

और अल्लाह तआला ने मुनाफिक़ों (कपटाचारियों) के विषय में फर्माया :

﴿ سَنُعَذِّبُهُم مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿١٠١﴾ ﴾
التوبة: ١٠١

" हम उनको दोहरी सज़ा देंगे फिर वे बहुत बड़े अज़ाब की तरफ भेजे जाएंगे "

इब्ने मस्ऊद ﷺ और दूसरे लोग कहते हैं कि पहला अज़ाब दुनिया में होगा और दूसरा क़ब्र में फिर उन्हें जहन्नम में बड़े अज़ाब की ओर लौटा दिया जायेगा।

और वह हदीसें जो अज़ाबे क़ब्र और उसकी नेमतों के विषय में आई हैं वह अधिकतर हैं बल्कि इब्ने क़य्यिम आदि ने इस बात की वज़ाहत की है कि वह मुतवातिर हैं और इस के विषय में सुन्नत के अन्दर पचास से अधिक हदीसें हैं।

उसमें से एक वह हदीस जो बुखारी व मुस्लिम में है कि नबी करीम ﷺ का गुज़र दो क़ब्रों के पास से हआ आप ने फर्माया :

(إنهما ليعذبان وما يعذبان في كبير أما أحدهما فكان لا يستتر من البول وأما الآخر فكان يمشي بالنميمة)متفق عليه

इन दोनों को अज़ाब दिया जारहा है और इन्हें किसी बड़े गुनाह के कारण अज़ाब नहीं दिया जारहा है,इन में से एक पेशाब के छींटों से नहीं बचता था और दूसरा व्यक्ति चुगुलखोरी करता था।

उन हदीसों में से एक और हदीस जो बुखारी और मुस्लिम में है कि नबी करीम ﷺ अपनी दुआ में कहते थेः

(اللهم إني أعوذ بك من عذاب القبر) متفق عليه

" हे अल्लाह अज़ाबे क़ब्र से मैं तेरी पनाह माँगता हुँ"

अज़ाबे क़ब्र और उस की नेमतें छिपी हूई चीज़ों में से हैं जिसे अक़्ल के ज़रिये क़यास नहीं किया जा सक्ता।

आखिरत पर ईमान लाने में से क़यामत के दिन और मुर्दों के ज़िन्दः करने पर ईमान लाना है, जिस वक़्त सूर फूँका जाएगा तो लोग नंगे पैर नंगे बदन बिना खत्ना किये हुए खड़े होजाएंगे जैसा कि अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ ثُمَّ إِنَّكُم بَعْدَ ذَٰلِكَ لَمَيِّتُونَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُونَ ﴾ المؤمنون: ١٥ – ١٦

" इस के बाद फिर तुम सब ज़रूर मर जाने वाले हो फिर क़यामत के दिन बेशक तुम सब उठाये जाओगे "

और हिसाबो किताब अथवा जज़ा (बदला) पर ईमान लाना है:

﴿ إِنَّ إِلَيْنَآ إِيَابَهُمْ ۝٢٥ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُم ﴾ الغاشية: ٢٥ – ٢٦

" बेशक हमारी तरफ उन को लौटना है फिर बेशक उन से हिसाब लेना हमारा काम है "

और जन्नतो जहन्नम पर ईमान लाना है, जन्नत परहेज़गारों का घर है उसमें ऐसी चीजें हूँगी जिसे न तो किसी आँख ने देखा और न किसी कान ने सुना और न ही उस का खयाल किसी दिल में गुज़रा है, और जहन्नम (नर्क) अज़ाब का घर है, उसमें ऐसे अज़ाब और ऐसी सज़ायें (दंड) होंगी जिन के विषय में इंसान सोंच भी नहीं सक्ता।

और इसी प्रकार क़यामत की छोटी बड़ी निशानियों पर ईमान लाओ, जैसे दज्जाल का ज़ाहिर होना आकाश से ईसा عليه السلام का उतरना, सूरज का पश्चिम से निकलना, दाब्बतुल अर्ज़ (धरती से एक चौपाये) का निकलना इत्यादि।

और हम शिफारिश, हौज़,तराजू ,अल्लाह तआला के दर्शन और इसके अतिरिक्त प्रलोक की बहुत सारी बातों पर ईमान लाते हैं।

तक़्दीर की अच्छाई और उसकी बुराई पर ईमान

तो तुम इस बात पर ईमान लाओ कि अल्लह तआला अपने अधिक ज्ञान के कारण चीजों को उनके ज़ाहिर होने से पुर्व जानता है, उसे हर चीज़ का संक्षिप्त और तफसीली (विवरण) रूप से ज्ञान है और उसे लौहे महफूज़ में लिख दिया है और संपुर्ण संसार को पैदा किया है :

﴿ اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿٦٢﴾ ﴾ الزمر: ٦٢

" अल्लाह सभी चीज़ों का जन्मदाता है और वही हर चीज़ का संरक्षक (निगराँ) है "

और कायनात में जो भी चीजें जाहिर होती हैं हर एक को अल्लाह तआला जानता है,और उस की इजाज़त भी दी है,अल्लाह तआला का ईशाद है :

﴿ إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَٰهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾ ﴾ القمر: ٤٩

" बेशक हम ने हर चीज़ को एक (निर्धारित) अंदाज़ पर पैदा किया है "

और हर इंसान को इरादः एंव शक्ति दी गयी है जिस के ज़रिये वह किसी काम के करने या उसे छोड़ने को इख्तियार करता है लिहाज़ा जब वह चाहता है तो वुज़ू करके नमाज़ अदा करता है,और जब वह चाहता है तो गुम्राह हो जाता है और ज़िना करता है, इसी वजह से उस का हिसाब लिया जाएगा और उसे बदला दिया जाएगा,और यह जायज़ नहीं है कि वह वाजिबात (अनिवार्य) के छोड़ने और हराम की गयी चीज़ों के करने पर तक़्दीर के ज़रिए दलील पक्ड़े।

वह चीजें जो ईमान के अन्दर ऐब लगाती हैं

वह चीजें जो ईमान के भीतर ऐब पैदा करती हैं दीन का मज़ाक उड़ाना है और यह ईमान से निकाल देता है,अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ قُلْ أَبِاللَّهِ وَءَايَٰتِهِۦ وَرَسُولِهِۦ كُنتُمْ تَسْتَهْزِءُونَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوا۟ قَدْ كَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَٰنِكُمْ ﴾ التوبة: ٦٥ – ٦٦

" कह दीजिए कि अल्लाह उस की आयतें और उस का रसूल ही तुम्हारी हंसी मज़ाक के लिए बाक़ी रह गए हैं? तुम बहाने न बनाओ बेशक तुम अपने ईमान के बाद काफिर हो गए "

इसी प्रकार कुछ लोगों का यह कहना कि इस्लाम पुराना धर्म है जो इस दौर के क़ाबिल नहीं है, या यह कहना कि इस्लाम लोगों को लौटा कर पीछे की ओर ढकेल देता है,या यह कहना कि बनावटी क़ानून इस्लाम से अच्छे हैं,या वह व्यक्ति जो तौहीद की ओर बुलाता है, क़ब्रों और मज़ारों की इबादत नकारता है उसके विषय में कहना कि यह व्यक्ति

एतदाल की ह़द को पार कर गया है,अथवा वहाबी है, या यह कहना कि यह मुसलमानों के बीच तफरीक़ पैदा करता है।

ईमान के भीतर बड़ा अैब पैदा करने वाली चीज़ों में से अल्लाह के उतारे हुये के मुताबिक़ हुक्म न करना है

अल्लाह पर ईमन लाने के तक़ाज़ों में से तमाम बातों और तमाम कामों में झगड़े लड़ाई मालो दौलत अथवा संपूर्ण हुक़ूक़ में उस की शरीअत के मुताबिक़ फैसला करना है, इस लिये हाकिमों के ऊपर अनिवार्य है कि वह अल्लाह के उतारे हुए के मुताबिक़ फैसला करें, और महकूम पर अनिवर्य है कि वह अपना मुक़दमा उस चीज़ की ओर लेजाएं जिसे अल्लाह ने उतारा है, और उस चीज़ की ओर मुक़दमा लेजाना जिसे अल्लाह तआला ने नहीं उतारा है यह ईमान के संग इकट्ठा नहीं हो सक्ता, अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٦٥﴾ ﴾ النساء: ٦٥

" तो क़सम है तेरे रब की ये (तब तक) ईमान वाले नहीं हो सक्ते जब तक कि सभी आपस के इख्तिलाफ में आप को फ़ैसला करने वाला न कुबूल कर लें फिर जो फ़ैसला आप कर दें उन से अपने दिलों में ज़रा भी तंगी और ना खुशी न पायें और फरमाँबरदार की तरह़ कुबूल करलें "

और अल्लाह तआला ने फर्माया :

﴿ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ﴾ المائدة: ٤٤

" और जो अल्लाह की उतारी हुयी वह्य की रौशनी में फैसला न करें वे पूरा और मुकम्मल काफिर हैं "

हर चीज़ में अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ हुक्म करना अनिवार्य है, बेचने खरीदने, चोरी, ज़िना, और

इस के अतिरिक्त में न कि केवल त़लाक़, शादी विवाह और निजी अहवाल में, और जिस ने लोगों के लिए क़ानून बनाया और उस का ये गुमान है कि यह क़ानून अल्लाह के हुक्म से बेनियाज़ करदेगा,या अल्लाह के हुक्म के समान है या अल्लाह के हुक्म से अधिक अच्छा और मुनासिब है तो वह काफिर हैं, निसंदेह वह काफिर हैं, अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ أَمْ لَهُمْ شُرَكَٰٓؤُا۟ شَرَعُوا۟ لَهُم مِّنَ ٱلدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنۢ بِهِ ٱللَّهُ ﴾الشورى: ٢١

" क्या उन लोगों ने ऐसे (अल्लाह के) साझीदार (मुक़र्रर कर रख्खे हैं) जिन्हों ने ऐसे धार्मिक हुक्म मुक़र्रर कर दिये हैं जो अल्लाह के कहे हुये नहीं हैं"

और अल्लाह ने फर्माया :

﴿ أَفَحُكْمَ ٱلْجَٰهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ۚ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ ٱللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٥٠﴾ ﴾ المائدة: ٥٠

" क्या यह लोग फिर से जाहिलियत का फैसला चाहते हैं? और यक़ीन रखने वालों के लिये अल्लाह (तआला) से बेहतर फ़ैसला वाला और हुक्म करने वाला कौन हो सक्ता है ? "

बुख़ारी में है कि जब अल्लाह तआला ने यह नाज़िल फर्माया :

﴿ ٱتَّخَذُوٓا۟ أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَٰنَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ ٱللَّهِ ﴾ التوبة: ٣١

" उन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर अपने आलिमों और धर्माचारियों (दरवेशों) को रब बनाया है "

तो अदी बिन हातिम ने कहा कि: ऐ अल्लाह के रसूल! हम तो उन की इबादत नहीं करते हैं तो आप ﷺ ने फर्माया : क्या वह तुम्हारे लिए उन

चीज़ों को ह़लाल नहीं क़रार देते हैं जिन्हें अल्लाह ने हराम क़रार दिया है तो तुम लोग उन्हें ह़लाल समझते हो और उन चीज़ों को वह लोग ह़राम क़रार देते हैं जिन्हें अल्लाह ने ह़लाल क़रार दिया है तो तुम लोग उन्हें ह़राम समझते हो ? अदी ने कहा जी हाँ, तो आप ﷺ ने फर्माया : यही तो उनकी इबादत है।

ईमान को ऐबदार करने वाली चीज़ों में से काफिरों से दोस्ती करना या मोमिनों से दुश्मनी करना है

निसंदेह काफिरों अर्थात यहूदो नसारा और संपूर्ण अनेकश्वरवादियों से दुश्मनी रखना अथवा उन से प्रेम करने से बचना अनिवार्य है, जैसा कि अल्लाह तआला का इर्शाद हैः

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَا تَتَّخِذُواْ عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَآءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِم بِٱلْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُواْ بِمَا جَآءَكُم مِّنَ ٱلْحَقِّ ﴾ الممتحنة: ١

" हे वे लोगो! जो ईमान लाए हो मेरे और अपने दुशमनों को अपना दोस्त न बनाओ तुम तो दोस्ती से उन की ओर संदेश भेजते हो और वे उस सच का जो तुम्हारे पास आ चुका है इंकार करते हैं "

बल्कि अल्लाह तआला ने बाप दादे और भाइयों से प्रेम करने को ह़राम क़रार दिया है अगर यह सब काफिर हों, अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ لَّا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ ﴾ المجادلة: ٢٢

" अल्लाह (तआला) और क़यामत के दिन पर ईमान रखने वालों को आप अल्लाह और उस के विरोधियों (मुख़लिफों) से प्रेम करते हुये कभी न पायेंगे चाहे वे उन के पिता या उन के पुत्र या उन के भाई या उन के संबंधी (परिवार के क़रीब) ही क्यों न हों "

और इस अर्थ की अधिक आयतें हैं जो काफिरों के अल्लाह का इंकार और उस के दीन के साथ झगड़ना अथवा उसके नेक बंदों के संग दुश्मनी रखना,इस्लाम और मुसलमानों के साथ धोका धड़ी करने के कारण उनसे नफरत एंव दुश्मनी पर दलालत करती हैं,जैसा कि अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ قَدْ بَدَتِ ٱلْبَغْضَآءُ مِنْ أَفْوَٰهِهِمْ وَمَا تُخْفِى صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ ۚ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ ٱلْءَايَٰتِ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾ هَٰٓأَنتُمْ أُولَآءِ تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ بِٱلْكِتَٰبِ كُلِّهِۦ ۖ وَإِذَا لَقُوكُمْ قَالُوٓا۟ ءَامَنَّا وَإِذَا خَلَوْا۟ عَضُّوا۟ عَلَيْكُمُ ٱلْأَنَامِلَ مِنَ ٱلْغَيْظِ ۚ قُلْ مُوتُوا۟ بِغَيْظِكُمْ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ ٱلصُّدُورِ ﴿١١٩﴾ إِن تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَإِن تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا۟ بِهَا ۖ وَإِن تَصْبِرُوا۟ وَتَتَّقُوا۟ لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا ۗ إِنَّ ٱللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴾ آل عمران: ١١٨ – ١٢٠

" उन की दुश्मनी तो खुद उन के मुँह से भी वाज़ेह हो चुकी है और वह जो उन के सीनों में छिपा है वह बहुत ज़्यादा है हम ने तुम्हारे लिये आयतों को बयान कर दिया तुम अक़्लमंद हो (तो फिक्र करो) हाँ तुम तो उन्हें चाहते हो और वे तुम से मुहब्बत नहीं करते तुम पूरी किताब को स्वीकारते हो (वे नहीं स्वीकार करते फिर मुहब्बत कैसी?) ये तुम्हारे सामने तो अपने ईमान का इक़रार करते हैं परन्तु तन्हाई में मारे क्रोध के अपनी उँग्लियों को चबाते हैं कह दो कि अपने ही क्रोध में मरो अल्लाह तआला दिलों के भेद को अच्छी तरह जानता है, यदि तुम्हें भलाई प्राप्त हो तो इन्हें बुरा लगता है हाँ अगर बुराई पहुँचे तो प्रसन्न होते हैं तुम अगर सब्र करो और परहेज़गारी करो तो उनका मक्र तुम्हें कुछ हानि न पहुँचाएगा अल्लाह तआला ने उनके करमों को घेर रख्खा है "

और यहूदो नसारा की मौजूदः हालत हम से छिपी नहीं है, इस्लाम के ख़िलाफ उन की तद्बीर, मुसलमानों से लड़ना, इस्लाम से नफरत दिलाना और

इस्लाम के रास्ते में रोड़ा अटकाने के लिये अधिकतर मालो दौलत खर्च करना।

और आज कल कुछ मुसलमानों का काफिरों से दोस्ती की शक्लों में से बिना द'अवतो तब्लीग़ के इरादः से उन से मेल जोल बढ़ाना, या अपने शहरों में उन्हें बसाना या बिना ज़रूरत उन के यहाँ सफर करना,पहनाव में ज़ाहिरी रूप से अथवा ज़िंदगी व्यापन करने के तरीक़े में उन के जैसा करना, या बिना ज़रूरत उन की भाषा में बात चीत करना।

ईमान के भीतर बड़ा अैब लगाने वाली चीजों में से नबी ﷺ के संगतियों की बुराई करना उन को बुरा भला कहना अथवा नबी ﷺ के घराने की बुराई करना है

हम सहाबाए कराम से मुहब्बत करते हैं, उन में से किसी की भी मुहब्बत में हम ह़द से नहीं बढ़ते न तो अली की मूहब्बत में और न उन के अतिरिक्त की मुहब्बत में और न ही उन में से किसी से बेज़ार

हैं, और हम उन से नफ़रत करते हैं जो सहाबा से नफ़रत करते हैं और हम सहाबा का ज़िक्र केवल भलाई के साथ करते हैं, अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ وَٱلسَّٰبِقُونَ ٱلْأَوَّلُونَ مِنَ ٱلْمُهَٰجِرِينَ وَٱلْأَنصَارِ وَٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوهُم بِإِحْسَٰنٍ رَّضِىَ ٱللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا۟ عَنْهُ ﴾ التوبة: ١٠٠

" और जो मुहाजिर (मक्का से मदीना आये हुये लोग) और अंसार (मदीना के मूल निवासी) पहले हैं और जितने लोग बिना किसी ग़र्ज़ से उन के पैरोकार हैं अल्लाह उन सभी से खुश हुआ और वे सब अल्लाह से खुश हुए "

सहाबए कराम के इख्तिलाफ और आपसी लड़ाइयों के विषय में अहले सुन्नत वल जमाअत का मज़हब खामोशी इख्तियार करना है, वह इंसान थे ग़लती करते थे और दुरुस्त करते थे और जब अल्लाह तआला ने इस फित्ने में पड़ने से हमारी तलवारों की हिफाज़त की है तो हमें चाहिये कि हम अपनी

ज़ुबानों को उस में पड़ने से बचायें, और हम कहते हैं कि वह इंसान थे उन का रब क़यामत के दिन उन्हें इकट्ठा करेगा और उन के बीच फ़ैसला करेगा।

और अल्लाह के रसूल ﷺ के पश्चात हम ख़िलाफत अबु बक्र ؓ के लिये साबित करते है उन को फज़ीलत देते हुये, और सारी उम्मत पर उन्हें मुक़द्दम करते हुये, फिर उमर ؓ ,फिर उस्मान ؓ ,फिर अली ؓ के लिये।

ईमान के भीतर अैब लगाने वाली चीज़ों में से कुछ मुसलमानों का इन बिद्अतों का ईजाद करना है जिन्हें वे अल्लाह की नज़्दीकी का कारण समझते हैं :

जैसे जश्ने मीलादुन्नबी मनाना और मीलाद के बीच नबी करीम ﷺ के लिए खड़े होना और उन पर सलाम पढ़ना या आप के अलावा औलिया और नेक लोगों के लिए जश्ने मीलाद मुन्अक़िद करना, यह सारी चीजें दीन के भीतर बिद्अत हैं जिन्हें न तो नबी करीम ﷺ ने किया और न सहाबए कराम ने

किया, और नबी करीम ﷺ से यह साबित है कि आपने फरमाया:

(من أحدث في أمرنا هذا ما ليس فيه فهو رد) (متفق عليه)

" जिस ने हमारे इस हुक्म में ऐसी चीज़ ईजाद की जो उस में से नहीं है तो वह मरदूद है "

और फरमाया :

(كل محدثة بدعة وكل بدعة ضلالة) (ابوداود)

" (दीन में) हर नई ईजाद की हुई चीज़ बिद्अत और है हर बिद्अत गुमराही है "

और अल्लाह तआला का इर्शाद है:

﴿ ٱلْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِى وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلْإِسْلَٰمَ دِينًا ﴾ المائدة: ٣

" आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमतें पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम दीन को पसंद कर लिया "

और इन जैसी मीलादों का ईजाद करने से पता चलता है कि अल्लाह तआला ने दीन को पूरा नहीं किया यहाँ तक कि बाद के लोगों ने आकर ऐसी इबादतें ईजाद कीं जिनके विषय में उन का गुमान था कि यह उन्हें अल्लाह के क़रीब करदेती हैं,जब्कि यह अल्लाह और उस के रसूल पर एतराज़ है,अगर जश्ने मीलाद अल्लाह के पसंदीदः दीन में से होता तो रसूल ﷺ उम्मत को इस की ख़बर दिए होते।

ज्ञानियों ने जश्ने मीलाद को स्पष्ट रूप से नकारा है क्योंकि यह नई और गढ़ी हुई इबादत है,ख़ास तौर पर जब रसूल ﷺ की ज़ात में ग़ुलू किया जारहा हो,औरतों का मर्दों के संग गुडमुड होना या गाने,बजाने की चीज़ें इस्तेमाल की जारही हों और कभी कभी उस में रसूल ﷺ से दुआ माँग कर आप से फर्याद और मदद त़लब करके और इस

बात का अक़ीदः रख कर कि आप को छिपी हुयी चीज़ों का ज्ञान था और इस जैसी कुफ्र की बातें करके महा शिर्क में पड़ जाते हैं जैसा कि कुछ लोग बूसीरी के यह अश्आर गुनगुनाते हैं :

ياأكـــرم الخلق مالي من ألـوذ به   سـواك عند الحـادث العـــمم

إن لم تكن آخذا يوم المعـاد يدي   صفـحا وإلا فقل يا زلة القـدم

فإن من جـودك الدنــياوضــرتها   ومـن علـومك اللـوح والقـــلم

हे सृष्टी में सब से मोअज़्ज़ज (प्रतिष्ठित) हस्ती

अधिकतर परेशानियों के वक़्त मेरा आप के सिवाय कौन है,जिसकी मैं पनाह ढूडूँ।

यदि आप ने क़यामत के दिन मेरा हाथ न थामा एवं मेरी मग़फिरत न की तो तू कहे हाय मेरी बर्बादी।

क्योंकि लोक और प्रलोक आप की सख़ावत का नतीजः हैं और आप को तो लौह़ और क़लम का भी ज्ञान है।

ग़ैब अर्थात छिपी हुई चीजों का ज्ञान, और क़यामत के दिन क्षमा करना, लोक और प्रलोक में फ़ैसला करना, सहीह नहीं है परन्तु उस हस्ती के लिए जिस के हाथ में ज़मीनों आस्मानों की बादशाहत है,और यह सब जश्ने मीलादुन्नबी या जश्ने औलिया इत्यादि में होती हैं।

अगर कहा जाए कि इस जैसी मीलादों में नबी ﷺ का ज़िक्र और आप की सीरत पढ़ी जाती है तो हम कहेंगे कि यह अच्छी बात है परन्तु रसूल और आप की सीरत का ज़िक्र पूरे साल बिना किसी मुतअय्यन वक़्त की तहदीद के संभव है लिहाज़ा आप का ज़िक्र मिम्बरों पर या पाठों में या आम महफ़िलों इत्यादि में किया जाए।

और अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ فَإِن تَنَٰزَعۡتُمۡ فِي شَيۡءٖ فَرُدُّوهُ إِلَى ٱللَّهِ وَٱلرَّسُولِ ﴾ النساء: ٥٩

" फिर अगर किसी बात में इख्तिलाफ करो तो उसे अल्लाह (तआला) और रसूल की तरफ लौटाओ "

हम ने जश्ने मीलाद को अल्लाह की किताब की ओर लौटाया तो हमने पाया कि अल्लाह की किताब हमें रसूल की पैरवी का हुक्म देती है और हमें बताती है कि दीन कामिल है।

और हमने मीलाद की महफिलों को रसूल ﷺ की सुन्नत की ओर लौटाया तो सुन्नत में हम ने यह नहीं पाया कि आप ने स्वयं इसे किया हो और न ही उसका हुक्म दिया है और न ही आप के सहाबा ने ऐसा किया है तो हमें इस बात का ज्ञान हुआ कि यह दीन में से नहीं है बल्कि यह गढ़ी हुई बिद्अतों में से है और यहूदो नसारा की ईदों के साथ मुशाबहत है और किसी बुद्धिमान व्यक्ति के लिए मुनासिब नहीं है कि इसे अधिक लोगों के करने की वजह से धोका में पड़ जाए।

अल्लाह तआला फरमाता है :

﴿ وَإِن تُطِعْ أَكْثَرَ مَن فِي ٱلْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ ﴾
الأنعام: ١١٦

" यदि आप धरतीवासियों में ज़्यादातर की पैरवी करेंगे तो वह आप को अल्लाह के रास्ते से बहका देंगे "

अजीब बातें (विचित्ररायें)

कुछ लोग गढ़े हुये जश्नों में हाज़िर होने की कोशिश करते हैं और जमाअतों से पीछे रहते हैं, और कुछ लोगों का खयाल है कि नबी ﷺ मीलाद में हाज़िर होते हैं इसी वजह से आप को मरहबा कहने के लिए लोग खड़े होजाते हैं जब्कि यह झूट और नादानी है क्योंकि नबी करीम ﷺ अपनी क़ब्र में हैं क़यामत से पहले उस में से नहीं निकलेंगें और आप की रूह सम्मान वाले घर के अन्दर आप के रब के पास इल्लीन में है, आप ﷺ ने इर्शाद फर्माया :

(أنا أول من ينشق عنه القبر يوم القيامة) مسلم

" मैं पहला वह व्यक्ति हूँगा जिसकी क़ब्र में कयामत के दिन दरार पैदा होगा "

रही बात नबी ﷺ पर दरूद की तो यह अफ़्ज़ल तरीन कार्यों में से है जिस से अल्लाह तआला की नज़्दीकी हासिल होती है, अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦ ﴾ الأحزاب: ٥٦

" अल्लाह (तआला) और उस के फरिश्ते इस नबी पर दरूद भेजते हैं, हे ईमान वालो! तुम (भी) इन पर दरूद भेजो और ज़्यादा सलाम भी भेजते रहा करो "

हम सब जानते हैं कि किसी बंदे (दास) का ईमान कामिल नहीं हो सक्ता यहाँ तक कि वह रसूल ﷺ से मोहब्बत (प्रेम) और आप को सम्मान दे, और आप के सम्मान एंव आदर में से आप को ऐसा

इमाम स्वीकार करना है जिस की पैरवी की जाए, इस लिए हम उन इबादतों से आगे नहीं बढ़ सक्ते जिन्हें आप ने मश्रू'अ क़रार दिया है,अल्लाह (तआला) का इर्शाद है :

﴿ قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ ٱللَّهَ فَٱتَّبِعُونِى يُحْبِبْكُمُ ٱللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣١﴾ ﴾ آل عمران: ٣١

" कह दीजिए अगर तुम अल्लाह (तआला) से मुहब्बत करते हो तो मेरी इत्तेबा करो खुद अल्लाह (तआला) तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ कर देगा और अल्लाह (तआला) बहुत बख्शने वाला रहम करने वाला है "

ज़ाहिरी बिद्अतों में से सत्ताइस्वीं रमज़ान की रात्रि में जश्न मनाना है

नबी करीम ﷺ का तरीकः रमज़ान के अन्दर अधिकतर इबादत का था और अन्तिम दहाई में आप

की कोशिश अधिक बढ़ जाती थी,आप ﷺ ने इर्शाद फर्माया जैसा कि बुखारी एवं मुस्लिम में आया है :

(من قام رمضان إيمانا واحتسابا غفر له ما تقدم من ذنبه)

(ومن قام ليلةالقدر إيمانا واحتسابا غفر له ما تقدم من ذنبه)''متفق عليه''

" जिस ने रमज़ान में ईमान और सवाब की उम्मीद रख कर क़ियाम किया तो उस के पिछले गुनाह क्षमा कर दिए जाएंगें। और जिस ने शबे क़द्र में ईमान और सवाब की उम्मीद रख कर क़ियाम किया तो उस के पिछले गुनाह क्षमा कर दिए जाएंगें "

यह रसूलुल्लाह ﷺ का तरीकः था, रमज़ान और शबे कद्र में और सत्ताइस्वीं रात को जश्न मनाना इस बुनियाद पर कि यही शबे कद्र है तो यह रसूलुल्लाह ﷺ के तरीक़े के ख़िलाफ़ है लिहाज़ा इस रात में जश्न मनाना बिद्अत है ख़ास तौर पर जब्कि

शबे क़द्र कभी सत्ताइस्वीं को होती है और कभी इस के अतिरिक्त रातों में।

बिद्अतों में से इस्रा (मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक की यात्रा) और मेराज की रात का जश्न मनाना है।

निसंदेह इस्रा और मेराज रसूलुल्लाह ﷺ की सत्यता की दलीलों में से हैं, और इस्रा व मेराज किताबो सुन्नत से साबित हैं, वह रात जिस में इसरा और मेराज नसीब हुई सह़ीह़ ह़दीसों में उस का तअय्युन (निश्चय) वारिद नहीं है न रजब में और न रजब के अतिरिक्त में।

और यदि उस का तअय्युन साबित होता तब भी उस में किसी इबादत को ख़ास करना अथवा जश्न मनाना जायज़ न होता क्योंकि नबी ﷺ और आप के सहाबा ने इस में जश्न नहीं मनाया और न किसी चीज़ के लिए इस रात को ख़ास किया।

और नबी करीम ﷺ ने रिसालत को पहुँचा दिया और अमानत को अदा कर दिया है,यदि इस रात की कोई त'अज़ीम (सम्मान) और इस में जश्न मनाना अल्लाह के दीन में से होता तो आप हमारे लिए उसे बयान करते।

बिद्अतों में से पंदरः शअबान की रात में जश्न मनाना और इस दिन को रोजः रखने के लिये ख़ास करना है :

इस पर भरोसः के क़ाबिल कोई दलील नहीं है और इस की फज़ीलत के विषय में ज़ईफ हदीसें आई हैं जिन पर भरोसः करना जायज़ नहीं है।

और जो हदीसें इस रात के भीतर नमाज़ पढ़ने के विषय में आई हैं वह सब गढ़ी हुई हैं जैसा कि इब्ने रजब ने इस पर तंबीह की है और इब्ने वज़्ज़ाह ज़ैद बिन अस्लम से रिवायत करते हैं,उन्हों ने कहा कि हम ने अपने मशायख़ और फुक़हा में से किसी को पंदरहवें श'अबान की ओर मुतवज्जेः होते नहीं देखा।

आख़िरी बात

उलमा (ज्ञानियों) ने कहा है कि मुसलमान बहुत सारी उन इस्लाम को तोड़ने वाली चीज़ों के जरिये इस्लाम से निकल जाता है जो उस के ख़ून और उस के धन को ह़लाल करदेती हैं,और उन में से सब से अधिक ख़तरनाक और सब से ज़्यादा आम दस हैं :

(१) अल्लाह तआला की इबादत में शिर्क करना जैसा कि " तफसील " गुज़री।

(२) जिसने अपने और अल्लाह के बीच ऐसे वास्तों (माध्यमों) को इख़्तियार किया जिन को वह पुकारता है, उन से सिफारिश माँगता है और उन पर भरोसः करता है तो मुत्तफिकः तौर पर (सब के नज़्दीक) उस ने कुफ्र किया।

(३) जिस ने मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) को काफ़िर न क़रार दिया अथवा उनके कुफ्र में संदेह किया या उन के धर्म को सह़ीह़ क़रार दिया, लिहाज़ा हर वह व्यक्ति दीने इस्लाम को अपना धर्म नहीं बनाता वह काफ़िर है चाहे वह ईसाई हो अथवा यहूदी,बूज़ी हो या उस के अतिरिक्त, क़रीब का हो या दूर का।

(४) जिस ने यह एतक़ाद रख्खा कि नबी करीम ﷺ के अतिरिक्त दूसरों का तरीकः आप ﷺ के तरीक़े से अधिक कामिल है या आप के अतिरिक्त दूसरों का फ़ैसलः आप के फ़ैसले से उत्तम है जैसे वह व्यक्ति शैतानों के फ़ैसले को आप के फ़ैसले पर फौक़ियत देता है तो ऐसा व्यक्ति काफिर है,अथवा इस में वह व्यक्ति भी दाखिल है जिस का यह एतक़ाद हो कि वह निज़ाम और क़ानून जिसे लोगों ने रिवाज दिया है वह इस्लामी शरीअत से उत्तम या उस के बराबर हैं या यह कि उन के पास मुक़दमें लेजाना जायज़ है अगरचे उस का यह विश्वास हो कि शरीअत का फ़ैसला उत्तम है या यह ए'तक़ाद रखे कि इस्लाम के निज़ाम की तत़बीक़ बीसवीं शताब्दि के लिये मुनासिब नहीं है या मुसलमानों के पीछे रह जाने का यही कारण है, या यह कि अपने रब के साथ तअल्लुक़ क़ायम करने के संग खास है बिना इसके कि वह (इस्लामी निज़ाम) जीवन के दूसरे मुआमिलों में दखल अंदाज़ हो।

इसी प्रकार जो व्यक्ति यह विश्वास रखखे कि अल्लाह का फैसलः चोर का हाथ काटने अथवा शादी शुदः ज़िानाकार को रज्म करना (पत्थर से मार कर हलाक करना) इस युग के मुनासिब नहीं है।

और इसी प्रकार हर वह व्यक्ति जिस का यह ए'तकाद (विश्वास) हो कि मुआमलात, हुदूद अथवा इस के अतिरिक्त में अल्लाह की शरीअत के अलावः के ज़रिये फैसलः करना जायज़ है यद्यपि उस का यह विश्वास न हो कि यह शरीअत के फैसले से उत्तम है,क्योंकि उसने उस के ज़रिए मुत्तफिकः तौर पर अल्लाह द्वारा ह़राम की हुई चीजों को जायज़ समझा, और हर वह व्यक्ति जिस ने अल्लाह द्वारा ह़राम की हुई चीजों को जायज़ समझा जो ज़रूरी तौर पर दीन में से हैं जैसे ज़िना, शराब,ब्याज़ और अल्लाह की शरीअत के अतिरिक्त के ज़रिए फैसले करना तो ऐसा व्यक्ति तमाम मुसलमानों के नज़्दीक काफिर है।

(५) जिस ने रसूल की लाई हुई किसी भी चीज़ को ना पसंद किया, और अगर उस पर अमल किया तो

निसंदेह उसने कफ़्र किया अल्लाह तआला के इस फर्मान की वजह से :

﴿ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٩﴾ ﴾ محمد: ٩

" यह इस लिए कि वह अल्लाह की नाज़िल की हुई चीज़ से नाराज़ हुए तो अल्लाह (तआला) ने भी उन के अमल बरबाद कर दिए "

(६) जिसने रसूल ﷺ की लाई हुई शरीअत में से किसी भी चीज़ या उस के बदले या उस के अज़ाब का मज़ाक़ उड़ाया तो उसने कुफ़्र किया, और इस पर दलील अल्लाह तआला का यह क़ौल है:

﴿ لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ﴾ التوبة: ٦٦

" तुम बहाने न बनाओ बेशक तुम अपने ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गए "

(७) जादू है जिस में फेरना और मायल करना होता है, फेरने का अर्थ यह है कि पती पत्नी में से किसी एक के लिये ऐसा अमल करे जिस के कारण वह एक दूजे को नापसंद करने लगें, और पती पत्नी में से किसी एक के लिये ऐसा अमल करे जिस के

कारण वह एक दूजे से मोहब्बत करने लगें,तो जिस ने ऐसा किया अथवा उसे पसंद किया तो उस ने कुफ़्र किया, और दलील अल्लाह तआला का फर्मान है :

﴿ وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّىٰ يَقُولَآ إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ﴾ البقرة: ١٠٢

" वह दोनों भी किसी व्यक्ति को उस वक़्त तक न सिखाते थे जब तक कि यह न कह दें कि हम तो एक इम्तेहान हैं तू कुफ्र न कर "

(८) मुश्रिकों की सहायता और मुसलमानों के खिलाफ उन की मदद करनी है दलील अल्लाह तआला का फ़र्मान है :

﴿ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَإِنَّهُۥ مِنْهُمْ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴾ المائدة: ٥١

" तुम में से जो कोई भी इन से दोस्ती करे तो वह उन में से है, ज़ालिमों को अल्लाह तआला कभी भी हिदायत नहीं देता "

(९) जिस ने यह ए'तक़ाद रख्खा कि कुछ लोगों के लिए मोहम्मदी शरीअत से निकलने की छूट है जिस प्रकार खिज़्र عليه السلام के लिए मूसा की शरीअत से

निकलने की गुंजाइश थी और जैसा कि कुछ सूफी लोग इस बात का विश्वास रखते हैं कि वह शर्ई चीज़ों के मुकल्लफ नहीं हैं तो वह अल्लाह के इस फर्मान की वजह से काफिर हैं :

﴿ وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ ٱلْإِسْلَٰمِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِى ٱلْءَاخِرَةِ مِنَ ٱلْخَٰسِرِينَ ﴿٨٥﴾ ﴾ آل عمران: ٨٥

" और जो (इंसान) इस्लाम के सिवाय किसी दूसरे दीन को तलाश करे उस का दीन कुबूल नहीं होगा और वह आखिरत में घाटा उठाने वालों में होगा "

(१०) अल्लाह के दीन से मुकरना, न तो उसे सीखे और न ही उस पर अमल करे,और इस पर दलील अल्लाह तआला का यह कथन है :

﴿ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِۦ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَآ ۚ إِنَّا مِنَ ٱلْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾ ﴾ السجدة: ٢٢

" और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन है जिसे अल्लाह की आयतों से भाषण (वाज़) दिया गया फिर

भी उस ने उन से मुख फेर लिया निश्चय हम भी पापियों से बदला लेने वाले हैं "

विचार का छण

निःसंदेह बड़ा जुर्म और बड़ी मुसीबत आदमी का नमाज़ छोड़ना है नमाज़ के छोड़ने वाले शैतान की सहायता करने वाले और अल्लाह के शत्रू हैं,मुसलमानों के मुखालिफ और उन काफिरों के भाई हैं जिनका हश्र फिरऔन और हामान के साथ होगा और उनके संग नर्क में पल्टियाँ खाएंगे,मुस्लिम की रिवायत है नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फर्माया :

(بين الرجل وبين الكفرأوالشرك ترك الصلاة)

" आदमी और कुफ्र अथवा शिर्क के बीच (हद्दे फासिल) नमाज़ का छोड़ देना है "

इमाम तिर्मिज़ी और इमाम हाकिम के नज़्दीक यह ह़दीस सह़ीह है जिसे अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ ने अबुहुरैरः رضي الله عنه से रिवायत की है,वह कहते हैं कि नबी करीम ﷺ के सहाबः नमाज़ के अलावः किसी कार्य के छोड़ने को कुफ्र नहीं समझते थे।

शैख इब्ने उसैमीन फर्माते हैं कि जब हम ने नमाज़ छोड़ने वाले व्यक्ति पर कुफ्र का हुक्म लगाया तो यह इस बात का तक़ाज़ा करता है कि उस पर दीन से फिर जाने वालों जैसा हुक्म लागु हो, तो उस से शादी विवाह करना जायज़ नहीं है, यदि उस का निकाह इस हाल में हुआ कि वह नमाज़ नहीं पढ़ता है तो निकाह सहीह नहीं है और अगर उस ने निकाह करने के पश्चात नमाज़ पढ़ना छोड़ दिया तो उस का निकाह टूट जाएगा और उस के लिए पत्नी हलाल न रहेगी, और जब वह ज़िबह करे तो उस का ज़बीहा न खाया जाए क्यों कि वह हराम है, और वह मक्का में दाख़िल न हो,अगर उस के नातेदारों में से किसी का निधन हो जाये तो उसे मीरास का कोई हक़ नहीं है और जब वह मर जाए तो न उसे स्नान कराया जाए और न कफ़्नाया जाए, ने उस की नमाज़े जनाज़: पढ़ी जाए और न उसे मुसलमानों के संग दफ़्नाया जाए, उस का हश्र क़यामत के दिन काफिरों के संग होगा वह जन्नत में नही जाएगा, और न उस के घर वालों के लिए

ह़लाल है कि उस के लिए कृपा और क्षमा की दुआ माँगें क्योंकि वह काफिर है और निधन के समय नमाज़ छोड़ने वाले की हालत भयानक और अधिक बुरी है।

इब्ने क़य्यिम ने लिख्खा है कि एक मरने वाला व्यक्ति खताकार और गुनहगार था मौत उसके निकट देखकर उस के इर्द गिर्द के लोग घबरागए और उस के सामने से परे हट गए,और उसे अल्लाह की याद दिलाने लगे,अथवा " लाइलाह इल्लल्लाह " की तल्क़ीन करने लगे और वह अपने आँसुओं को रोक रहा था,और जब उस का पराण निकाला जाने लगा तो ज़ोर से चिल्लाया और कहा कि मैं "लाइलाह इल्लल्लाह " कहता हूँ परन्तु क्या " लाइलाह इल्लल्लाह " मुझे लाभ पहुँचाएगा? पराण उस के हलक़ में अटकने लगी यहाँ तक कि वह मर गया।

और आमिर बिन जुबैर मौत के बिस्तर पर पड़े हुए जीवन की साँसें गिन रहे थे उनके किनारे उन के घर वाले रोरहे थे इस बीच जब्कि वह मौत से लड़रहे थे मुअज़्ज़िन को मग़रिब की अज़ान देते हुए

सुना, उन का पराण उन के हलक़ में अटक रहा था,पराण निकालने में सख़्ती हो रही थी उन की परेशानी अधिकतर थी,तो जब उन्हों ने अज़ान की आवाज़ सुनी अपने निकट बैठे हुए लोगों से कहा कि मेरा हाथ पक्ड़ो, फिर दो आदमियों के बीच उन्हें उठाया गया और उन्हों ने इमाम के साथ एक रक'अत नमाज़ पढ़ी फिर सज्दे की हालत में उन का निधन होगया, जी हाँ सज्दे की हालत में निधन हुआ।

अता बिन साइब कहते हैं कि हम अबु अब्दूर्रहमान अल सुलमी के पास आए , वह बीमारी की हालत में मस्जिद के भीतर थे कि अचानक उन की हालत बिगड़ गई और उन का पराण निकाला जाने लगा तो हमें उन की हलाकत का डर हुआ और हम ने उन से कहा कि यदि आप चाहें तो अपने बिस्तर पर चले जाएं क्योंकि वह अधिक मुलायम और आराम दह है तो उन्हों ने यद्यपि परेशानी सहते हुए कहा कि फलाने ने मुझ से कहा कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फर्माया :

" तुम में से कोई व्यक्ति उस की गिन्ती नमाज़ियों में होती रहती है जब तक वह अपनी नमाज़ पढ़ने के स्थान में बैठ कर नमाज़ का प्रतिक्षा करे "

तो मैं चाहता हुँ कि मेरा पराण इसी हालत में निक्ले। तो जिसने नमाज़ क़ायम की और अपने रब की फरमाँबरदारी पर सब्र किया तो उस का अन्त अल्लाह की रज़ामंदी की हालत में होगा।

स'अद पुत्र मुआज़ ﷺ नेक, फरमाँवर्दार इबादत करने वाले और ख़ाक़्सार थे रात्रि के अन्तिम चरण ने उन के रोने के कारण उन्हें पहचान लिया था और दिन ने उन्हें नमाज़ और क्षमा माँगने के कारण पहचान लिया था।

जंगे बनी कुरैज़: में आप ज़ख्मी होगए तो एक लम्बे समय तक बीमार रहे फिर उन का निधन हुआ।

जब नबी करीम ﷺ को उन के मृत्यु की सुचना दीगई तो आप ने अपनो सहाबा से फर्माया : उन के पास चलो, जाबिर ﷺ कहते हैं कि हम आप ﷺ क संग चल पड़े आप अधिक तेज़ी से चल रहे थे यहाँ तक कि हमारे जूतों के तस्मे टुक्ड़े टुक्ड़े होगए और

हमारी चादरें गिरगईं, सहाबा ने आप ﷺ के अधिक तेज़ चलने पर आश्चर्य ज़ाहिर किया तो आप ﷺ ने फर्मायाः कि मुझे इस बात का डर है कि फ़रिश्ते कहीं हमसे आगे बढ़ कर उन के पास न पहुँच जायें और उन को स्नान करायें जैसा कि हन्ज़लः को स्नान कराया था, आप उन के घर पहुँचे तो देखा कि उन का निधन हो गया था और उन के अहबाब उन्हें स्नान करवारहे थे और उन की माँ रो रही थीं तो नबी करीम ﷺ ने फर्माया : हर रोने वाली झूटी है सिवाय स'अद की माँ के फिर उन्हें उठा कर उन की क़ब्र तक ले गए और नबी करीम ﷺ ने निकल कर उन्हें रुख़्सत किया, लोगों ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! हम ने इन से अधिक हल्की मय्यत नहीं उठाई तो आप ﷺ ने फर्मायाः उन्हें हल्का फुल्का होने से कौन सी चीज़ रोक सक्ती है जब्कि इतने अधिक फरिश्ते उतरें हैं कि आज से पूर्व इतना कभी न उतरे जिन्हों ने तुम्हारे साथ उन्हें उठा रख्खा था, क़सम है उस हस्ती की जिस के हाथ में मेरा पराण

है निसंदेह फरिश्ते स'अद के पराण से खुश हैं और उन के लिये अर्श भी हिल गया :

﴿ إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّٰتُ ٱلْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾ ﴾ الكهف: ١٠٧

" जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम भी किये बेशक उन के लिये फिरदौस (जन्नत का सब से ऊँचा मुक़ाम) के बाग़ों में स्वागत है "

महा पापों में से ज़कात न देना है

ज़कात इस्लाम का तीसरा रुक्न है (स्तम्भ) है सहीह मुस्लिम में है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फर्माया : नहीं है कोई सोने चाँदी वाला व्यक्ति जिस का हक़ (जकात) नहीं देता है परन्तु क़यामत के दिन उस के लिए आग की तख़्तियाँ बनाई जाएंगी जिसे जहन्नम की आग में गर्म किया जाएगा,फिर उस की करवट, पेशानी,और पीठ को दागा जाएगा जब तख़्तियाँ ठँडी पड़ जाएंगी तो उन्हें दोबारा गर्म किया जाएगा उस दिन के भीतर जो पचास हज़ार साल के बराबर है यहाँ तक कि लोगों के बीच फ़ैसला कर दिया जाए

और वह अपना रास्तः जन्नत अथवा जहन्नम की ओर देख ले।

और इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है कि आप ﷺ ने फर्माया : जिस व्यक्ति को अल्लाह ने धन दिया और उस ने उस की ज़कात न निकाली तो क़यामत के दिन उसे गंजा साँप बना दिया जाएगा जिस की आँख के ऊपर दो काले नुक्ते होंगे जिसे क़यामत के दिन उस के गले में डाल दिया जाएगा फिर वह उस के दोनो जब्ड़े पक्ड़ेगा और कहेगा कि मैं तेरा धन हूँ मैं तेरा खज़ाना हूँ फिर नबी करीम ﷺ ने यह आयत पढ़ी :

﴿ وَلَا يَحْسَبَنَّ ٱلَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَآ ءَاتَىٰهُمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ هُوَ خَيْرًا لَّهُم ۖ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۖ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا۟ بِهِۦ يَوْمَ ٱلْقِيَـٰمَةِ ﴾ آل عمران: ١٨٠

" और जिन को अल्लाह ने अपनी कृपा (फ़ज़्ल) से (धन) दिया है और वह उस में कंजूसी करते हैं तो इसे अच्छा न समझें बल्कि वह उन के लिये बहुत बुरा है उन्होंने जिस (धन) में कंजूसी की है क़यामत के दिन उन के (गले का) का तौक़ होगा "

अन्तिम बात

ऐ मेरे मोअज़्ज़ज़ भाई और मोअज़्ज़ज़ बहन!

ऐ हमारी गिरोह! अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात मानो और उस पर ईमान लाओ वह तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और तुम को हानिकारक अज़ाब से बचा लेगा।

अल्लाह की क़सम! मैं आप का भला चाहने वाला हुँ और यह हक़ (सत्य) निसंदेह आप के सामने ज़ाहिर होगया और आप को इस बात का भी ज्ञान होगया कि दीन (धर्म) एक है न कि अनेक तो वह अल्लाह है जिस के अतिरिक्त कोई सत्य उपासनिय नहीं जो जीवित है थामने वाला है अकेला है और बेनियाज़ है अपने संग किसी को ना पसंद किए जाने को पसंद नहीं करता, और आप उन लोगों में से न हो जाएं जो यह कहते हैं :

﴿ إِنَّا وَجَدْنَآ ءَابَآءَنَا عَلَىٰٓ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰٓ ءَاثَٰرِهِم مُّقْتَدُونَ ﴿٢٣﴾ ﴾

الزخرف: ٢٣

" हम ने अपने पुर्वजों (बुजुर्गों) को (एक डगर पर और) एक धर्म पर पाया और हम तो उन्हीं के पद चिन्हो (निशाने क़दम) की पैरवी करने वाले हैं "

बल्कि आप यह कहें कि हम फर्माँबर्दार, पैरवी करने वाले और एकेश्वरवादी हैं,आप उन लोगों की अधिक्ता से धोका न खाएं जो क़ब्रों के पास ज़िबह करते हैं या उस के निकट अल्लाह तआला के साथ शिर्क करते हैं, और आप उन दलीलों और कहानियों की अधिक्ता पर न जाएं जिसे यह लोग अपने कब्रों में दफन किये हुए मृतकों के विषय में गढ़ते हैं कि यह परेशानियाँ दूर करते हैं और दुआएं क़बूल करते हैं।

والله لن يصلوا إليك بجمعـــــهم   حتي أوسد في التراب دفينا

ودعوتني وعلمت أنـك نـاصحي   فلقد صدقت وكنت فيناأمينا

وعرضـت دينا قد عرفت بـــأنـه   من خير أديان البرية ديـــنا

لولا الملامة أوحـــــذار مسبة	لوجدتني سمحا بذاك مبينا
وعرضت دينا قد عرفت بـأنـه	من خير أديان البرية ديـنا
لولا الملامة أوحـــــذار مسبة	لوجدتني سمحا بذاك مبينا

क़सम है अल्लाह की लोग अपनी गिरोह के साथ आप तक कदापि उस वक़्त तक नहीं पहुँच सक्ते जब तक कि हमें मिट्टी में दफ़्न न कर दिया जाए, आप ने मुझे (इस्लाम धर्म) की ओर बुलाया और मुझे अच्छी तरह इस बात का ज्ञान है कि आप मेरे खैर ख्वाह हैं क्योंकि निसंदेह आप हम में सत्य और अमानत दार हैं,और आप ने ऐसा दीन पेश किया जिस के विषय में मुझे ज्ञान है कि यह संपूर्ण धर्मों में सब से उत्तम है,यदि मुझे मलामत और बुरा भला कहे जाने का डर न होता तो आप मुझे खुले दिल से इस दीन की पैरवी करने वाला पाते।

परन्तु उन्हें हक़ की पैरवी करने से बाप दादा की मुखालिफत के डर ने रोक दिया,बल्कि उन्हें देखिए कि वह मौत के बिस्तर पर पड़े हैं, अधिक बुढ़ापा के कारण हड्डियाँ महीन हो गई हैं, शरीर कम्ज़ोर

होगया, मौत उन के निकट पहुँच गई है,और नबी करीम ﷺ उन के सिर के पास खड़े हो कर अपने आँसुवों को रोक रहे हैं और कह रहे हैं ऐ मेरे चचा " लाइलाह इल्लल्लाह " कह लीजिए और उन के सिर के पास कुरैश के काफ़िर भी खड़े हैं जब जब उन्हों ने कल्मए तौहीद के उच्चारण का इरादा किया तो काफिरों ने उन से कहा : क्या आप अब्दुल मुत्तलिब के दीन से फिर रहे हैं? क्या आप अब्दुल मुत्तलिब के दीन से फिर रहे हैं? और लगातार नबी करीम ﷺ शहादतैन पढ़ने की ओर मुतवज्जेः कर रहे हैं और लोग बाप दादा के दीन पर बाक़ी रहने पर उभार रहे हैं यहाँ तक कि अबु त़ालिब का निधन होगया और वह अपने बाप दादा के दीन पर थे अर्थात मुर्तियों की पूजा और अधिकतर ज्ञान रखने वाले बादशाह के संग शिर्क करने पर।

अबु तालिब का निधन होगया इस धरती से चले गए, उन का ठिकाना जहन्नम है जो अधिक बुरी लौटने की जगह है,और अल्लाह तआला ने स्वर्ग को काफ़िरों पर हराम क़रार दे दिया है।

और बुखारी एवं मुस्लिम में है कि नबी करीम ﷺ से पूछा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल! निःसंदेह आप के चचा आप की हिफाज़त करते थे और आप की सहायता करते थे तो क्या आप ने उन को कुछ लाभ पहुँचाया? तो आप ﷺ ने फर्माया : हाँ, मैं ने उनको आग की सख़्तियों में पाया तो मैं ने उन को निकाल कर आग के एक कम्तर भाग की ओर कर दिया उन के दोनो पैरों के नीचे आग के शोले हैं जिस से उन का दिमाग़ खौल रहा है।

बल्कि बुतों को टुक्ड़े टुक्ड़े करने वाले बैते हराम के बनाने वाले इब्राहीम عليه السلام की ओर देखिए जिन्हें अपने रब के विषय में आज़्माइश से गुज़रना पड़ा और अल्लाह के रास्ते में आप को दुःख झेलनी पड़ी, वह क़यामत के दिन अपने बाप को लाभ नहीं पहुँचासक्ते क्यों कि उन के बाप की मृत्यु अल्लाह के संग शिर्क करने की हालत में हुई।

बुखारी में है नबी करीम ﷺ फर्माते हैं :

''يلقى إبراهيم أباه آزر يوم القيامة وعلى وجه آزر قترة وغبرة فيقول له إبراهيم ألم أقل لك لا تعصني فيقول أبوه فاليوم لا أعصيك فيقول

إبراهيم يا رب إنك وعدتني أن لا تخزيني يوم يبعثون فأي خزي أخزى من أبي الأبعد فيقول الله تعالى إني حرمت الجنة على الكافرين ثم يقال يا إبراهيم ما تحت رجليك فينظر فإذا هو بذيخ ملتطخ فيؤخذ بقوائمه فيلقى في النار "(بخاري)

" इब्राहीम عليه السلام अपने पिता आज़र से इस हाल में मिलेंगे कि आज़र का मुख काला और गर्द से अटा होगा, तो इब्राहीम आज़र से कहेंगे क्या मैंने आप से न कहा था कि मेरी नाफर्मानी न करो? तो इब्राहीम عليه السلام से उन के पिता कहेंगे कि आज मैं आप की नाफर्मानी न करूँगा, इब्राहीम عليه السلام कहेंगे : हे मेरे रब आप ने मुझ से वादा किया था कि क़यामत के दिन मैं तुझे रुस्वा न करूँगा, और मेरे भटके हुए बाप की रुस्वाई से अधिक और कौनसी रुस्वाई होगी? तो अल्लाह तआला कहेगा कि मैंने काफिरों पर जन्नत को हराम कर दिया है फिर कहा जाएगा ए इब्राहीम तुम्हारे दोनों पैरों के नीचे क्या है, इब्राहीम عليه السلام देखेंगे तो वह खून में लत पथ बिज्जू

होगा जिसके पैरों को पकड़ कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

तो इन तमाम चीजों से ख़बरदार होजाओ और नसीहत पक्ड़ो।

अल्लाह फर्माता है :

﴿ يَوْمَ يَفِرُّ ٱلْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ﴿٣٤﴾ وَأُمِّهِۦ وَأَبِيهِ ﴿٣٥﴾ وَصَٰحِبَتِهِۦ وَبَنِيهِ ﴿٣٦﴾ لِكُلِّ ٱمْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ﴾ عبس: ٣٤ – ٣٧

" तो आदमी उस दिन भागेगा अपने भाई से अपनी माँ और बाप से अपनी पत्नी और संतान (अवलाद) से उन में से हर एक को उस दिन एक ऐसी फिक्र (चिंता) होगी जो उसे (मशगूल रख्ने को) काफी होगी"

" और फर्माया " :

﴿ يَوْمَ لَا يَنفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ﴿٨٨﴾ إِلَّا مَنْ أَتَى ٱللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴾ الشعراء: ٨٨ – ٨٩

" जिस दिन कि माल और अवलाद कुछ काम न आयेंगें लेकिन (फायदेमंद वही होगा) जो अल्लाह तआला के सामने निर्दोष (बेऐब) दिल लेकर जाए "
और हक़ की ओर लौटने वाला दूसरों को नसीहत करने वाला तौहीद की ओर बुलाने वाला बन जाओ, सारे लोगों के लिये अल्लाह से हिदायत और सत्य मार्ग की दुआ करता हूँ।
और अल्लाह तआला को अधिक ज्ञान है,और दरूदो सलाम अथवा अल्लाह की बर्कतें हों अल्लाह के संदेश्वाहक पर।

" जिस दिन कि माल और अवलाद कुछ काम न आयेंगें लेकिन (फायदेमंद वही होगा) जो अल्लाह तआला के सामने निर्दोष (बेऐब) दिल लेकर जाये "
और हक़ की ओर लौटने वाला दूसरों को नसीह़त करने वाला तौहीद की ओर बुलाने वाला बन जाओ, सारे लोगों के लिये अल्लाह से हिदायत और सत्य मार्ग की दुआ करता हूँ।
और अल्लाह तआला को अधिक ज्ञान है,और दरूदो सलाम अथवा अल्लाह की बर्कतें हों अल्लाह के संदेश्वाहक पर।

●गुज़ारिश●

प्यारे इस्लामी भाइयो और बहनो! यदि आप ने इस पुस्तक से लाभ उठाया है तो फिर आप से हम ये निवेदन करते हैं कि इसे आप अपने रिश्ते नाते वालों को तोहफे के तौर परदे दें ताकि वे भी इस से लाभ उठा सकें, इस लिए कि हिदायत की राह दिखाने वाले को अमल करने वाले के बराबर सवाब (पुण्य) मिलता है और दोनों के सवाब में कोई कमी नहीं होती " सह़ीह़ मुस्लिम" और अगर आप हमारी अन्य पुस्तकों से लाभ उठाना चाहते हैं तो हम इस्लामिक सेंटर सुलय् रियाज में आप का हार्दिक स्वागत करते हैं जो मख़रज १६ पर इस्काने जजीरः के पूरबी भाग में हारून रशीद और अबू उबैदः बिन जर्राह़ के सिगनल पर वाके' है.

अथवा आप हमें निम्न लिखित पते पर चिट्ठी लिख्खें हम आप की सेवा के लिए हाज़िर हैं :

सऊदी अरब

पोस्ट बक्स न० : १४१६

रियाद : ११४३१

आप के इस्लामी भाई

इस्लामिक सेंटर सुलय् रियाद

اركـــب مــعنـا

تأليف :

د/ محمد العريفي

ترجمة :

أبوشعيب عبد الكريم عبد السلام المد ني

مراجعة :

أبوعبد الله آفتاب عالم محمد أنس المدني

إصدارات المكتب من الكتب

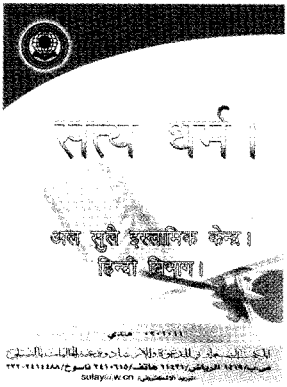

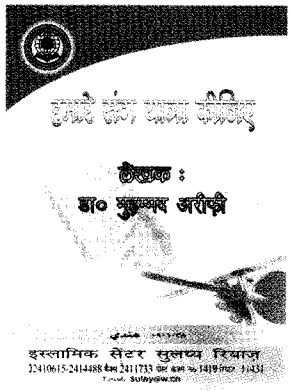

كتب الجاليات ١٤٦ / ١٧

الطبعة (1)

اركب معنا

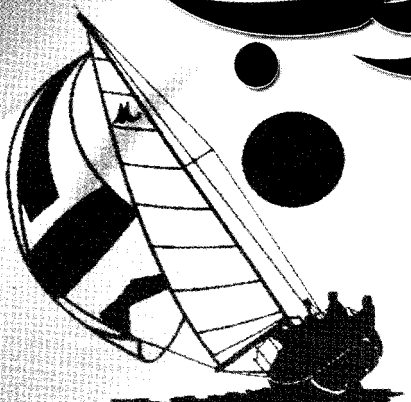

تأليف

د. محمد العريفي

ترجمة :

قسم الجاليات بالمكتب

ردمك: ٩٧٨-٩٩٦٠-٩٨٠٨-٥-٠

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالسلي
ص.ب ١٤١٩ الرياض ١١٤٣١ هاتف: ٢٤١٤٤٨٨ _ ٢٤١٠٦١٥ تحويلة ناسوخ ٢٣٢